धर्ममार्ग ।

एक सामयिक उपन्यास ।

बाबू हरिदास हलधर की
बङ्गला पुस्तक का अनुवाद ।

बा. गोपालराम गहमर-निवासी
सम्पादित ।

मैनेजर पं० आत्माराम शर्मा द्वारा—
...र्ज प्रिंटिंग वर्क्स, कालभैरव काशी से मुद्रित।

पहलीवार
२००० से

सन् १९२० ई०

मूल्य १)

मिलने का पता—अकबाल बहादुर, गहमर गाजीपुर।

ग्रन्थकार की सूचना ।
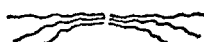
इस उपन्यास की सब घटनाओं पर वास्तविकता का आवरण डालने के लिये यथाशक्ति चेष्टा की गयी है। लेकिन इसके सब चरित्र और इसकी सब घटनाएँ काल्पनिक हैं। अतएव कोई ऐसा न समझे कि इस पुस्तक में किसी भी खास आदमी को लक्ष्य करके कहीं कुछ कहा गया है।

ग्रन्थकार ।

4

[illegible] centralised Governments now have a great ma[illegible] vantage in dealing with local disaffection owing to their control of telegraphs, railways, and machine-guns. This fact tells with crushing force, not only at the time of popular rising, but also on the men who work to that end. Little assurance was needed in the old days to compass the overthrow of Italian Dukes and German transluccencies. To-day he would be a man of boundlessly inspiring power who could hopefully challenge Czar or Kaiser to a conflict. The other advantage which Governments possess is in the intellectual sphere. There can be no doubt that the mere size of the States and Governments of the present age exercises a deadening effect on the minds of individuals. As the vastness of London produces inertia in civic affairs, so, too, the great Empires tend to deaden the initiative and boldness of their subjects. Those priceless qualities are always seen to greatest advantage in small States like the Athens of Pericles, the England of Elizabeth, or the Geneva of Rousseau; they are stifled under the pyramidal mass of the Empire of the Czars; and as a result there is seen a repectable mediocrity equal only to the task of organising street demonstrations and abortive mutinies."—J. H. ROSE.
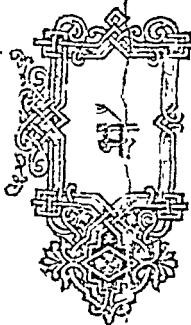
कर्म्ममार्ग

पहिला भाग ।

[१]

हेमाङ्गिनी ।

मेट्रोपोलिटन इन्स्टिट्यूशन कलकत्ते का विद्यार्थी बाबू सुरेशचन्द्र मित्र जब दशहरे की छुट्टी काशी में बिताकर लौटा तब एमहर्स्ट स्ट्रीट वाले बोर्डिङ्ग हौस के अपने कमरे में पहुंचते ही उसने एक चिट्ठी पायी ।

वह चिट्ठी उसकी बहन हेमाङ्गिनी की भेजी हुई थी । डाक मुहर देखते ही उसने समझ लिया की वह दो दिन पहले आयी हुई है !

चिट्ठी खोलकर पढ़ा तो उसमें लिखा था :—

मान्यवर भाई साहब !

मैं अपना दुःख क्या कहूं । कल सवेरे ही पुलीस वा

आकर चारों ओर से घर घेर लिया। फिर भीत
तलाशी करते रहे। जाती वेर नन्दलाल को गिरफ़
वे सब लेते गये हैं। रक्षाबन्धन के दिन वे सब वि
और उसके साथ तीन और स्वदेशी लड़कों को पकड़
थे। अब कल्ह मेरे भाई को धर ले गये हैं। इनका मत
समझ में आता कि क्या करना चाहते हैं। अभी तक
छोड़े नहीं हैं। नन्दू वेचारा तो इस वार रक्षाबन्धन
घर से वाहर भी नहीं हुआ था। उसके शोक में म
अधीर हो रही हैं। इनका रोना देखकर मेरा कलेजा फ
है। किसी तरह समझाने बुझाने से नहीं मानतीं।
चिट्ठी को पाते ही चले आओ। हम लोग बड़ी
पड़े हैं।

तुम्हा

यहाँ हेमाङ्गिनी का कुछ परिचय देना जरूरी
कृष्णनगर के एक निष्ठावान ब्राह्मण जयगोविन्द च
कन्या थी। पिता गरीव थे लेकिन विधाता ने उसके
जो कुछ दहेज चाहिये वह सब उसी की देह में स्थिर
सोना उसकी सारी देह में था, मोतियों की पाँति उ
में और उज्ज्वल हीरों का जोड़ा उसके दोनों नयन थे

लेकिन चटर्जी वाबू के साथ जान पड़ता है विध
दां जाया करीं थी। उन्होंने वह सब दहेज न मानकर
र्ष में गौरी दान कर दिया और अपने
ानुसार सब कर धर कर कृतार्थ हो गये। उधर
न पर खड्गहस्त थे ही। पाँच ही वर्ष वीतते व

ना ह उन्होंने मंसूख कर दिया। हेमाङ्गिनी बेचारी तेरह वर्ष
थी तरुआई में ही विधवा हो बैठी।

हेमाङ्गिनी को वर तो मिला था लेकिन घर नहीं मिला। ससुराल का दरवाजा तो उसने देखा भी नहीं था। विवाह की रात जो उसने घूंघट काढ़ा था उसका फिर उसको संयोग नहीं आया। उसके बाद दो वार तो वर राम ससुराल आये थे और उसको उन अवसरों पर भी घूंघट काढ़कर बहू बनना पड़ा था। बस यही तीन वार उसका घूंघट देव से साबका पड़ा था। नहीं तो सदा खिले कमल की तरह हेमाङ्गिनी का मुखारविन्द जयगोविन्द का घर आँगन उजियाला करता रहता था।

हेमाङ्गिनी की माता कलकत्ते की लड़की थीं। छोटेपन में उन्होंने कई वर्षों तक गर्ल्स स्कूल में एजूकेशन पाया था। हेमाङ्गिनी ने उन्हींसे लिखना पढ़ना सीखा था। और वह अपने छोटे भाई नन्दलाल को शिशुशिक्षा तीसरा भाग पढ़ाती थी। वह अपनी बहन से छ बरस छोटा था। हेमाङ्गिनी के एक मामा थे लेकिन मामा का घर [नानिहाल] नदारद था। मामा का नाम था पञ्चानन चौधरी।

पाँचू मामा पढ़े तो थे ऊँचे दरजे तक लेकिन विषय-बुद्धि उनको नहीं थी और कुछ उदारता का भी दोष उन में आ गया था जिसका फल यह हुआ कि जो कुछ उनके पास बपौती थी वह और घर द्वार सब खर्च में आ गया। अक्सर पांचू मामा कृष्णनगर आकर बहन और भाञ्जे भाञ्जी से भेट कर जाया करते थे।
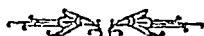
[२]

नायब रामलाल मित्र ।

कृष्णनगर में हेमाङ्गिनी के बाप को एक सच्चे मित्र मिले थे। वह थे नायब रामलाल मित्र। उन्हीं नायब के नीचे चटर्जी बाबू की नौकरी थी।

किसी जमींदार का नायब कहने ही से कड़े दिल का प्रजा-पीड़क अहलकार समझा जाता है। छावनी से पियादा आकर जब नायब या तहसीलदार की ख़बर देता है तभी गरीब प्रजा-का दिल दहल जाता है; लेकिन नायब रामलाल मित्र उस स्वभाव के नहीं थे। प्रजा अपनी आफ़त विपत में, सलाह सहायता लेने के लिये उनके यहां दौड़ती थी। वह गरीब रियाया के मा बाप थे।

रामलाल मित्र की उम्र ढल रही थी। लेकिन एक इस तरह के आदमी होते हैं कि उनकी उम्र के साथ फुर्ती बढ़ती जाती है। रामलाल वैसे ही लोगों में से थे। वे दाँत का अभाव अपनी रसिकता से पूरा कर लेते थे। और गण्ड देश की लटकन और ललाट की सुकड़न सदा हँसी से ही ढाक रखते थे। भीतर की प्रकृति जिसकी स्वच्छ है उसको इस तरह की बहुत कुछ शक्ति हुआ करती है।

रामलाल मित्र पैदा बहुत करते थे लेकिन जमा कुछ नहीं कर सकते थे। आज कल की जो शिक्षा है वह उनमें नहीं थी तौ भी इस शिक्षा के वह बड़े तरफदार थे। इसी से वह अपने लड़के सुरेशचन्द्र को कलकत्ते के कालिज में पढ़ाते थे। इसके आदि में ही हमारे पाठक सुरेशचन्द्र का परिचय पा चुके हैं।

नायब रामलाल मित्र के गाँव में एक एङ्गलो वर्नाक्यूलर स्कूल था उनकी आमदनी का तीसरा भाग वहीं खा जाता था।

जमींदार का नायब होने से ही अदालत से गहरा नाता जोड़ना होता है। नायब रामलाल मित्र को भी वह सब करना पड़ा था, इस कारण वहाँ के बड़े वकील राधावल्लभ घोष के साथ उनका बड़ा मेल था। मेल दो तरह का होता है। एक तो अपने समान चाल चलन और अपने स्वभाव और हृदय के आदमी मिलने पर होता है दूसरा होता है अपना मतलब पूरा करने के लिये। राधावल्लभ बाबू से उनकी मिताई या मेल मिलाप काम ही के लिये था।

[२]
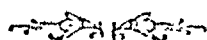
वकील राधावल्लभ।

राधावल्लभ बाबू सरकारी वकील न होने पर भी कृष्ण नगर बार के एक छत्र सम्राट थे। इसमें कुछ किसी को मीन मेख नहीं। जब वह सवाल जवाब करने लगते थे तब जान पड़ता था कि तूमड़ी में आग लगा दी गयी है। बहुतों का कहना है कि राधावल्लभ बाबू जिन मुकद्मों में वकील होते थे उनमें से सैकड़े निन्नानवे में उनकी जीत होती थी, इसी कारण उनकी बड़ी चलती थी। और पुलीस के चालान किये हुए बहुतेरे बड़े बड़े मुकद्मों में सरकार उनको अतिरिक्त वकील किया करती थी।

राधा वल्लभ को मुँह के जोर से कलम का जोर भी कम नहीं था। वह कलत्ते के एक मशहूर अङ्गरेजी दैनिक पत्र में

अक्सर लेख दिया करते थे। उनके मित्र जो उस पत्र के सम्पादक थे; उन लेखों को सम्पादकीय स्तम्भ में ही छापा करते थे। सुना जाता है स्वाधीन विचार के एक डिपुटी से राधावल्लभ की वात ही वात में कुछ खैंचातानी हो गयी थी। उन्होंने उसी अखवार में लेख छपा छपा कर उनका नाकों दम कर डाला था।

पहले राधावल्लभ वावू कृष्णनगर के अकेले राजनीतिक नेता हो रहे थे और सव कांग्रेस कानफरेंसों में उचित रूप पर शामिल हुआ करते थे। लेकिन जव से उन्होंने सुना कि उनको सरकारी वकील वनाने के लिये अफसरों में लिखा पढ़ी हो रही है तभी से जान पड़ता है इधर राधावल्लभ वावू का राजनीतिक उपद्रव कुछ कम हो गया था। अव वह कांग्रेस कानफरेंसों में उतना नहीं जाते वल्कि कहा भी करते हैं कि ऐसे हुल्लड़ हपाड़ों से कुछ लाभ नहीं होगा।

यहाँ राधावल्लभ वावू की कुछ घरऊ वातें कहे विना उनका चित्र पूरा नहीं होगा। इस कारण हमको कहना पड़ता है।

कवि लोग कहते हैं विच्छेद वा विरह प्रेम को और गहरा करता है। इसी की मजवूती में फारसी के शाइर कहते हैं। जो मज़ा इन्तिज़ारे यार में देखा वह न वसाले यार में।

अगर यह वात ठीक है तो राधावल्लभ का दाम्पत्य प्रेम अगाध समुद्र था। इसमें कुछ सन्देह नहीं है क्योंकि उस समुद्र में सदा झगड़ा कलह का वड़वानल जला करता था। विभावरी का युग आने पर वारुणी के विमलवारि सिञ्चन से वह इस आग को वुझाने की वहुत कुछ चेष्टा करते थे।

स्त्री के साथ नहीं बनती थी इस कारण वह भौंरा होकर नित नयी खिली कलियों का पराग लेकर अपने हृदयकी प्यास बुझाया करते थे।

जब स्वामी का यह रोग रोज बढ़ने लगा तब स्त्री मोक्षदा सुन्दरी ने एक दिन अपने सुनहले हाथों से झाड़ू लेकर गुदड़ी वाले साईयों की तरह मोरपङ्ख का कूचा देकर झाड़झोंपाड़ भी किया था लेकिन यह रोग इस झाड़फूंकसे कहाँ जाता है?

इतना होने से पाठक पाठिका राधावल्लभ बाबू को सतरासिया भौंरा या रमणी भक्त पुरुष न समझ लें। वह स्त्री से बड़ी जलन रखते थे। नारी जाति का वह कभी विश्वास नहीं करते थे। कहते थे कि स्त्री के मन की गति साँप की तरह टेढ़ी है। उसका दंशन बिच्छू की तरह तेज है। वह इसके प्रमाण में दिखाते थे कि संसारमें जितने अपघात होते हैं सब की जड़ में स्त्री रहती है। पुराण इतिहासों में जितने बड़े बड़े युद्ध विग्रह हुए सब स्त्री के लिये ही हुए। रामायण का लङ्काकाण्ड स्त्री के ही कारण हुआ, स्त्री से ही सब ढहो ढाह होता है।

स्त्री के साथ सदा का कलह देखकर उनके एक मित्र ने एक और विवाह करके सुखी होने की सलाह दी थी। राधा वल्लभ ने उनको समझा दिया कि विवाह करके स्त्री को कभी अर्धाङ्गिनी नहीं बनाऊँगा। क्योंकि उसके समान संसार में पुरुष जाति का वैरी दूसरा नहीं है। उसका स्वभाव है कि देखते ही वह वारडिक्लेयर (युद्धघोषणा) कर देगी। ताने भरी रसिकता और वचन बाणों से सदा उसको वेधती रहेगी। प्रेम के बहाने उसे मोह में भुलाकर ठगेगी और आशा की वंसी में

छेदकर मछली की तरह खेलाती रहेगी। लेकिन कभी उसको व्याहेगी नहीं।

राधावल्लभ कहते थे, व्याह करना अच्छा नहीं है। इस पेवन्द कलम का ठीक नहीं रहता कि कैसा फल होगा। मीठा भी हो सकता है खट्टा भी हो सकता है। इस फल की खटाई से मेरे संसार का दूध फटकर दही हो गया है।

[४]

पक्षी पर बिल्ली की आंख।

हम यह बतलाना भूल गये कि आज पाँच महीना हुआ जयगोविन्द चटरर्जी दिल की बीमारी से एक बयक मर गये और उनके वे अवलम्ब स्त्री, पुत्र और कन्या को नायव रामलाल मित्र के घर में ही शरण लेना पड़ी है। रामलाल उनके बाल बच्चों का भार नहीं लेते तो उन बेचारों को रास्ते का भिखारी होना पड़ता। हेमाङ्गिनी इस समय पच्चीस वरस की है। रामलाल की घरनी दयामयी उसको अपनी लड़की के समान मानती है। सुरेश उसको बहन कहा करता है। नन्दलाल नायव साहब के यहाँ ही लिख पढ़ कर पक्का हुआ और जमींदारी का कामकाज किया करता है।

नायव रामलाल की रसोई में दोनों जून कोई तीस आदमी खाते पीते हैं। हेमाङ्गिनी माता और लौड़ी के साथ रसोई घर सब सम्हाले हुए है।

काम काज के लिये रामलाल को सदा राधावल्लभ बाबू के मकान पर जाना पड़ता था। राधावल्लभ बाबू काम न रहने

पर भी एकाध काम लेकर नायव रामलाल के घर जाते थे। हो सकता है कि मिताई दिखाने के लिये यह जाते हों लेकिन उसके लिये महीने में जितना जाना उचित है उससे वहुत अधिक उनका क़दम वहाँ आता था। इसमें सन्देह नहीं कि इससे रामलाल वावू प्रसन्न होते और कभी कभी उनको भोजन का निमंत्रण भी दिया करते थे।

एक दिन की वात है। राधावल्लभ वावू नायव महाशय के यहाँ भोजन कर रहे थे। मां के वीमार हो जाने से हेमाङ्गिनी ही रसोई परोस रही थी। राधावल्लभ वावू हेमाङ्गिनी को यहाँ और कई वार पहले देख चुके थे। जिस तरह विड़ाल पींजड़े में पड़ी विहंगिनी को ताकता है राधावल्लभ भी उसी तरह हेमाङ्गिनी को देखते थे। हेमाङ्गिनी मन ही मन यह वात समझती थी। लेकिन समझकर भी उसका कुछ इलाज नहीं कर सकती थी। पींजड़े का पक्षी विड़ाल की ताक का इलाज ही क्या कर सकता है?

हेमाङ्गिनी जब परोसने आयी थी तभी रामलाल ने पूछा—"कहिये राधावल्लभ वावू! तरकारी कैसी उतरी है?"

मूड़ हिलाकर राधावल्लभ ने जीभ चट पटाते हुए कहा—"तरकारियों का क्या कहना है वहुत अच्छी हुई है। क्या वात है। किसका वनाया है मित्रो वावू।"

"वनाया तो है नन्दू की वहन हेमाङ्गिनी का।"

"वाह वा! वाह!! हेमाङ्गिनी का दोनों हाथ तव तो सोने से मढ़ा देना चाहिये।"

राम०—हेम हमारी साक्षात अन्नपूर्णा है कि—

"रसोई देखने से तो जान पड़ता है हेमाङ्गिनी साक्षात् द्रौपदी है?"

नायव रामलाल ठठाकर हँस पड़े। हेमाङ्गिनी का मुँह लाल हो उठा। लज्जा के मारे उसके गण्ड देश पर सुर्खी चढ़ गयी। क्रोध जब बातों के साथ बाहर न निकल सकने के कारण भीतर ही गुड़ मुड़ाया करता है तब आदमी की सब शक्ति वदनमण्डल में पहुंच कर उसको ललमुँहा कर देती है। भोजन कर चुकने पर राधावल्लभ ने नन्दलाल की बात छेड़कर कहा—"अगर वह जमींदारी का काम छोड़कर वकील की मुहर्रिरी करे तो अच्छा पैदा कर सकता है।"

इसके बाद उन्होंने यह भी जाहिर किया कि एक मुहर्रिर की जगह खाली भी है। नन्दलाल राजी हो तो मैं उसको रख लूंगा।"

रामलाल राजी हो गये। और नन्दलाल चाहता भी था। अब देर नहीं लगी। बहुत जल्द नन्दलाल राधावल्लभ बाबू का मुहर्रिर हो गया। हेमाङ्गिनी ने बीच में कुछ रोक डाला था, लेकिन उस रोक का कुछ भी उचित कारण नहीं बतला सकी। इस वास्ते उसका उज्र हवा के झोंके में धुनी हुई रूई की तरह फर्द हो गया।

[५]
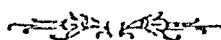
वकील का मुहर्रिर

चार बरस से नन्दलाल राधावल्लभ बाबू का मुहर्रिर होकर काम करता है। लेकिन आज तक उसको सफलता नहीं हुई।

पक्का मुहर्रिर होने के लिये जो गुण होने चाहिये वह सब नन्दलाल में तो थे नहीं। मवक्लों को ठगने के लिये जो अनगिनित छल कपट और चालाकी चाहिये वह सब उसकी बुद्धि में नहीं आते थे। उसको स्टाम्प खरीदने का झूठा बहाना कर के नासमझ मवक्लों का रुपया जेब के हवाले करने का अभ्यास नहीं था। न यही उसको मालूम था कि जो अमले या पुलीस के पाक साफ लोग घूस नहीं लेते उनको इतना रुपया घूस देना होगा कहकर संकट में पड़े हुए कम समझ सीधे सादे मवक्लों का रुपया कैसे हड़प जाना होता है। नन्दलाल मुहर्रिर होकर ठगों का काम करना नहीं जानता था। और जो मवक्ल मुक़द्मा हार चुका है उसको झांसा पट्टी देकर अपील पर राजी करने की विद्या भी उसने नहीं सीखी थी।

बड़े जरूर वकील के मुहर्रिर को अकसर छोटा मोटा वकील बनकर क़चहरी के हाते में बड़ पीपल के नीचे चौतरे पर बीड़ा बेचने वाली के इजलास में गला दराजी के मारे फरीकैन का मामला पहले ही से डिगरी डिसमिस करके लन्तरानियाँ लेना होती हैं। नन्दलाल से यह सब कुछ नहीं बनता था। वह राधावल्लभ बाबू के कहने से इस काम में आया था। लेकिन वह समझता था कि इस लाइन में उसकी गाड़ी हरगिज़ पटरी पर नहीं रह सकती। सदा डिरेलमेएट हुआ करेगा।

लेकिन हेमाङ्गिनी का भाई होने से राधावल्लभ बाबू उसपर बड़ा अनुग्रह करते थे और ऐसा उपाय कर देते थे कि मवक्लों से भी वह पैसा दो पा जाता था। इसके सिवाय वह मौके से कुछ अच्छी चीज़ वस्तु खरीद कर उसके हाथ में देते और

कहते थे-"ले जाव! घरमें मां को या बहन को दे देना। उन बेचारियों को तुम्हारे सिवाय दूसरा कौन है?" यह सब देखकर कचहरी के दुराग्रही ताने भी मारा करते थे।
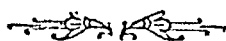
[६]

पञ्चानन राय चौधरी।

हेमाङ्गिनी के मामा बाबू पञ्चानन राय चौधरी उसी तरह कृष्ण नगर आकर उन लोगों को देख सुन जाते थे। अब उनका आना नायबजी के मकान पर होता था। वहीं दो चार दिन ठहर कर चले जाते थे।

सुरेश और उनके हित मित्रों से पञ्चानन बाबू का यहों परिचय भी हुआ। वे सब उनको पाँचू मामा कहा करते थे। उनमें उन लोगों की श्रद्धा भक्ति भी थी। कृष्ण नगर ही की बात नहीं पाँचू बाबू का कलकत्ते के अनेक पढ़े लिखे नवजवान बड़ा सन्मान करते थे। शिक्षित युवकों को उनसे मिलने पर बहुत सी नयी खबरें मिलतीं और अनेक नयी बातें वे लोग उनसे सीखते भी थे। पाँचू बाबू सब मामलों के मानो पायोनियर थे।

पञ्चानन साठ बरस से ऊपर होने पर भी शरीर के कड़े और स्वास्थ्य के अच्छे थे। बत्तीस दाँत में से एक भी कहीं टूटा नहीं था। उनकी पूरी पाँती सदा पाँचू बाबू के हंसते चेहरे पर दिखाई दिया करती थी। बूढ़ों की विचक्षणता, बालकों का सीधा पन और जवानों की रसिकता सब उनमें

मौजूद रहने से सब उम्र के आदमियों में वह समान भाव से मिल सकते थे।

पञ्चानन सदा से हिसाबी आदमी थे। तौल नाप कर चलने के वह आदी थे लेकिन जवानी में उनके हिसाब की झोंक बढ़ गयी थी। कभी कुछ रुपया मिलने का ढङ्ग होने से झट इसका बजट तैयार कर डालते थे कि किस किस काम में उसको खर्च करेंगे।

पाँचू बाबू के एक रसिक मित्र ने एक दिन आकर कहा— "कहो मामा! तुम्हारे मगज़ में पैसा खर्च करने के लिये तो बड़े बड़े प्लाट हैं! मुझे अब की पहली तारीख को पाँच सौ रुपया मिलने वाला है। अपने दो एक प्लाट तो बतलाओ कि मैं, उन रुपयों की सद्गति कर सकूं।"

सब लोग कहते थे कि पञ्चानन बाबू बड़े प्रतिभावाले हैं। सचमुच उनके सब कामों में बुद्धिमत्ता का परिचय मिलता था। उन्होंने ऐसे कितने ही नये नये कारबार किये थे जो पहले किसी ने कभी नहीं किये थे। लेकिन उनके हिसाब और हाथ के मारे एक भी नहीं टिका। इसी तरह उन्हों ने थोड़े ही दिनों में कलकत्ते की अपनी बपौती तक खतम कर डाली।

इसके लिये पाँचू बाबू को जब कोई कुछ लानत मलामत करता तब जातकालङ्कार खोलकर दिखाते और कहते थे— "मेरा कन्या राशि का जन्म है बपौती भोगना मेरी जन्म कुण्डली में नहीं है। परायेधन से ही मेरा जीवन चलेगा।"

इससे कोई यह न समझे कि पाँचू मामा पोथी पत्रा पर

बड़ा विश्वास करते थे। वह बराबर आश्लेषा मघा आदि मूल नक्षत्रों और भद्रा में ही शुभ कर्म्म शुरू करते थे। वह कहते थे सदा बृहस्पति को वार वेला में ही विलायती मेल रवाना हुआ करती है। और इसी मेल पर इतना बड़ा एक समृद्धिशाली साम्राज्य चलता है। जिसके राज्य में सूर्य्य देव को विश्राम लेने का कभी अवसरही नहीं आता। पञ्चाङ्ग में जहाँ यात्रा नास्ति है वहीं यात्रा करने से महेन्द्र योग होता है। पञ्चाङ्ग से उलटा चलने पर ही आज कल अधिक फल मिलता है।

बाप दादा की मौरूसी छोड़ चुकने पर भी पाँचू बाबू ने कभी अपना पैदा किया हुआ भोग करने की मन में अभिलाषा नहीं की। कहते थे "हमने व्याह तो किया नहीं है अकेले एक पेट के लिये पैसा पकड़ने को संसार सागर में जाल डालकर धीवर कौन बने?"

पञ्चानन अङ्गरेजी अच्छी तरह जानते थे। और संस्कृत भी कुछ कुछ सीखे हुए थे। सन्ध्या सम्पादक ब्रह्मबान्धव उपाध्याय से उनका परिचय होने पर बड़ा मिलान हुआ था। जान पड़ता है दोनों का कई विषयों में समान होना ही इस मिलान का कारण था। दोनों अच्छे पढ़े लिखे शिक्षित, दोनों कुंवारे और दोनों ही दरिद्रता के दुलारे थे।

पञ्चानन इन दिनों सन्ध्या आफ़िस में रहते और प्रूफ़ इत्यादि देखते थे। वहीं भोजन भी करते थे। बिना खाये पीये किसी का चलता नहीं। पाँचू मामा का भी नहीं चलता था। लेकिन आहार दो तरह का होता है। एक देह का दूसरा मन

का। देह के आहार की ओर पाँचू बाबू का उतना ध्यान नहीं था। थोड़ा सा जो कुछ मिल जाता उसी से गुजारा कर लेते थे, लेकिन उनके मन की भूख बहुत थी। सन्ध्या आफ़िस में कई भाषाओंके समाचार पत्र और मासिक पुस्तक आया करते थे। पांचू बाबू सबेरे ही सब का चर्वण कर जाते थे। दो पहर को कभी इम्पीरियल लाइब्रेरी में जाकर भर पेट पुस्तक पढ़ते और कहीं कुछ जगह रहती तो सन्ध्या को सभा समितियों में वक्तृता सुनकर ठसाठस भर लेते थे। हम लोगों ने उनको साहित्य परिषद् में, ब्रह्म समाज में, रामकृष्ण मिशन के उत्सव और अनेक स्वदेशी सभाओं में देखा है। ऐसा कोई हल्ला गुल्ला नहीं जिसमें पांचू मामा न जाते हों लेकिन बात इतनी थी कि किसी में वह आप लीन नहीं हो जाते थे। केवल तमाशा देखने वाले की तरह डाँड़ मेंड़ पर घूमा करते थे।
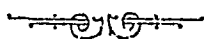
[७]

पञ्चानन और स्वदेशी।

इसी समय बङ्गभङ्ग का मामला आ पड़ने से देश में बायकाट की बाढ़ आयी थी। राजनीतिक आकाश में भी हवा गोल माल की चलने लगी थी। किसी किसी चिन्ताशील ने इस बायकाट के आन्दोलन में फ्रांस देश के सन् ८९ वाले सामाजिक और राष्ट्रीय साइक्लोन का आगमन अनुमान किया था। राजकर्मचारी भी सोये नहीं थे। जिन लोगों ने आधुनिक जगत का इतिवृत्त पढ़ा है वे लोग

जानते हैं इसी एक विराट लोकान्दोलन के समय इस देश के शिक्षित पोलिटिकल समाज में दो तड़ हो गये। नरम और गरम दल उनका नाम पड़ा।

हमारे विचारवान विज्ञ राजकर्म्मचारियों ने इसको समझा था और यह भी समझा था कि इस आन्दोलन के समय छात्र और युवकों ही में बड़ी चञ्चलता आयी है और वेही इसके अशान्त वाहन होकर खड़े हैं। इसी कारण अफसरों ने इन लोगों पर विशेष भाव से निगरानी रखी थी।

सन्ध्या कार्य्यालय इस आन्दोलन के लिये एक केन्द्र हो गया था। बहुतेरे स्वदेशी छात्र और जवान वहाँ सदा आया जाया करते थे।

सन्ध्या सम्पादक से पञ्चाननबाबू की इस स्वदेशी आन्दोलन पर बड़ी बहस होती थी। दोनों में बड़ा मतभेद था एक दिन सम्पादक महाशय आये हुए युवकों को समझा रहे थे कि यह बायकाट का पेड़ जब अपने समय पर बहुत ऊंचे जायगा तब स्वराज्य का फल इसमें लगेगा।"

पञ्चानन बाबू ने सुनकर कहा-"इस पेड़ की जड़ही में गलती के कीड़े लगे हैं। परजाति विद्वेष की मिट्टी पर इसका बीज रोपा गया है। इस कारण मैं समझता हूं यह पौधा उस विद्वेष की गर्मी में झुलस कर अकाल ही मर जायगा।"

सम्पादकजी बोले-"तो क्या पाँचू बाबू! आप कहते हैं कि इस विराट आन्दोलन में कुछ फल नहीं लगेगा।"

पञ्चानन ने कहा-"यह तो पक्की बात है कि यह आगे चल कर नष्ट हो जायगा। इससे स्वराज्य वराज मिलने की आशा

नहीं है लेकिन इस तरह के आन्दोलन के समय जातीय हृत्पिण्ड में स्पन्दन अनुभूत होता है। और लोकमत कूदकर एक फाल आगे जा खड़ा होता है। जब यह आन्दोलन नष्ट होगा तब लोक समाज पीछे हट सकता है लेकिन लोकमत आगे बढ़ चुकने पर पीछे हटना नहीं जानता। राजशक्ति इस आगे बढ़ते हुए लोकमत की उपेक्षा नहीं कर सकती। राजा इसको जहाँ तक बन पड़े मानने की कोशिश करता है। बस इस आन्दोलन का यही स्थायी फल है। इसमें कुछ हाथी घोड़ा नहीं पैदा होता।

और एक दिन सन्ध्या सम्पादक से पञ्चानन बाबू की बहस छिड़ गयी। सम्पादक जी ने कहा "मैं यूरप घूमकर आया हूं। साहब लोगों को जो कुछ है सो मैं अपनी आँखों देख आया हूं। मुझे उनका कुछ भी अच्छा नहीं लगता। यहाँ तक कि उनकी देह का सफेद रङ्ग तक देखने से मेरी आँखों में चुभता है।

पञ्चानन ने कहा—"इन्द्र धनुष में सात रङ्ग हैं। सब के मिलने से सफेद होता है। इस सफेद को देखने से आपकी आँखों में तकलीफ होती है तब समझना चाहिये कि आपकी आँखों को कोई बड़ा भारी रोग हो गया है। यह वर्णभीति उसी का लक्षण है। मेरी बात मानकर आप झट मेडिकल कालेज हास्पिटल जाइये और अपनी आँखों की जाँच करा आइये। यह रोग जब तक आपकी आँखों से नहीं जायगा तबतक आप भगवान की सिरजी हुई सुन्दरता अच्छी तरह नहीं समझ सकेंगे। पाश्चात्य का तुषार धवल वर्ण, सुन्दर प्राच्य का पीताभ और भारत का कृष्णाभ सब भगवान सिरजन हारकी

रचना है। इन्हीं सब से संसार का वर्ण वैचित्र्य है। किसी कोई नीरोग आंखों को इनमें से कोई भी रङ्ग दुःखदायी नहीं होह सकता।"

पञ्चानन बाबू की इन सब बातों से लोग कहते थे कि उनके मग़ज़ में कुछ गोलमाल हो गया है।

[८]

नन्दलाल का स्वदेशी।

स्वदेशी आन्दोलन की लहर कृष्ण नगर भी पहुंची थी। वहाँ के कुछ युवकों ने मिलकर एक स्वदेशी सङ्कीर्त्तन दल बनाया था। वे लोग वहाँ के हाट घाट और रास्तों पर स्वदेशी गीत गाते फिरते और वन्देमातरम् कहकर सब को विदेशी चीज़ छोड़ने का निवेदन करते थे। विधुभूषण नाम का एक जवान उस दल का सर्दार बना था। हमारा यह नन्दलाल इस हो हल्ले के सब मामलों में उसके लेफ्टिनेण्ट का काम करता था। विधुभूषण कृष्ण नगर कालिज के थर्ड इयर में पढ़ता था और एक वकील के लड़के को पढ़ाता हुआ ट्यूटर बना उन्हीं के डेरे पर रहा करता था।

नन्दलाल स्वदेशी का अर्थ किरकिचहा नमक, देशी चीनी और देशके जुलाहों का बूना हुआ कपड़ा समझता था। विधुभूषण उसको "नून चीनी का स्वदेशी" कह कर हंसता था। सच्च बात तो यों है कि देशी चीज़ वस्तु वर्तने के सिवाय स्वदेशी में और क्या हो सकता है? इसको नन्दलाल नहीं समझता था। उसकी विद्या थी एंट्रेंस के फोर्थ क्लास तक।

वह कचहरी से कभी कभी वसुमती, हितवादी आदि अखबार खरीद कर पढ़ा करता था। उनमें बहुत सी स्वदेशी बातें छपा करती थीं उन लेखों को कहीं कहीं तो वह अच्छी तरह समझ ही नहीं सकता था।

जो लोग स्वदेशी का प्रचार करते हैं उनसे पुलीस की क्यों ऐसी खैंचातानी है? स्वदेशी सभाओं में पुलीस क्यों पहुंचती है? स्वदेशी युवकों पर सी० आई० डी० पुलीस की इतनी निगाह क्यों रहती है और उनमें से किसी किसी के पीछे जासूस क्यों लगे रहते हैं? कोई कोई स्वदेशी प्रचार करने वाले फौजदारी में चालान होकर जेल क्यों जाते हैं? और फिर जब वे लोग रिहाई पाते हैं तब "लाञ्छितों का सम्मान" उनके लिये क्यों होता है। यह सब सदा अखबारों में पढ़ते रहने पर भी वह अच्छी तरह समझ नहीं सकता था। मतलब यह कि नन्दलाल ने यह ठीक कर लिया था कि जो लोग स्वदेशी करने जाकर कानून तोड़ेंगे वे लोग जरूर दण्ड पाने के लायक़ होंगे।

चाहे जो हो विधुभूषण के दलवाले स्वदेशी के नाम पर कुछ बढ़कर चलने लगे। एक दिन उन लोगों ने एक आदमी से जो विलायती कपड़ा खरीदे हुए चला जाता था कपड़ा उससे लेकर सरे बाजार आग में जला दिया। उस आदमी ने थाने में नालिश नहीं की इस कारण मुकदमा तो नहीं हुआ लेकिन बात चारों ओर फैल गयी। और जान पड़ता है अफ़सरों के कान तक भी पहुंची। क्योंकि एक दिन राधा-वल्लभ बाबू ने नन्दलाल को बुलाकर कहा-"देखो नन्दू! तुम्हारे नाम पर रिपोर्ट हुई है। सुनते हैं तुम यहीं स्वदेशी

दल के प्रधान पण्डा बने हो। पुलीस के वड़े साहब ने यह बात हमको लिखी है। उनको यह भी मालूम हुआ है कि तुम हमारे मुहर्रिर हो। बेहतर है कि तुम स्वदेशी: उदेशी छोड़ दो यह सब हल्ला करने से कुछ फायदा नहीं है। अङ्गरेज हम लोगों के बादशाह हैं। जो काम उनकी पसन्द नहीं है वह करना हम लोगों को उचित नहीं है।"

नन्दलाल ने कहा—"तो क्या देशी कपड़ा खरीदना या देशी चीज़ अपने काम में लाना बादशाह को पसन्द नहीं है?"

"देशी चीज काम में लाने या व्यवहार करने से उतनी ना पसन्द की बात तो नहीं होती यह बात सही है और तुम लोग चुप चाप जितना बने स्वदेशी प्रचार करो न उसके लिये कौन बोलता है। लेकिन तुम लोग हाट घाट पर झुण्ड के झुण्ड स्वदेशी गीत गाते हुए घूमोगे, सब मिलकर वन्दे मातरम् वन्दे मातरम् कहकर चिल्लाओगे और जो विलायती चीज खरीदेगा उसपर जबरदस्ती करोगे तो अफसर लोग कैसे नाराज नहीं होंगे?"

"तो खाली मैं अकेले स्वदेशी चीज काम में लाऊं तो इससे क्या होगा। हमको ऐसा करना होगा कि देश के सब लोग स्वदेशी माल खरीदें। इसी से हम लोग सब को स्वदेशी चीज व्यवहार करने के लिये समझाते कहते हैं और सब में स्वदेशी भाव जमाने के लिये हमलोग स्वदेशी सङ्कीर्त्तन करते और वन्देमातरम् बोलते हैं। किसी पर जोर जबरदस्ती तो करते नहीं।"

"लेकिन हमने तो सुना उस दिन बाजार में किसी ने विलायती कपड़ा खरीदा था। इसीसे उसका कपड़ा लेकर तुम लोगों ने जला डाला!"

"हाँ लेकिन उसको कपड़े का दाम दिया और खुश करके उससे लियातवजलाया। इसमें जबरदस्ती क्या हुई" ?

"सुनो नन्दू! मैंने तुम को बहस करने के लिये नहीं बुलाया। खाली ख़बरदार कर दिया है। तुम हो मेरे मुहर्रिर और अफ़सरों से जैसा मेरा भाव है उस से तुम को चिता देना दरकार है। अगर तुम पर किसी दिन कोई स्वदेशी पुलीस केस हो जायगा तो मुझे अफसरों के सामने लज्जित होना पड़ेगा। बेहतर है कि तुम यह सब हल्ला हुजूम छोड़ दो। मैं बार बार तुम को मना करता हूं।"

नन्दलाल ने चुपचाप सुन लिया इसका कुछ जवाब नहीं दिया।
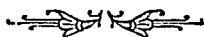
[६]

पितृवियोग।

नन्दलाल जब डेरे को लौट आया तब देखता है कि विधुभूषण बैठा उसकी राह देखता है। उससे राधावल्लभ की सब बातें नन्दलाल ने आदि से अन्त तक कह दीं।

अब विधुभूषण राधावल्लभ बाबू पर आग हो गया। और उनको कड़ी कड़ी बातें कहने लगा। सुरेश ने उसकी बातें हँसी में उड़ा दीं। उसके भीतर तो उतना पालिटिक्स

था नहीं। बाप की बीमारी सुनकर सुरेश को कलकत्ते से कृष्ण नगर आना पड़ा था।

आज तीन सप्ताह से नायब रामलाल मित्र पक्षाघात की पीड़ा में पड़े खाट पर कराह रहे थे। उनकी दाहिनी ओर सब सुन्न हो गया। डाक्टरी इलाज जारी था रोज़ दोनों जून आकर डाक्टर सलाई से पेशाब करा जाते थे। हेमाङ्गिनी दिन रात उनकी सेवा शुश्रूषा में लगी रहती थी। उसका खाना सोना सब छूट गया था।

राधावल्लभ बाबू अपने मित्र रामलाल को देखने आते और खाट के पास बैठी सेवा करती हुई हेमाङ्गिनी से उनकी अनेक बातें पूछा करते थे।

इलाज बहुत कुछ हुआ लेकिन रोग बराबर बढ़ता ही गया। अब रामलाल टूटी फूटी दो चार बातें कह सकते हैं।

एक दिन सुरेश को बुलाकर रामलाल बाबू बोले—"देखो बेटा अब मेरे दिन पूरे हो गये हैं। जल्द अब मुझे भगवान के यहाँ अपनी जिन्दगानी भर के कर्मों का जमा खर्च करने के लिये जाना होगा। तुम्हारे लिये मैं यहाँ कुछ नहीं रख जाता क्योंकि जो कुछ पैदा किया सब सुकार्य्य में लगाता गया। इस से मुझे बड़ी शान्ति है। कमाया हुआ धन सत्कार्य में नहीं लगाने से ही अशान्ति का कारण होता है। अब जो कुछ थोड़ा सा बचा है उसके तुम्हीं अकेले वारिस हो इस कारण कुछ लिखा पढ़ी की जरूरत नहीं है। तुमने तो बेटा लिखना पढ़ना सीखा ही है। अब और सिखलाना कुछ है नहीं। मरती बेर मैं दो बातें तुमको चेता देता हूं। एक तो भगवान में सदा भक्ति रखना दूसरे जीते जी जहाँ तक बने दूसरे का उपकार करना।

तुम ये दोनों काम करते हो या नहीं यह मेरी आत्मा परलोक से देखा करेगी।"

सुरेश की आँखों में आँसू आ गये।

अब नायब रामलाल ने अपनी स्त्री को बुलाकर कहा—"देखो लक्ष्मी! सुरेश की शादी मैंने इसी लिये अब तक नहीं की कि उसका लिखना पढ़ना अभी पूरा नहीं हुआ है। पतोहू को घर में पधारने से पहले मैं मरता हूं यही एक दुःख रहा है। लेकिन चिन्ता नहीं मेरा क्रिया कर्म हो जाने पर किसी भले घर की सुन्दरी लड़की देख कर बेटे का व्याह कर देना। तुम्हारे कोई लड़की नहीं है। इसी हेमी को अपनी बेटी मानना। जब तक नन्दलाल सयाना होकर अपना रोजगार न करे और अलग न हो तब तक इन दोनों को अपने बच्चे की तरह जानना और घर ही में रहने देना।

उसी रात के रामलाल का कंठरूंधन हो गया। उलटी साँस चलने लगी। लेकिन नाड़ी पुष्ट थी। इस तरह दो दिन दो रात रहकर उनका प्राण पंछी देह पिंजर से निकल गया।
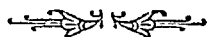
[१०]

राधावल्लभ की व्यवस्था।

नायब रामलाल का क्रिया कर्म उनकी जन्म भूमि शान्तिपुर में हुआ था। नन्दलाल को भी वहाँ जाना पड़ा था। उसके बाद सुरेश कलकत्ता चला गया। और नन्दलाल अपनी मा और बहन को शान्तिपुर में ही सुरेश के घर पर छोड़कर

कृष्ण नगर चला आया। वह अब राधावल्लभ ही के यहाँ रह कर वहीं से खाने पीने और कचहरी जाने आने लगा।

एक दिन राधावल्लभ बाबू ने उससे कहा—"अब तुम अपनी मां वगैरः को रामलाल के यहाँ क्यों रहने देते हो। वह तो भला कमानेवाले थे दस बीस आदमी बराबर उनके यहाँ खाते पीते रहते थे। अब उनका लड़का बेचारा तो कुछ पैदा नहीं करता कालिज में पढ़ता है। उसके ऊपर तुम लोगों को अब भार डालना तो अच्छा नहीं है। अब तो तुम को चाहिये कि अपनी बहन और मा को यहाँ ले आओ। वे लोग चाहें तो यहाँ रहें और इन उड़ियों के हाथ का खाना छूटे। यदि तुम लोग अलग मकान में रहना चाहो तो रामलाल का डेरा खाली ही पड़ा है। उसी को किराये पर ले लो। हम ऐसा उपाय करेंगे कि तुम लोगों का खर्च खुराक चलता रहेगा किसी बात की तकलीफ होगी थोड़े।

नन्दलाल से सुरेश की बड़ी मिताई थी लेकिन तौ भी वह नहीं चाहता था कि मा बहन का बोझ उसके कपार पर रखे। इस कारण उसने राधावल्लभ बाबू की सलाह से माता को चिट्ठी लिखी।

लेकिन राधावल्लभ बाबू के मकान में रहने पर हेमाङ्गिनी हरगिज राज़ी नहीं थी। इस कारण नन्दलाल नायब रामलाल मित्र के खाली मकान में रहने लगा।

गुलबी नाम की पानवाली जो कचहरी में बड़े बड़ के नीचे बीड़े की दूकान रखती थी वही नन्दलाल का सौदा सुलुक ला देती और दो चार छोटा मोटा काम कर देती थी। दाई का छोटा काम जैसे पानी लाना, चौका बरतन करना यह सब

उस छैल चिकनियाँ गुलबी से नहीं हो सकता था इस कारण यह सब हेमाङ्गिनी और उसकी मा को ही कर लेना पड़ता।

[११]

गुलबी पानवाली।
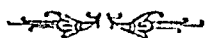
अब गुलबी दस बरस पहले की खिली गुलाबो नहीं है। अब वह लुण्ठित पराग, दलित दलवाली सूखी गुलबी है तो भी मधु लोभी मधुकर की तरह कचहरी का एक धूआं खाने वाला बूढ़ा पियादा सदा आकर उसको बसरे का गुलाब कहता है। और गुलबी उसे "दुर्रे मुंकरिखहा दाढ़ीजार" कह कर उसका स्वागत करती और तम्बाकू भर कर पिलाती है।

यह कहने की जरूरत नहीं कि गुलबी जब चढ़ती जवानी पर थी तब उसका दूसरा ही रोजगार था। और उस से उसने दस पन्द्रह थान सोने के गहने और कुछ नकद भी जमा किये थे। लेकिन पीछे एक लम्पट ने अपने प्रेम के फन्दे में डालकर उसको अच्छी तरह दूह लिया। और अन्त को एक दिन उसकी पेटारी से गहने हथियाकर रफ़ू चक्कर हो गया।

गुलबी ने पुलिस में इत्तिला कर दी। थाने वालों ने उसे बहुत दिनों तक अपने हाथ में रखा और अच्छी तरह जांच की लेकिन चोर का कहीं पता नहीं लगा। इस अवसर पर दरोगा दीनदयाल से गुलबी का अच्छी तरह परिचय हो गया यही इस मामले में उस को लाभ हुआ। खैर अब इन दारोगा जी से पाठकों की पीछे मुलाकात होगी।

निदान गुलबी का वह फसली रोजगार जाता रहा। उम्र उसकी गिरती गयी। इस कारण अब कचहरी के मैदान में पुराने बड़ के नीचे चौकी और ऊपर से बाँस का छाता रख कर पान की दूकान करने लगी।

इस में भी उसकी कम नहीं चली। कृष्ण नगर बार लाइ-ब्रेरी के सम्राट वकीलों के सिरताज राधावल्लभ बाबू उसके प्रधान ग्राहक और पेट्रन हो गये। गुलबी की दूकान में तीन तरह का तम्बाकू मिलता था। तम्बाकू की जली हुई खोट्टी को पीस कर बराबर भाग प्रेम रस डालती और उसी से सानकर नम्बर तीन का तम्बाकू तैयार करती थी वह नीचे दरजे के मवक्कलों में भोग लगता था। उसी को भर कर वह कभी मुस्कुराहट, कभी कुटिल कटाक्ष, और कभी भवों की चढ़ी त्योरी यही तीन तरह के रसपुट देकर मीठी मीठी बातों से भरका कर गुलबी मुकदमा बाजों की तसल्ली कर देती थी। इसी की कमाई से उसने हाथ का कङ्कण, सिर की सिर-बिन्दी और कान का झूमक बनवाया था।

साधारण वकील मुख्तार और पुलिस अहलकारों के लिये वह जरा कड़ुआ खमीरा तेजबल और अमलतास देकर तैयार करती थी। यह नम्बर दो का तम्बाकू था।

लेकिन नम्बर एक का तम्बाकू बहुत थोड़ा बनाती थी और उसके गाहक भी केवल एक ही थे बार-सम्राट खुद राधा-वल्लभ बाबू। उनके लिये खास कन्नौज से तुहफे के तौरपर मंगा कर रखती थी और घर में अपने हाथ का ख़मीर डाल कर उस पर दोहरा सान चढ़ाती थी। इस के सिवाय उनके लिये वह मुलहठी के हरे पत्ते डाल कर बनारसी बोड़े को

मात करने वाला बीड़ा लगाती थी। इन कामों के लिये राधा वल्लभ बाबू उसको दो रुपया महीना देते थे। इन के सिवाय गुलबी वकील सम्राट से एक और बात के लिये कमीशन एजेंटी का काम करती थी।

एक दिन कलकते से राधावल्लभ बाबू के एडिटर मित्र उन से मिलने आये थे। दोनों उसी बार लाइब्रेरी में बैठे राज-नीति के मामलों पर साढ़े पाँच बजे तक बातें करते रहे अन्त को शासन और विचार विभाग को अलग करने के समर्थन में कुछ लेख लिखकर भेज देने का वचन लेने पीछे एडिटर मित्र उन से विदा हुए।

अब उस कमरे में राधावल्लभ बाबू अकेले रह गये। दूसरे वकील मुख़्तार लोग अपना अपना रास्ता ले चुके थे। इसी समय अवसर ताककर गुलबी उनके लिये तम्बाकू भर कर लायी।

राधा बाबू हाथ में लेकर सुड़ सुड़ाते हुए बोले—"बहुत दिन तो हुआ गुलाब ! कुछ नया माल टाल नहीं—"

बात काटकर गुलबी बोली—"सुनती तो हूं तारिनी बाड़ी वाली के हियाँ कलकत्ता सोनागाछी से बढ़िया माल आया है। आज खबर लेने जाती हूं। माल पसन्द होने पर अब की दस रुपया से कम इनाम न लूंगी कहे देती हूं पहिले"।

राधा०—तो मैंने कब तुम को खुश नहीं किया है गुलाब ! अच्छा हाँ भले याद आया तू तो गुलाब नन्दू के घर पर काम काज करती है? ओकी बहन को नहीं ठीक कर सकती। सुना है वह छोकड़ी है बहुत बढ़के।"

"वह बात आप को कहना नहीं होगा बाबू! मैं ऐसी कच्ची नहीं। पहलेही से जी जान से लगी हुई हूं। लेकिन वह लौंड़ियाँ बड़ी पक्की है। अभी हाथ में आती ही नहीं। देखूं कहाँ तक क्या कर सकती हूं।
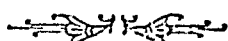
(१२)

वन्देमातरम्।

नन्दलाल के घर पर आकर गुलबी जब हेमाङ्गिनी को अकेले पाती तब अक्सर राधावल्लभ बाबू की बात छेड़ देती थी। और वह कैसे ऊँचे दिल के आदमी हैं। कितने बड़े खर्राच हैं। किस तरह खुले हाथ रुपया फेंकते हैं। कैसे खुश मिजाज और रसिया हैं, इन्हीं सब का बखान करती थी। लेकिन इन बातों की बाढ़ से जब देखती कि हेमाङ्गिनी, नाक भौं चढ़ाने लगी है तब झट नन्दलाल की बात डाल कर बतलाती कि कैसे राधावल्लभ बाबू किस चतुराई से मवक्कलों से पैसा पैदा करा देते हैं। इन्हीं बातों का अपनी नापसन्द बातों पर परदा डाल दिया करती थी।

एक दिन हेमाङ्गिनी से गुलबी की इसी तरह की बातें हो रही थीं। कि विधुभूषण को साथ लिये हुए नन्दलाल डेरे पर आगया। गुलबी समझती थी कि कृष्ण नगर में जितना स्वदेशी का गोलमाल है सब के विधुभूषण ही गुरुघंटाल हैं। उनको देखतेही गुलबी ने पूछा "काहे बाबू! ए साल और साल की तरह राखी बन्धन ना करोगे? तुमलोग?"

वि०-हाँ करेंगे काहे नहीं।

कुवार की तीसवीं को न होगा। इस बार तुम लोग भी कचहरी में पान तम्बाकू नहीं वेचने पाओगी। सब दूकानपाट और खरीद बिक्री सब बन्द रखना होगा।

गु०—एँ ! क्या कचहरी भी बन्द रहेगी ?

वि०—नहीं। कचहरी तो खुली रहेगी।

गु०–जब कचहरी रहेगी तब तो वकील मोखतार मुवक्किल सब लोग आवेंगे। लोग तमाखू पान नहीं खाने पायेंगे ?

हेमाङ्गिनी बोली-"अच्छा एक दिन पान तम्बाकू नहीं खाने से क्या नहीं चलेगा ?"

गु०-कैसे चलेगा ? तमाखू दिन भर नहीं पाये से पेट फूल जायगा तब ? अच्छा हाँ और का का होगा ओ दिन ?

वि०–सङ्कीर्तन होगा। सब लोग झंडा निशान लेकर गाते बजाते हुए शहर की प्रदक्षिणा करेंगे। सन्ध्या के बाजार में बड़ी भारी सभा होगी। उसमें बहुत लोग स्वदेशी पर स्पीच देंगे और सब लोगों को स्वदेशी के लिये प्रतिज्ञा करनी पड़ेगी।

गु०–उसी तरह सब लोग वन्देमाता वन्देमाता कहके चौंकरेंगे ? तुमलोग तो बाबू वन्देमाता वन्देमाता कहके जेतना चिचिताते हो और दरोगा जी ओतनाही गुस्सा होते हैं कहते है पुलुस के बड़े साहब वन्देमाता सुनने से बहुत तीते हो जाते है।

विधु०-साहबों के तीते होने से हम लोग नहीं डरते।

गु०—यह कैसी बात कहते हो। बाबू ! साहब लोग हमारे देश के राजा हैं। ऊ चाहें तो पकड़ कर जेल देदेंगे तब ?

हेम०—अरे जेल देना बात कहना तो नहीं न है। जब तक कोई कसूर नहीं करे तब तक जेल देने का किसका अधिकार है।

नन्दलाल ने कहा—"अगर कोई बिना विचार किये बे कसूर जेल देकर जुलुम करे तो उसके वास्ते हाईकोर्ट तक अपील का दरवाजा खुला है कि हंसी खेल है।"

मूड़ी झाँटकर विधुभूषण बोला—"नहीं जी मैं विचार भिचार कुछ नहीं जानता स्वदेशी के लिये मैं जेल जाने को तैयार हूं।"

"तो मालूम हुआ तुम लोगों का स्वदेशी सरकार कम्पनी बहादुर, के साथ झगड़ा करना है।" यही कहती हुई गुलबी चली गयी।

अब जब से राधावलभ ने नन्दलाल को खबरदार किया है तबसे वह स्वदेशी मामले में जाहिरा। उतना नहीं जाता। विधुभूषण इस बात को देख रहा था। इधर राखी बांधने का दिन पास आ रहा था। नन्दलाल के समान एक उद्योगी कर्मठ जवान पीछे पांव दे यह विधुभूषण का इरादा नहीं था। इसी से नन्दलाल को जोश दिलाने के लिये वह आज कच-हरी से साथ आया था।

नन्दलाल ने कचहरी के कपड़े बदल कर हाथ मुंह धोया और बाद ही दालान में बैठ कर विधुभूषण से ज्यों बात करना शुरू करता था कि एक हाथ में बेग और दूसरे में छड़ी लिये हुए पांचू मामा सामने से आ धमके।

बहुत दिनों पर बहन की बीमारी का समाचार पाकर

देखने आये थे। हेमाङ्गिनी की मां को अक्सर बुखार हो आता था। पांचू मामा को देखकर विधुभूषण बड़ा खुश हुआ और उनसे कलकत्ते के स्वदेशी की खबरें पूछने लगा। पांचू मामा ने भी सब कहा और विधुभूषण को उस रात के वहीं आहार और आराम करने का आग्रह किया।

(१३)
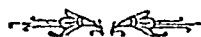
पञ्चानन बनाम विधुभूषण।

बायकाट आन्दोलन के साथही साथ देश में एक दर्जे के शिक्षित युवकों के जी में जो उच्छृङ्खल और कठोर भाव जागृत हो रहा था वह पांचू बाबू अच्छी तरह देख समझ रहे थे। वह कहते थे-" जवानी में हम लोगों को वसन्त की शीतल मन्द सुगन्ध समीर, कोयल की कुहू कुहू, गुलाब का सुवास और सङ्गीत का मधुर झङ्कार बड़ा अच्छा लगता था। लेकिन आज कल के स्वदेशी छोकड़ों में इन सब की कुछ भी कदर नहीं है। वे सब आंधी तूफान,तारों का टूटना, बिजली का कड़कना, वज्र गिरना, भूडोल होना, इन्हीं सब आफत उपद्रवों में आनन्द पाते हैं। प्रकृति की मधुरता और शान्ति उनको अच्छी नहीं लगती। युवकों के स्वभाव में इतना हेर फेर देखकर पञ्चानन बाबू के मन में क्षोभ होता था। इस कारण जब किसी स्वदेशी छोकड़े को सामने पाते तब उससे तर्कवितर्क और वादविवाद शुरू कर देते थे। उनका मतलब उनको सुबुद्धि देना और अच्छे मार्ग पर ले आना था। बूढ़ापा

सदा से जवानी पर नसीहत करने और उसको सिखलाने का अधिकार और अभिलाषा रखता है।

पांचू बावू जब कृष्णनगर आते तब विधुभूषण से इसी मामले पर उनकी भिड़ जाती थी। हम इस युवक का यहां कुछ परिचय देते हैं।

विधुभूषण सुन्दर डील डौल, चौड़ी छाती का, हट्टा कट्टा जवान था। उसका दिल बड़ा था। उसके मा नहीं थी। अपने देश को ही अन्तःकरण से मा :कहकर मानता और कहता था।

"मा कहकर पुकारने के लिये जिसको स्वदेश नहीं है ऐसी कोई जाति पृथ्वी में न रहे।"

विधुभूषण एक एक देश माता के सब सन्तान को एकत्र मिलाकर एक एक जाति मानता था कहता था जाति कभी वर्ण और वंशगत नहीं हो सकती। जातीयता और स्वदेशीयता एकही वस्तु है।

विधुभूषण देशवासियों के लिये बहुतसी बातें सोचता था। खाने की चीजें इतनी महंगी क्यों हैं? देश का शिल्प और वाणिज्य इतना गिरा हुआ क्यों है? धन कुबेरों का जमा किया हुआ रुपया किस तरह देश के काम में लगाया जा सकता है? किस उपाय से सर्व साधारण में शिक्षा और ज्ञान का विस्तार हो सकता है? देश के लोगों का स्वास्थ्य किस उपाय से उन्नत हो सकता है? समाज शरीर में कौन कौन से घाती रोग हैं और उनके प्रतिकार का क्या उपाय है? देश-वासियों का राजनीतिक स्वत्वाधिकार कैसे बढ़ेगा? इन विषयों पर विधुभूषण बहुत सोचता था।

स्वदेश की शोचनीय दशा पर सोच विचार करता वह हुआ बहुधा पागल की तरह हो उठता था। कभी कभी अकेले अपने सोने के कमरे में खाट पर लेट कर तकिये के नीचे मुंह कर के भर पेट रोता और इष्ट देव को पुकारकर कहता थाः—हे देवी! हे शक्तिरूपिणी! मा! तूही इसका एकठो उपाय कर! यह काम केवल आदमी से नहीं पूरा पड़ सकता''।

विधुभूषण के मन प्राण की सब दशाओं का वर्णन हम से नहीं हो सकता। लेकिन इतना ही कह सकते हैं कि इस युवक का प्राण सिरिस सुमन से कोमल होने पर भी कभी कभी वज्र से भी कठोर जान पड़ता था।

विधुभूषण के स्वभाव में कुछ उद्धतपन था। वह किसी तरह की अधीनता या तावेदारी नहीं सह सकता था। चाहे अपने लिये हो चाहे दूसरे के लिये।

संसार के सभी बन्धनों की जड़ में जो अधीनता है और उस अधीनता को माने बिना परिवार, समाज तथा राष्ट्र का सब सिलसिला तहस नहस हो जायगा, इस बात को विधुभूषण नहीं मानता था।

विभूषण का यह द्रोहीभाव स्वदेशी आन्दोलन की हवा लगने से इतना बढ़ गया था कि शान्तचित्त से वह इस बात की कल्पना नहीं कर सकता था कि एक जाति दूसरी किसी जाति पर आधिपत्य करेगी। उसकी राय में ऐसा करने से दोनों जातियों की अधोगति जरूर होगी।

विधुभूषण ने कई देशों के इतिहास पढ़े थे। वह दिखलाता था कि पोलैण्ड को पराधीन करके रूस पोल लोगों

की जातीयता नष्ट करने गया किन्तु आपही उसने इस में अपनी हानि की थी। ग्रीस और सिसली को पदानत करने से टर्की का सर्वनाश हुआ था। इटली का स्वाधीनता हरण ही आष्ट्रिया की जातीय अवनति का मूल कारण हुआ।

विधुभूषण कहता था कि भगवान ने खुद अपने हाथ से सब जातियों के ललाट पर जातीयता का राज तिलक लगा दिया है। दिग्विजयी राजा उसको पोंछ नहीं सकते। ऐसा करने की कोशिश कर के वे लोग केवल अपनी शक्ति का फिजूल खर्च करते हैं। जो देश आज डूबा है वह एक न एक दिन फिर ऊपर आवेगा। संसार का इतिहास इस जातीय पुनरुत्थान की बात बराबर साबित करता आ रहा है। जातीय स्वत्व तमादी नहीं होता।

इन्हीं सब पोलिटिकल बातों पर उस दिन सन्ध्या के नन्दलाल के घर पर प्रवीण पञ्चानन बाबू और नवीन विधु-भूषण बाबू में खूब बहस होती रही। देश और समाज का काम किस तरह करना होगा, इस बात में दोनों की राय बिल कुल अलग अलग दिखाई दी। इस बात के दोनों तरफ़दार रहे कि समाज को जड़ मूल से बदल देना चाहिये। और दोनों इस बात पर राज़ी थे कि समाज में इस फेर बदल की सरिता को बे रोक बहने की जरूरत है। क्योंकि इस सोते के बन्द हो जाने से समाज का जीवन जल गन्दगी से भर कर सड़ जायगा। पाँचू मामा चाहते थे कि यह सोता स्वच्छ भाव से लगातार उन्नति समुद्र की ओर बहा करे लेकिन विधुभूषण की राय थी कि नहीं यह नदी नर्वदा के धुआंधार की तरह प्रचण्ड वेग से समाज का भला बुरा सब बहा ले जाय।

विधुभूपण और पांचू मामा दोनों की इच्छा थी कि समाज के भीतर नये सुधार का उँजियाला घुस जाय। लेकिन बात इतनी ही थी कि पांचू बाबू इस उँजियाले के लिये सवेरा होने की राह देखना चाहते थे। कहते थे कि प्रातःकाल की अरुणाई में समाज सुन्दर रूप पर स्वच्छ सुप्रकाशमान होगा और वही मङ्गलकारी है। किन्तु अधीर विधुभूपण निशावसान की राह नहीं देखता था। वह समाज गृह में आग लगाकर उसी की उंजियाली में उसे प्रकाशवान देखने की अभिलाषा करता था। कहता था कि जो आग जलाती है वही रोशनी भी देती है।"

(१४)

राधावल्लभ की दया।

बङ्गाल में सभी जगह सावन की धारा के साथ मलेरिया का गहरा लगाव देखने में आता है। हम लोग इतने दिनों से सुनते आये हैं कि बरसात में खाड़ी, खन्दक, गड़हे तलाव के बंधे पानी में लतापता के सड़ने से मलेरिया का विप पैदा होता है। और एनोफिलि नाम के मच्छड़ उसको प्रान्त भर के घर घर में पहुंचाया करते हैं। अब कोई सुविज्ञ विज्ञानी कहता है जहां बरसात का जल निकालने के लिये उपाय कर दिया गया है इस ऋतु में वहीं मलेरिया दिखाई देता है। और जो जगहें वर्षा में अच्छी तरह जल से डूबी रहती हैं वहाँ इस रोग की पैठ नहीं दिखाई देती। यह सब तो हुआ पण्डितों का मतवाद लेकिन जिनके पेट में पाण्डित्य नहीं

उनका कहना है कि पुष्ट खुराक और पीने के योग्य स्वच्छ जल के भरे जलाशयों के विना ही वङ्गाल के गांवों में मलेरिया जड़ जमाकर वैठा हुआ है।

चाहे जैसे हो कृष्णानगर में इस साल मलेरिया वड़े जोर का फैला था और हेमाङ्गिनी की मा उसी में आज दो महीने से खाट पर पड़ी थी। उसको पहले जाहिरा किनाइन मिले हुए सिन्धु और विन्दु के साथ मिले हुए नाम के कई अर्क पिलाये गये लेकिन जव किसी से कुछ लाभ नहीं हुआ तव गुप्त किनाइन मिली ज्वर गजकेशरी प्राणसंजीवनी आदि वहुत सी आयुर्वेदीय गोलियां सेवन करायी गयीं। लेकिन किसी से उसके जल्द आराम होने का कुछ उपाय नहीं वना।

नन्दलाल की मा को इस वीमारी के समय राधावल्लभ वावू देखने आया करते थे। गुलवी पहले ही आकर हेम को उनके आने की नोटिस दे जाती थी। राधावल्लभ आकर रोगी के पथ्यादि के लिये दो चार रुपये भी दे जाया करते थे। जव नन्दलाल रहता तव उनकी सहायता और रोगिनी के पास ठहरने की मात्रा कम रहती थी लेकिन जव वह नहीं रहता तव हेमाङ्गिनी के हाथ नया चिकचिकाता हुआ चोटीवाल रुपया कुछ अधिक ठनकाते और गिन कर देते थे और रोगिनी की खाट के पास देरतक वैठकर हेमाङ्गिनी से उसकी मा की दशा पूछ पांछ कर उससे वात करने कराने की कोशिश करते थे। लेकिन हेमाङ्गिनी उनकी सव वातों का जवाव "हां, हूं, नाः इन्हीं तीन उच्चारणों से पूरा कर डालती थी।

एक दिन इसी तरह हेमाङ्गिनी को वहाँ अकेले पाकर राधावल्लभ ने कहा-देखो हेमाङ्गिनी! तुम्हारी मा के इलाज

में अगर अधिक रुपया दरकार हो तो कहना हमसे लजाना मत।

पहले तो इतना सुनकर हेम कुछ देर तक चुप रही। फिर अपनी मा की दशा याद करके यह सोचने लगी कि रुपये बिना अच्छी तरह इलाज नहीं हो सकता। फिर बोली- "अच्छा आप दया करके अबकी पच्चीस रुपया भेज दी-जिये मैं चाहती हूं कि एक बार किसी बड़े डाक्टर को बुलाकर दो चार दिन मा का इलाज कर देखूं। नहीं तो मन में इसका पछतावा रही जायगा।"

राधावल्लभ ने जेब से पच्चास रुपये का नोट निकाल कर हेमाङ्गिनी के हाथ में दिया। कहा-"देखो हेमाङ्गिनी मुझ से तुम्हारा दुःख देखा नहीं जा सकता। मैं तुमको बहुत चाहता हूं। ऐसी कोई चीज़ दुनिया में नहीं जिसको तुम माँगो और मैं न दे सकूं। तुमको जब जिस चीज़ की जरूरत हो तब मुझे अपना समझो और जी खोलकर साफ कहो।"

इतनासुनकर हेमाङ्गिनी चौंक उठी। वह भीतर ही भीतर बहुत बिगड़ी और अपना उसने बड़ा अपमान समझा। एक बार मनमें उसके आया कि रुपया फेर दें लेकिन मा की दशा याद करके उसने ऐसा नहीं किया। झट बुद्धिमती ने उत्तर दिया-" मैं आप की छोटी बहन के बराबर हूं। आप ही लोगों के आश्रय में हम लोग आ पड़े हैं। इस आफत विपत में आप के सिवाययहां हम लोगों का और कौन है?"

यही कहकर हेमाङ्गिनी मा के लिये पथ्य बनाने का बहाना करके रसोई घर को चली गयी। उसकी मा को उस समय

नींद आ गयी थी। राधावल्लभ कुछ देर तक वहां खड़े रहकर उस दिन तो विदा हो गये लेकिन मन में कहते गये कि आज कुछ काम आगे बढ़ा है।
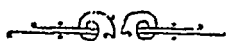
[१५]

खण्ड प्रलय।

रोग जब बहुत दिन तक ठहर जाता है तब बुढ़ापा या मरन को बुलाया है। जहां मरन नहीं होती वहां बुढ़ाई आ पहुंचती है।

हेमाङ्गिनी की माता बहुत दिनों तक कठिन रोग भोगकर भी मरी नहीं लेकिन शरीर से बहुत टूट गयी। सिर के वाल सब पक गये। देह के चमड़े और सब अङ्ग ढीले पड़ गये।

अब अकेले हेमाङ्गिनी पर ही घर के सब कामकाज का भार आ पड़ा। घर में झाड़ बुहार से लेकर चिराग़ बत्ती और रसोई पकाने तक सब काम उसको करना पड़ता।

वह कहा करती थी कि उसका नन्दलाल व्याह करके एकठो कैसी ही ऊबर कूबर बहू लावे तो उसको बहुत आराम मिलेगा।

एक दिन जब हेमाङ्गिनी का सब काम दिनभर का हो चुका था। गुलबी आ पहुंची। रात के आठ बजे आते देखकर हेमाङ्गिनी के मन में शङ्का हुई। इससे पहले गुलबी रात को उसके घर कभी नहीं आती थी। इस रात के किस मतलब से आयी है इसकी उसको चिन्ता हुई।

लेकिन गुलवी जानती थी कि आज नन्दलाल घरपर नहीं कलकत्ते गये हैं उसने पूछा–"क्या नन्दूबाबू आज आवेंगे नहीं?"

हे०–कहतो गया है कि आज रात को नहीं आ सकता कल्ह ग्यारह बजे के पहलेही आकर कचहरी पहुंचेगा।

गु०-अरे परसों तो राधावल्लभ बाबू ने अपने एक मवक्कल से नन्दूबाबू को दस रुपया दिलवा दिया था बहन! उस मवक्कल की जीत हुई रही। राधा बाबू ओसे बोले कि पहले हमारे मुहर्री को दस रुपया देकर खुस करो तब हम खुस होंगे।

हे०-हां वह आकर कहता रहा। मा सुनकर बहुत खुस हुई थी।

गु०-बात ऐसी है बहन कि राधावल्लभ बाबू की नजर बहुत ऊँची है। तुम्हारी माकी बीमारी में उस दिन जो वह पच्चास रुपया तुम्हारे हाथ में दे गये थे वह उन्हीं के मुंह से हमने सुना था उन्होंने उसी दिन हम से कहा था कि गुलाब मनी! तुम हेमाङ्गिनी को जाके पूछो उसको और रुपया तो नहीं चाहिये? तुम्हारे उपर उनकी बड़ी नजर है बहन यह मैं तुम से भीतरी बात बता देती हूं। तुम्हारी बात रोज हम से पूछते रहते हैं। अब तुम्हारा दिन फिरने में देर नहीं है जान लो।"

इस बात से हेमाङ्गिनी को जो क्रोध हुआ था वह जाहिर करने का अवसर उसको नहीं मिला। इसी से वह क्रोध भय के रूप में बदल गया क्योंकि उसने सुना कि इसी समय राधा वल्लभ बाबू मतवाले की तरह वहीं पहुंच गये। और गुलबी गुलवी पुकारते हुए घर में घुस आये। उनको देखतेही

गुलबी बोल उठी–"यह लो! बाबू तो आ गये। लीजिये आपही की तो बात हो रही थी।"

हेमाङ्गिनी इसी समय खिड़की से निकल कर तेजी से बाहर हो गयी। गुलबी–"अरे ठहरो! ठहरो! भागो मत!" कहती हुई उसका पीछा करके पकड़ना चाहती थी। वह हाथ छुड़ाकर भाग गयी।

राधावल्लभ उस रात के बोतल डबल ढाल गये थे। गुलबी उनकी राह ताकती थी, जान पड़ता है लेकिन उसको ऐसा भरोसा नहीं था कि वह इस तरह मतवाले होकर आवेंगे।

"कहो हेमाङ्गिनी कहां है? हम तो हेमाङ्गिनी को चाहते हैं। बस और कुछ नहीं हमें हेमाङ्गिनी चा–चाहिये चाहे जितना रु–रुपया लगे अभी दे-देने को तै-तैयार ले-लेआओ हेवाङ्गिनी को यू ऊ ब्रूट! ले ले आओ अभी।" कह कर राधा वल्लभ चिलाने लगे।

"अरे चिचिआव मत बाबू! चुप! चुप" कह कर गुलबी उन्हें ठंढा करना चाहती थी। लेकिन मतवाले को मीठी बातों से ठंढा करने की कोशिश करो तो वह और उपद्रव करने लगता है। राधावल्लभ भी ठंडा होने के बदले और उछलने लगे। लेकिन उनको दो आदमियों ने पहुंचकर तो ठंढा किया।

इसी समय नन्दलाल और सुरेश घर में आये। सुरेश ने राधावल्लभ को जोर से एक धक्का मारा। वह वहीं धरती में गिर गये। लेकिन फिर ढलते ढुलकते उठ खड़े हुए। नन्दलाल गरदनियाँ देता हुआ उनको बाहर निकाल आया। हेमाङ्गिनी

की मा शोर गुल सुनकर कांपती हुई अपने घर से वाहर निकल आयी थी।

गुलवी-" अरे वापरे ! माई रे माई ! मार डाला रे वाप!" कहती और चिलाती हुई वाहर निकल गयी। महल्ले के भी दो चार आदमी हुल हपाड़ सुनकर वहां आ पहुंचे थे। इस तरह गुलावमय राधावल्लभ का उस रात का अभिसारा भिनय खराड प्रलय में समाप्त होगया।

[१६]
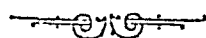
चित्त विक्षोभ।

मदाखलत वेजा के लिये जो कानून हैं। वह समाज के सियार कुत्तों पर ही अधिक चलाया जाता है। जो समाज में सिंह शार्दूल हैं उनको इस आईन के फंदे में डालने का साहस किसी को नहीं होता। राधावल्लभ भी इसी कारण इस फंदे में नहीं पड़े। लेकिन अनधिकार काना फूसी के उपर क्यों कोई आईन नहीं है सो हम नहीं कह सकते। ऐसा कानून होने से वहुतों का मुंह वन्द हो जाता और समाज से वहुतसी ग्लानियां दूर हो जातीं। इससे हेमाङ्गिनी के स्वच्छ चरित्र पर मुलिया की मां दुलिया की चाची अखफी को मौसी फंकनी की फूआ और खदेरनी, विखेरनी को टीका टिप्पणी करने का अवसर नहीं आता।

ऊपर लिखी घटना के वाद नन्दलाल ने कचहरी का जाना वन्द कर दिया। सुरेश उनको कलकत्ता जाने की सलाह देकर चला गया। वह नन्दलाल की मा और वहन से भेट करने

आया था। वह कह गया कि जलमें रहना और मगरों वैर करना नहीं चल सकता। राधावल्लभ कृष्ण नगर का मगर है।

इधर महल्ले और कचहरी में इस मामले पर तरह तरह की बातें उड़ने लगीं। दुष्टों ने कहा नन्द की बहन ने राधावल्लभ का बहुत रुपया खाया था। और उसी के कहने से उस रात के राधावल्लभ उसके मकान में गये थे। गुलबी भी इस बात पर जीभ दबाकर कभी कभी हामी भरती थी।

उधर राधावल्लभ इस बात से अपनी बहादुरी समझते थे। समर्थवान को कुछ दोष नहीं है। तेजी यसां न दोषाय" यही तो हमारे समाज का विचार है। अकलंक कमलिनी को कलंक कीचड़ में डालना समाज खूब जानता है।

इन अफवाहों में से कुछ बातें नन्दलाल के कानों तक पहुंच कर उसको दुःखी करती थीं। एक दिन रास्ते में राधावल्लभ के मित्र दारोगा दीनदयाल ने नन्दलाल को देखकर कहा—"क्यों जी नन्दलाल ! तुम राधावल्लभ बाबू से क्यों बिछुड़े हुए हो? मिलते नहीं। वह तुम को अपने घर का लड़का समझते हैं इतना चाहते हैं और तुम उलटे होकर कचहरी का काम काज छोड़ बैठे हो। तुम्हारे ऐसा अहमक छोकड़ा तो मैंने दुनियां में नहीं देखा। ऐसा करने से भला तुम्हारा गुजारा कैसे होगा ? "

दीनदयाल की ये बातें मुरब्बी की तरह होने पर भी नन्दलाल मन में क्रोध के मारे फूलने लगा लेकिन बहुत कुछ आगे पीछे सोचकर उस बेचारे ने भीतर का गुस्सा भीतरही रोक लिया। वह पुलीस के आदमियों से बात बहस करना कभी पसन्द नहीं करता था।

एक दिन गुलबी आकर नन्दलाल से बोली—" अब आप लोगों पर बाबू की नराजी मिटमिटा गयी है। आप लोगों ने जो उनको खाह वाह और उरेब कहा रहा वह सब मन से उन्होंने भुला दिया। बाबू के साथ जाकर भेंट करो आप। बाबू आप को बोले हैं। "

नन्दलाल से अब नहीं सहा गया। गुलबी को उसने खूब फटकारा और कहा—" खबरदार सांपिन! फिर कभी दरवज्जे आयी तो कहे देते हैं। "

नन्दलाल ने मां और बहन को साथ लेकर कलकत्ता जाना ठीक कर रखा था। वह इसी फिक्र में था कि कुछ रुपये का बन्दोबस्त हो जाय तो यहां का देना और मकान भाड़ा चुकाकर चला जाय। इसके लिये उसने सुरेश को चिट्ठी दी थी। इधर राखीबन्धन का दिन पास आ रहा था। उसके पहले ही कृष्णनगर से चले जाने का नन्दलाल ने इरादा पक्का कर लिया था।

[१७]
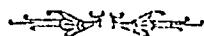
कुवार की तीसवीं।

बङ्गाल में जैसे और जगहों में आश्विन की तीसवीं को होता था वैसे ही इस साल कृष्णनगर में भी हुआ। सवेरे ही स्वदेशी जवानों ने गोल बांधकर नदी स्नान किया। और एक

दूसरे के हाथ में राखी बांधते [रक्षाबन्धन करते *] और वन्देमातरम कहते हुए शहर की परिक्रमा करने लगे। दूर दूकान सब बन्द रहे और घर घर उपवास (रसोई बन्द) हो इस पर सब की दृष्टि रही। वहां के कुछ जूनियर वकील उन युवकों के नेता बनकर काम करने लगे। पुलीस ने भी इस पर कड़ी नजर रखी कि वे लोग किसी पर कुछ जोर जुल्म या जबरदस्ती न करने पावें न कहीं कोई किसी का मन न होने पर भी बलात दूकान बन्द करके शान्तिभङ्ग करे।

इधर सुरेश के यहाँ से रुपया नहीं आया। इस कारण नन्दलाल का कलकत्ता जाना नहीं हुआ। वह इस साल और वर्षों की तरह रक्षाबन्धन के मामले में शामिल नहीं हुआ। उसने सब से कह दिया कि तबीयत अच्छी नहीं है।

लेकिन विधुभूषण और उसके साथी तो नन्दलाल को छोड़नेवाले जीव नहीं थे। सब ने उसके डेरे पर जाकर हाथ में राखी बांध दी। लेकिन वह किसी तरह उस दिन घर से बाहर नहीं हुआ।

जब स्वदेशी युवक वहां से लौटकर चले जा रहे थे रास्ते में उन्होंने सुना कि दक्खिन टोलेवाले नटवर विश्वास के घर में रसोई हो रही है।

सुनते ही सब नटवर के दरवाजे पर जा पहुंचे और वन्देमातरम् करते करते जब उन्होंने पक्का समाचार पा लिया

* जब बङ्गाल के दो भाग हो गये थे तब दोनों भागके बङ्गवासियों ने आपस में रक्षापूर्णिमा की तरह राखी बांधने का पर्व्व मनाना शुरू किया था।

कि सचमुच भीतर रसोई हो रही है तव नटवर को उसे वन्द करने के लिये तरह तरह से समझाने लगे। लेकिन नटवर ने किसी की कुछ न मानी वह स्वदेशी छोकड़ों पर वरावर गरम होता गया।

अव विधुभूषण भी विगड़ उठा। वोला—"देखो अगर सीधी तरह से रसोई वन्द नहीं करोगे तो मैं चौके में घुसकर तुम्हारे चूल्हे में पानी दहला दूंगा। इसके लिये जेल जाने को भी हम लोग तैयार हैं।"

ठीक इसी समय नटवर के कोनचे से अपने दल वल सहित मुवारकअली दारोगा निकल आये और उन युवकों को गिरफ्तार करके कहने लगे—"अच्छा देखते हैं कि तुम लोग कैसे जेल जाने को तैयार हो।" विधुभूषण के साथ और जवानों को गिरफ्तार करके पुलीस थाने में ले गयी।

तीसरे पहर को वाजार में वड़ी सभा हुई थी। उसमें खुद पुलीस सुप्रिंटेण्डेण्ट वहुत से पहरेवाले सिपाहियों के साथ मौजूद थे। सभा में स्पीच देने वाले एक महाशय ने उन युवकों की गिरफ्तारी की वात कही तव श्रोताओं में क्रोध भाव चलायमान दीख पड़ा। शान्तिभङ्ग का लक्षण समझ कर पुलीस के साहव को सभाभङ्ग कर देना पड़ा।

उसके वाद सभा के प्रधान पण्डे वकील लोग वार लाइब्रेरी में जमा होकर सलाह करने लगे कि क्या करन चाहिये। खुद राधावल्लभ वावू ने गुपचुप अखवार में तार खवर भेजने का एक मसौदा तैयार कर दिया। इस तरह देश के काम में वह वर की ओर से फूआ और कन्या की ओर से

साक्षी बने थे । वह खबर बाबू योगेशचन्द्र चटर्जी बी, ए, एल, एल, बी, प्लीडर हाईकोर्ट कृष्णनगर की सही से कलकत्ते के कई दैनिक अङ्गरेजी अखबारों में भेजी गयी । उसकी नकल हम यहां देते हैं:—

"The Rakhi-day celebration at Krishnanager did not pass off smoothly. Four boys have been put under arrest on a criminal intimidiation and wrongful restraint. The Superintendent of police with the help of a 'Posse' of constables dispersed a peace ful public meeting held in the after-noon for protesting against the partition of Bengal. The public were mondified at this high handed proceeding." *
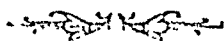
[१८]

खिलाड़ी की चाल ।

थाने के इन्स्पेक्टर रघु बाबू ने इस स्वदेशी मामले को

* अर्थ—कृष्णानगर का राखी बन्धन बेखटके नहीं बीता । तखवीफ मुजरिमाना और जबर्दस्ती करने के अपराध में चार जवान गिरफ्तार हुए हैं । दोपहर के बाद बङ्ग भङ्ग का प्रतिवाद करने के लिये जो सर्व्व साधारण की शान्ति पूर्वक सभा हुई थी उसको सुप्रिंटेंडेंट साहब ने कान्सटेबलों के साथ पहुंच कर तोड़ दिया है । इस जुलम से सब लोग दुःखी हुए हैं ।

जब कुछ तहकीकात की तब समझ गये कि दारोगा मुबारक अली ने राई को पहाड़ बनाया है। उन्होंने अफसरों को लिख दिया कि असामियों ने मुद्दई पर वैसा कुछ जुल्म नहीं किया है। और इसके करने में जो गवाहियां मिलती हैं उनमें पुलीस के आदमियों के सिवाय और किसी की ऐसी गवाही नहीं जिस पर विश्वास किया जा सके। ऐसी हालत में उन असामियों पर सरकार की ओर से मुकदमा चलाने से आगे जाने का भरोसा नहीं है।

मेजिस्ट्रेट साहब का पूर्ण विश्वास था कि रघुबाबू सच्चे आदमी हैं। वह उनको [Reformed Hindu] समझते थे। इस कारण उन्होंने पुलीस के बड़े साहब को रघूबाबू की रिपोर्ट दिखलायी।

निदान दोनों साहबों ने आपस में सलाह करके इस मुकदमे के सब कागज पत्र राधावल्लभ बाबू के पास राय के लिये भेज दिये। उन दिनों सरकारी वकील के बीमार पड़ जाने से राधावल्लभ बाबू हीं उनकी जगह पर काम कर रहे थे।

दूसरे दिन सवेरे ही राधावल्लभ बाबू मेजिस्ट्रट के बंगले पर भेट करने के लिये पहुंचे। उन्हों ने साहब को समझा दिया कि वह मामला सही हैं। लेकिन जिन चार आदमियों को असामी बनाकर गिरफ्तार किया गया है उन्हीं की चालान देकर मुकदमा खड़ा करने से ऐसा हो सकता है कि आगे न चले।

साहब से राधावल्लभ बाबू ने कहा-"यहां के सब स्वदेशी उपद्रवों का एक प्रधान पण्डा है मेरा निकाला हुआ मुहर्रिर

नन्दलाल चटर्जी। इसी स्वदेशी के कारण मैंने उसको अपने यहां से जवाब दे दिया। मुझे ठीक पता लगा है कि असामी लोग नन्दलाल के घर पर गये थे और उसी से सलाह करके उसी के कहने से उन लोगों ने उस दिन नटवर विश्वास के घर पर चढ़ाई की थी। इस कारण नन्दलाल को असामी किये बिना इस मुकद्दमे में जान नहीं आवेगी।

अंत को राधावल्लभ बाबू ने इशारे से यह भी कह दिया कि रघुबाबू इन्स्पेक्टर जो हैं वह हैं सीधे आदमी। कभी कभी सीधे का अर्थ गदहा समझा जाता है। और खास करके रघुबाबू से किसी स्वदेशी मुकद्दमे में सुबूत लेने से ठीक हो ही नहीं सकता वह भीतर से कट्टर स्वदेशी हैं। इन बातों में काम का आदमी वही दारोगा दीन दयाल है। पुलीस सुप्रिंटेण्डेंट अच्छी तरह जानते हैं कि वह कैसा मुस्तैद आदमी है।

दूसरे दिन राधावल्लभ बाबू ने सब कागज़ पत्र अपनी रिपोर्ट के साथ वापस कर दिया। उसमें उन्होंने लिखाः—

Evidence is insufficient; further enquiry necessary.*

यह कहने की अब जरूरत नहीं है कि उन्हीं दारोगा पर तहकीकात का भार पड़ा।

---
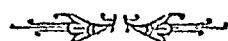
* गवाही काफ़ी नहीं है अभी और तहक़ीकात जरूर होनी चाहिये।

[१६]

दारोगा दीनदयाल ।

इसमें हम लोगों को भी सन्देह नहीं कि दारोगा दीनदयाल एक मुस्तैद अहलकार थे। कोई कोई पुलीस अफसर अपने को खान्दानी पुलीस कहा करते हैं अर्थात् पुलीस ही होकर पैदा हुए हैं. यही उनका मतलब होता है। दीनदयाल भी उसी दरजे के पुलीस अहलकार थे। उनको ध्रुव विश्वास था कि सरकारी कर्म्मचारी खासकर पुलीस के आदमी से कभी भूल भ्रम नहीं हो सकता। इसके सिवाय देश के और सब आदमी आईन तोड़ने ही के लिये पैदा होते हैं। इस कारण उनको उन सब पर कड़ी नजर रखना होगी।

पेट में कुछ इल्म रहे विना कोई दारोगा नहीं हो सकता। दीनदयाल दारोगा थे तब समझना चाहिये कि वह निरक्षर तो थे नहीं वह बङ्गला में रिपोर्ट लिख सकते थे। उसमें बहुत सेफारसी शब्द भी रहते थे। इस कारण कभी लिखावट में कर्ता कर्म्म क्रिया आदि में व्याकरण गत सम्बन्ध न रहने पर भी कुछ हरज नहीं होता था। इसके सिवाय दो चार अगरेजी के राजनीतिक शब्दों का वह उच्चारण भी कर सकते थे। वह माडरेट को मेडारेट और एकस्ट्रीमिष्ट को एकस्ट्रीमिटिज़ कहते थे। पोलिटिकल को पोलिक्टिकल कहते थे और कांग्रेस को कहते थे कंग्रास। एक दिन उन्होंने कनफरेंस को सरकस्फरेंस कह दिया तब समझा कि ठीक शब्द नहीं कहा। इसके लिये अपने मन में वह लज्जित भी हुए।

धर्म्मानुष्ठान में दीनदयाल की कुछ अच्छी आस्था दीख पड़ती थी। तारिनी बाड़ीवाली के मकान में जब राधावल्लभ

बाबू कांच के गिलास में ह्विस्की ढालकर दीनदयाल को देते थे वह उसके मुंह पर हाथ रखकर कई बार बीज मंत्र जप करने पर तो मुंह में उड़ेलते थे। उनका कहना था कि तंत्र शास्त्र के अनुसार पञ्चमकार साधना करने से जल्दी सिद्धि मिलती है।

उसी तारिनी देवी के मकान पर दीनदयाल राधावल्लभ बाबू से इस मुकद्दमे में सर सलाह करते थे। इसी मुकद्दमे की बात नहीं तारिनी के मकान से दीनदयाल कितने ही मामले और फरार असामियों का रफ़ादफ़ा कर लिया करते थे। तारिनी पच्चास बरस पार कर चुकी थी तौ भी उसके मन का एक आदमी मिला था उसका नाम था प्रेमचन्द्र कँड़ारी। उस बाड़ीवाली को उसकी सब भड़ौतिनें बाड़ीवाली मौसी कहकर पुकारती थीं। और प्रेमचन्द्र को कहती थीं बाड़ीवाला मौसा।

दारोगा दीनदयाल के हुक्म और सिखापन से उस सरकारी मौसे का एक और काम था। कृष्णनगर के हाट बाज़ार या कचहरी में जब कोई नया आदमी देखकर दीनदयाल को कुछ सन्देह होता तब वह प्रेमचन्द को खबर देते थे। वह उस आदमी के पीछे लग जाता और चतुराई से उसे तारिनी के मकान में ले जाकर वहीं डेरा कराता था। और एक छैल चिकनियां स्त्री को उससे भिड़ा देता था। वह उससे मिलकर शराब वगैरः के नशे में डालती और उसके भीतर का भेद निकाल लेती थी। ऐसा तो आदमी नहीं देखा जाता जिसके मुंह में शराब ढाल दी और वह भीतर जाकर उसके पेट की बातें मुंह से बाहर न कर दे। दीनदयाल ने इसी ढङ्ग

से दो खूनी असामियों को गिरफ्तार करके अफसरों से खूब नाम और वाहवाही पायी थी। इसीसे वह कहते थे कि कलि में पञ्चमकार के योग से साधना करने पर सिद्धि बहुत जल्द मिलती है। इस कारण पुलीस के दक्ष अहलकार को तांत्रिक होना जरूरी है।

पांच ही दिनों में दारोगा दीनदयाल ने अपनी तहकीकात पूरी कर ली। वह सब कार्रवाई और किसी खराब जगह में न होकर तारिनी ही के मकान में हुई थी। अन्त को दारोगा ने अफसरों के यहां इस प्रकार रपट भेजी—

"नटवर विश्वास को स्वदेशी युवकों ने जो डर दिखलाया और उनपर जबरदस्ती की उसके काफी सुबूत मिल गये हैं। जो चार असामी पकड़े गये हैं उन लोगों ने नन्दलाल चट्टोपाध्याय नाम के एक आदमी के हुक्म से यह सब किया था। यही नन्दलाल यहां के स्वदेशी वालों का सर्दार है। यह भी जान पड़ता है कि यह लोग पोलीटिकल चक्र रच रहे हैं। लिहाजा हुकुम हो तो नन्दलाल की खाने तलाशी करके उसको असामी नम्बर एक करार दिये जांय।"

मेजिस्ट्रेट साहब इसके पहले सरकारी वकील से नन्दलाल के कसूर की बात सुन चुके थे। अब दीनदयाल की रिपोर्ट से उसकी मजबूती हो गयी। सर्दार को छोड़कर दल के और लोगों का शासन ताड़न हो नहीं सकता इस कारण उन्होंने नन्दलाल के लिये उचित कार्रवाई करने का हुक्म और साथ ही तलाशी और गिरफ्तारी का वारण्ट दारोगा दीनदयाल को भेज दिया।

जब यह लिफाफा थाने में पहुंचा। इन्स्पेक्टर रघुबाबू

को अपने दारोगा की कार्रवाई देखकर बड़ी अकचकाहट और चिन्ता हुई । दीनदयाल उसी रात के राधावल्लभ बाबू से तारिनी देवी के मकान पर मिला लेकिन उनमें क्या बातें हुईं यह हम नहीं कह सकते।
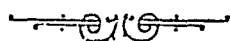
[२०]

खाने तलाशी ।

दूसरे दिन सवेरे ही नन्दलाल के घर की तलाशी हुई । दारोगा दीनदयाल ने पच्चीस तीस कान्स्टेबलों के साथ उसका मकान घेर लिया । रघुबाबू थाने का इन्स्पेक्टर होने के कारण सर्च पार्टी के हेड होकर आये थे।

चारो ओर बड़ी हलचल मची । बहुत आदमी तमाशा देखने के लिये जमा हुए । लेकिन पुलीस ने किसी को भीतर नहीं जाने दिया । सब लोग बाहर खड़े रहे। उनमें गुलबी पानवाली भी थी। वह भी तमाशा देखने आयी थी।

नन्दलाल का घर तलाश करके पुलीस ने बालगङ्गाधर तिलक महाशय का एक फोटू और एक कापी सन्ध्या नामक दैनिक बङ्गला अखबार की ले ली और पारसाल के एक स्वदेशी सभा के कुछ विज्ञापन दारोगा दीनदयाल के हाथ लगे । उसने नन्दलाल को पकड़कर हथकड़ी भर दी । और चार कान्स्टेबलों के ज़िम्मे कर दिया । यह देखकर नन्दलाल की मां बेहोश हो पड़ी। हेमाङ्गिनी भी बहुत डरी । रघुबाबू ने हेमाङ्गिनी की मा के मुंह पर जल छिड़कवाया। कुछ ठंढा होने पर उसने आंखे खोलीं लेकिन सारी देह कांप रही थी।

रघु बाबू ने हेमाङ्गिनी और उसकी मा से कहा—"आप लोग कुछ डर मत कीजिये । हम यहां मौजूद हैं आप लोग हमारी मा बहन हैं कुछ डर की बात नहीं।"

हेमाङ्गिनी की मा रोते रोते बोली "हमारे नन्दू को बचाओ बापू वह लड़का है। उसने कुछ कसूर नहीं किया । छोड़ दो उसको दोहाई बापू की दोहाई पुलीस।"

रघु बाबू बोले—"आंप के लड़के पर कुछ जुलुम नहीं होगा। घबराइये मत। धीरज धरिये चिन्ता करने की बात इसमें कुछ नहीं है न कुछ डर की बात है। नन्दलाल हमारे साथ रहेगा।"

यही कहकर रघुबाबू ने उसकी हथकड़ी खुलवा दी । बुढ़िया का चित्त कुछ ठिकाने आया। घबराहट भी घटी। कहने लगी—"आहा रे ! भगवान तुम्हारी उम्र बड़ी करे । तुम युग युग जीओ। दूध पूत से फरे फूले रहो।"

रघुबाबू के कहे मुताबिक हेमाङ्गिनी अपनी मा को घर में ले गयी। वहां उसने खाट पर लेटा दिया।

दीनदयाल ने रघु बाबू से कहा—"अच्छी बात है। तो आप असामी के पास रहिये। वह आपके जिम्मे रहा। मैं एक बार जरा इस कमरे की तलाशी कर लेता हूं।" यही कह-कर वह प्रेमचन्द्र से साथ हेमाङ्गिनी के घर में घुस गया। तलाशी की गवाही में प्रेमचन्द्र तारिनी के मकान से बुलाये गये थे।

"अच्छा चलो मैं भी चलता हूं।" कहकर रघु बाबू भी उनके सङ्ग घुसे । इससे दीनदयाल भीतर से बहुत बिगड़ा

लेकिन कुछ कह नहीं सका। क्योंकि रघुवावू उसके ऊपर अफसर थे।

हेमाङ्गिनी के घर में एक छोटा सा लोहे का वक्स था। हेमाङ्गिनी ने चाभी से उसका ताला खोल दिया। रघुवावू ने अपने ही हाथ से उसकी चीज़ें उलट पुलट कर देखीं। और सवको वाहर लिवा ले गये। दीनदयाल हेमाङ्गिनी से दो एक बातें पूछने लगा था। लेकिन रघुवावू ने जरा रूखे होकर याद करा दिया कि वह स्त्री है। और उसके नाम का वारन्ट भी नहीं है।

अव रघु वावू ने हेमाङ्गिनी से कहा—"नन्दलाल को एक वार मेरे साथ थाने तक जाना होगा। तलाशी में कोई चीज़ नहीं मिली है। साहव से यह बात कहकर नन्दलाल छोड़ दिया जायगा आप लोग चिन्ता मत कीजिये।"

पुलीस के सव लोग नन्दलाल को लिये हुए चले गये। इधर गुलवी की गलादराज़ी शुरू हुई। वह सव को सुना कर कहने लगी "अहा! रे! यह वन्देमाता वन्देमाता कर के चौपट करते हैं सव। ऐसा भले आदमी का लड़का और वन्दे माता कह के इस तरह खराव हो रहा है। सरकार कम्पनी वहादुर के साथ में झगड़ा करने से कहीं किसी की भलाई हो सकती है भला?"

पड़ोसियों के साथ गुलवी भी हेमाङ्गिनी के घर में घुस कर उस को और उसकी मां को प्रवोध देने लगी। वोली, "कुछ परवा नहीं नन्दू वावू को छोड़ाने के वास्ते मैं दरोगा के पांव पड़ूंगी। कैसे नहीं छोड़ेंगे।"

बहुत बड़ी विपत आने पर आदमी शत्रु मित्र सब को भूल जाता है। हेमाङ्गिनी भी पहले की बातें भूल कर गुलबी का हाथ धर कर निवेदन करने लगी कि उसके भाई को छुड़ाने के लिये जहां तक बने करें।

महल्ले के नरहरि राय और गोविन्द घोषाल ने कहाः-
"सरकारी वकील राधावल्लभ बाबू चाहे तो इसी दम नन्द-लाल को छुड़ा सकता है। अगर वह पुलीस के बड़े साहब या मजिस्टर से जाकर कहता है कि नन्दलाल पर कुछ साखी सबूत नहीं हैं तो ऊ लोग इसी घड़ी उसको छोड़ने का हुक्म दे देंगे।

गुलबी बोली—"अरे अभी मैं जाती हूं राधावल्लभ बाबू के पांव पड़ूंगी। उनके हाथ में होगा तब कैसे नहीं करेंगे। नहीं करेंगे तो हूएं जान दे दूंगी कि हंसी खेल है। मैं जाती हूं अभी जाती हूं।"

यही कहकर गुलबी वहां से चली गयी। लेकिन उस दिन किसी के समझाने बुझाने पर भी हेमाङ्गिनी और उसकी मां ने जल तक ग्रहण नहीं किया।
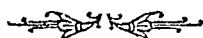
[२१]

स्वदेशी केस

नन्दलाल छोड़ा नहीं गया। लेकिन गुलबी रोज एक बार दीनदयाल के यहां एक बार राधावल्लभ के यहां फिर हेमा-ङ्गिनी के यहां दौड़ धूप करने लगी। एक दिन उसने हेमाङ्गिनी

से कहा—"का करें भाई हम से तो जहां तक बना किया है। राधावल्लभ बाबू आधी दूर तक राजी पर आगये हैं। लेकिन जबतक एक बेर तुम उनके यहां चल कर रोओ गिल गिलाओ-गी नहीं तब तक जान पड़ता है वह पुलीस के बड़े साहब को तुमारे भाई के वास्ते कुछ कहेंगे नहीं। कल्ह संझा के उनका पांव फिर पकड़ा तब बोले—"अरे तू तो गुलाब नन्द के वास्ते इतना रोती है लेकिन जिसका भाई है, उसको तो कुछ फिकर नहीं। जिसके भाई को बचाना है वह तो हमारे पास आकर कुछ नहीं कहती कि बचाओ या कुछ करो।" हम तो सच्ची कहें भाई हम बोल दिया कि काहे नहीं आवेगी। जरूर आवेगी। लेकिन आप बाबू बचन दें तो जरूर वह आवेगी। बस यही तो बात है भाई एतना हम कहकर के आये हैं। आगे अब तुम्हारे हाथ में बात है।"

हेमाङ्गिनी ने इसका जवाब तो नहीं दिया। मनमें कुछ सोचने लगी। गुलबी बोली—"तुम सोचती क्या हो बहन। कुछ चिन्ता मत करो राधा बाबू बोले हैं। तुम चल कर जहां कहोगी तहां नन्दू बाबू को वह झट छोड़ देंगे देर नहीं लगेगी।

हेमाङ्गिनी बोली—"अच्छा कल्ह मैं ठीक करके तुमसे कहूंगी। और चलना होगा तो तुम्हारेही साथ चलूंगी।" अब गुलबी के मन में भरोसा हो गया। वह उस दिन बिदा ले गयी।

हेमाङ्गिनी ने सुरेश को अपने भाई की गिरफ्तारी वाली बात लिख भेजी थी। यह बात आदि में पाठक पढ़ चुके हैं। सुरेश ने उस चिट्ठी को पाते हीं कलकत्ते के कई स्वदेशी नेताओं से भेट की। उन लोगों ने इस मुकदमे के लिये एक

देशी जूनियर वारिस्टर ठीक कर दिया। सुरेश वारिस्टर साहव को साथ लेकर कृष्णनगर पहुंचा! वहां वकील योगेश वावू ही के मकान पर वारिस्टर का डेरा कराया गया।

योगेश वावू नये वकील थे लेकिन उनकी वकालत धीरे धीरे वढ़ रही थी। लक्षणों से जान पड़ता था कि वह आगे चलकर इस रोजगार में वहां सव से वढ़ जायंगे।

योगेश वावू वड़े उद्योगी, परिश्रमी और साहसी थे। काम की मुस्तैदी देखकर सव लोग उनका सम्मान करते थे। मेधावी खूव थे। वोलने में वड़े तेज, वहस में वड़े विलक्षण और सुवक्ता थे। स्वदेशानुराग उनमें वहुत था। सर्व साधारण के हितकर कार्य्यों में वे वड़े उमङ्ग से शामिल होते थे। स्वदेशी युवकों की विपत देखकर उन्होंने आप इच्छा करके वह मुकदमा हाथ में लिया था। उसमें वहुत से काम और जरूरी तदवीरें वह अपने खर्च से करते थे। दो चार वकील, मुख़्तार और वहां के रईस भी ऐसे थे जो जहां तक वनता था उनकी सहायता करते थे।

सुरेश के कलकते से वारिस्टर लाने के कारण हेमाङ्गिनी और उसकी मा को भरोसा हो गया था कि मुक़दमा सुधर जायगा।

हेमाङ्गिनी ने सुरेश से रात को वह सव वातें कह दीं जो गुलवी कह गयी थीं। राधावल्लभ की पहली वातें और इस समय का उसका मतलव भी हेमाङ्गिनी ने कहा सव सुनने पर सुरेश का कलेजा कांप उठा। अव उसको इतना समझने में देर नहीं लगी कि नारकी राधावल्लभ और दारोगा दीनदयाल के चक्र से ही नन्दलाल असामी वनाया गया है।

खाने तलाशी के समय रघु बाबू का सब व्यवहार जब सुरेश ने सुना तब उसको उनमें बड़ी भक्ति हुई। मन में कहने लगा पुलीस में जहां दस पांच कटहे कुत्ते हैं वहां प्रजा को पालने और भले आदमियों की इज्जत बचाने वाले सज्जन और उपकारी अफसर भी मौजूद हैं। ऐसे ही साधु स्वभाव के पुलीस अहलकारों का फल है कि बुलन्द अकबाल बृटिश सरकार देश का सुशासन कर सकती है।

दूसरे दिन सुरेश योगेश बाबू के साथ थाने में गया और रघु बाबू से मिला। उनसे यह भी निवेदन किया कि सुपरिंटेंडेंट साहब से भेट कर के यह मामला सहज ही मिटा देनेकी कोशिश करने में ही मङ्गल है। रघु बाबू इस बातपर राज़ी हुए। उन्होंने कहा—"साहब अच्छे स्वभाव के सज्जन हैं। जब समझ जायँगे कि असामियों का उतना बड़ अपराध नहीं है तब भरोसा है केस विथड्रा (Case with draw) करने का हुक्म दे देंगे। खैर मैं इसके वास्ते कोशिश करता हूं। देखूँ।"

अपने दिये हुए वचन के अनुसार रघु बाबू दूसरेही दिन साहब से बंगले पर मिले। इस स्वदेशी मामले पर दोनों में देर तक बातें हुईं। लेकिन रघु बाबू की बात नहीं मानी गयी। साहब मुकद्दमा उठा लेने पर राजी नहीं हुए। वह कई बार इसके पहले रघु बाबू की बात मान कर बहुत सी कार्रवाइयां कर चुके थे। इस बार उनकी बात नहीं मानी गयी देखकर रघुबाबू को आश्चर्य्य हुआ। उनको यह नहीं मालूम था कि राधावल्लभ बाबू साहबों का पहले ही कान भर गये थे।

साहब ने रघु बाबू से कहा—"Badu! are you a

Swadeshi ?" रघु बाबू ने कबूल किया कि मैं "honest" स्वदेशी हूं। साहब हंस कर बोले —Yes Babu, honesty is the best policy even in Swadeshism "

रघु बाबू के कान में यह ताना बेध गया। लौट कर डेरे को चले गये। दूसरे दिन कचहरी में योगेश बाबू से उन्होंने कह दिया कि साहब मुकद्दमा उठा लेने पर राज़ी नहीं हुए।

बारिस्टर साहब ने असामियों को ज़मानत पर छोड़ने की अर्जी दी वह नामंजूर हो गयी।

ठीक समय पर इज़लास में मुक़द्दमा चलने लगा। स्वदेशी मुकद्दमा होने से चारों ओर धूम मच्च ही जाती है। इजलास पर देखने वालों की भीड़ होने लगी। राधावल्लभ बाबू सरकार की ओर से मुकद्दमे की पैरवी करने लगे। उनके बगल में बैठे हुए पुलिस सुपरिंटेराडेराट रोज मामले का हाल चाल लेने लगे। मुद्दई की ओर का प्रधान गवाह प्रेमचन्द कँड़ारी था। उसने बैरिस्टर की जिरह में एक तरह से कबूल ही कर लिया कि वह पुलिस का मुखबिर है। लेकिन मुखबिर होने से क्या सच्च नहीं कह सकता? इसी कारण हाकिम ने उसकी गवाही विश्वास करने के लायक मानली। पांच असामियों में से चार को दराड दिया गया। नन्दलाल को छः महीने की कड़ी कैद हुई।

राधावल्लभ और दीनदयाल की खुशी का ठिकाना नहीं रहा। डाही जिस पर डाह रखता है उसके दुःख पाने से डाही को एक तरह का वीभत्स आनन्द मिला करता है।
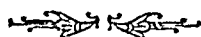
[२२]

उपाय ।

जज साहब के यहां अपील करने की सलाह देकर बैरिस्टर साहब चले गये । लेकिन अपील और हेमाङ्गिनी आदि के खर्च को रुपया चाहिये इस कारण उसके लिये सुरेश भी कलकत्ता चला गया ।

दूसरे दिन गुलबी हेमाङ्गिनी के घर पहुंची । दस्तूर मुताबिक उसके शोक सन्ताप में शामिल हुई । वह कई तरह से नन्दलाल की मा को भी प्रबोध देने लगी । उसने समझाया कि अपील में नन्दू बाबू छूट जायंगे । क्योंकि राधावल्लभ बाबू बोले हैं कि उन के ऊपर कुछ सबूत नहीं है ।

गुलबी जाती बेर हेमाङ्गिनी के कान में कहती गयी—"तुम्हारी ही वजह से बहन नन्दलाल को जेलखाना हुआ है लेकिन अब भी उपाय है ।"

हेमाङ्गिनी ने कुछ जवाब नहीं दिया । वह इस घटना से घबरा गयी थी । लेकिन अब गुलबी का ताना उसको तीर सा लगा ।

थोड़ा सोचने पर हेमाङ्गिनी ने समझ लिया कि राधावल्लभ की कामाग्नि में अपना सत स्वाहा नहीं कर सकी, इसी से प्रचण्ड कोपानल हो कर उसके निरपराध भाई को उसने ग्रस लिया है ।

हेमाङ्गिनी इस संसार में अपने भाई और मा को छोड़ कर और किसी को नहीं जानती थी । नन्दलाल के कैद हो जाने से मा के प्राण पर बीतेगी यह भी वह समझती थी । लेकिन

उपाय क्या है वह तो अपने भाई को छुड़ाने के लिये अपना सब सुख शान्ति यहां तक कि जान तक देने को तैयार है। भाई के लिये वह यह सब कर सकती है। गुलबी कह गयी थी कि अब भी उपाय है। लेकिन वह उपाय क्या है? हेमाङ्गिनी को यह समझना बाकी नहीं रहा कि वह खुद नरक में जाय तो उसके भाई की रिहाई हो जायगी और माता का भी प्राण बच जायगा। लेकिन इसी शरीर से जान बूझ कर नरक में प्रवेश करना तो जान देने से हजार गुना कठिन है।

हेमाङ्गिनी का मग़ज़ चकरा गया। तरह तरह के उलटे सीधे भाव और तरह तरह की चिन्ता से वह विचलित होने लगी।

कठिन विपत पड़ने पर जो सङ्गीन बुद्धि आती है। घनघोर मेघों की अंधियारी में वह भूले हुए मुसाफिर को चमकती हुई बिजली के समान रास्ता दिखा दिया करती है।

उस बेचारी अबला को भी रास्ता दीख पड़ा। गुलबी जो रास्ता दिखा गयी थी वह ठीक नहीं है हेमाङ्गिनी ने शैतान को धोखा देकर काम निकालना ठीक किया। राधावल्लभ ने शैतानी कर के उसके भाई को जेल दिलाया है। उस ने मन में यही ठान लिया कि शैतान से शैतानी करने में पाप नहीं होगा। लेकिन इसमें उसके नाम झूठा कलङ्क लग सकता है। कुछ परवाह नहीं उससे क्या होता है। जो सच्चा सोना है वह सोना है कञ्चन में काई नहीं लग सकती।
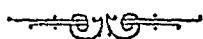
[२३]

स्वदेशी नेता ।

योगेश बाबू ने इस स्वदेशी मुकद्दमे की एक पूरी रिपोर्ट लिख कर कलकत्ते के एक प्रधान स्वदेशी दैनिक पत्र को भेज दी थी। उसी पत्र के सम्पादक यह राधावल्लभ के मित्र महाशय थे। सम्पादक जी जिले के बड़े बड़े वकील, अगड़-धत्तों को हाथ में रखते थे। वह समझ गये थे कि प्रख्यात पोलिटिकल नेता होने के लिये समाज के मुखपात्र और इन लोगों को हाथ में रखने की बड़ी जरूरत है। इस कारण न्याय और सत्य की हत्या कर के वह सदा अन्तःकरण से इसी रास्ते के मुसाफिर थे।

योगेश बाबू की वह रिपोर्ट उस अखबार में नहीं छपी। क्योंकि राधावल्लभ बाबू का जिरह जबाब उस में जिस तरह से उद्धृत किया गया था उस में स्वदेशी आन्दोलन पर हंसी उड़ायी गयी थी। उस के छपने से सम्पादक देवता के मित्र राधावल्लभ बाबू की बदनामी जाहिर होती।

योगेश बाबू की चिट्ठी पाकर सुरेश उस अखबार के आफ़िस में गया। सम्पादक देवता से मिलकर बोला—मैं कृष्ण नगर के वकील योगेश बाबू के लिखे मुताबिक आप से एक बात पूछने आया हूं। उन्होंने आप के पास एक स्वदेशी मुकद्दमे की रिपोर्ट भेजी थी। उस में कृष्ण नगर के चार स्वदेशी लड़कों को जेल हुई है। आपका कागज़ स्वदेशी आन्दोलन का मुख पत्र है इसी से उस में छपना उसका उचित जान कर भेजा था। वह पूछते हैं कि क्यों वह रिपोर्ट आप ने नहीं छापी ?"

सम्पादक ने जवाब दिया—"राधा बाबू हैं कृष्ण नगर के सब से बड़े लीडर। और वही इस मामले में सरकार की ओर से appear हुए थे। उस रिपोर्ट के पहुंचने पर हमारे यहाँ से राधावल्लभ बाबू को चिट्ठी गयी थी। उन्होंने इसके जवाब में हम लोगों को लिखा है कि इस मुकदमे में स्वदेशी का दाल में नमक बराबर भी सम्बन्ध नहीं है। न इनमें कुछ अविचार ही हुआ है। हम लोग उनकी बात पर विश्वास करते हैं इस कारण इसके छापने की जरूरत नहीं समझते।

अब सुरेश उस मुकदमें का आदि से अन्त तक सम्पादक जी को सुनाने लगा। कैसे राखी बन्धन के दिन चार स्वदेशी युवक गिरफ्तार हुए यह पहले कहा। फिर यह भी समझाया कि कैसे पीछे से राधावल्लभ बाबू ने दारोगा दीनदयाल से चक्र रचकर बेगुनाह नन्दलाल को जेल में ठेला है।

यह बातें जब सुरेश उनको सुनाने लगा तब सम्पादक जी धीरज छोड़कर उठ खड़े हुए। बोले "सुनिये साहब! राधावल्लभ बाबू कृष्ण नगर के सर्व श्रेष्ठ वकील और प्रधान Political leader हैं। उनके ऐसे आदमी की यह सब ग्लानि सुनने के लिये हम को फुरसत नहीं है।" घड़ी निकाल कर दिखलाते हुए बोले-" देखिये पांच बजे हम लोगों की कांग्रेस कमिटी की मीटिङ्ग है। अब पन्द्रह मिनट बाकी हैं अब माफ कीजिये। नाहक वक्त खोना ठीक नहीं।"

यह कहते हुए जर्रार सम्पादक देश के काम के लिये जल्दी से पांव उठाते हुए खटाखट नीचे उतर गये। वैसे स्वदेशी नेताओं का हर एक मिनट मूल्यवान होता है।

(२४)
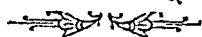
अभिनय ।

दो दिन पीछे गुलबी सवेरेही हेमाङ्गिनी से भेंट करने आयी। हेमाङ्गिनी ने उससे कहा—"मैंने बहुत सोच विचार कर देखलिया। अब राधावल्लभ बाबू के सिवाय दूसरा कोई हम लोगों को इस विपति से उबारनेवाला नहीं है। चलो गुलाब। मैं अभी इसी दम तुम्हारे साथ चलूंगी देखूंगी कि वह मेरे भाई को छोड़ा सकते हैं या नहीं ।

गुलबी ने चाहा कि पहले राधावल्लभ को खबर देकर तो सन्ध्या को ले चलें लेकिन चतुरा हेमाङ्गिनी ने उसका दाव नहीं चलने दिया। कहा-"नहीं मैं अभी इसी दम चलूंगी। जब तक उनके मुंह से भरोसा न मिले जल ग्रहण नहीं करूंगी"

निदान दूती श्री राधा को सङ्ग लेकर राधावल्लभ की टोह में चली। लेकिन अभिसार का समय सुभीते का नहीं हुआ, क्योंकि राधावल्लभ जीन जामा कसकर अपने मंजिल को जा रहे थे। या यों कहना चाहिये कि समला चोगा पहन कर श्री दाम सुदामा रूपी मवक्कल मुहर्रिर के साथ अदालत की चरागाह में जाने के लिये कदम उठा चुके थे कि हेमाङ्गिनी को साथ लिये हुए गुलबी आ धमकी। वह तो देखतेही अवाक हो गये कि यह क्या हुआ ? यह बेबादल के पानी किधर से आया।

गुलबी बोली—"लो बाबू! हेमाङ्गिनी आप के पास अपने भाई के लिये रोने गिल गिलाने आयी है। अब तो चाहे जैसे हो नन्दू बाबू को छोड़ाना ही होगा।

लेकिन हेमाङ्गिनी के मुंह पर रोना गिड़ गिड़ाना कुछ नहीं था। वह मुसकुराती हुई राधावल्लभ वाबू पर नयनों की कटारी चला रही थी। पाठक हेमाङ्गिनी की आज यह लज्जाशीलता की कमी और उसका अशिष्ट व्यवहार देखकर चौंकिये मत। नाटक के स्टेज पर जो अभिनय करने वाली एक्ट्रेस लज्जा के मारे सकुचाती है वह अपने काम में सफलता नहीं पा सकती। हेमाङ्गिनी आज अभिनय करने आयी थी। वह यहां कुल-लज्जा दिखाने या आंसू गिराने नहीं आयी न रोने गिड़ गिड़ाने की यहां जरूरत है। स्त्री को प्रेमिक के पास रोना होता है। चरित्रवान आदमी के सामने लज्जा दिखाना चाहिये। वाघ रीछ आदि जीव घाती जन्तुओं के आगे शिष्टाचार, भलमनसत या रोना सब बेकार है। पशु स्वभाव के शठ लम्पटों से हंसकर दांत दिखा कर भवें तानकर काम निकालना होता है, सो हेमाङ्गिनी जानती थी। इसके सिवाय उसको जिन्दगी में कभी लज्जाशीलता का अभ्यास नहीं हुआ। सदा हँसना उसका स्वभाव था। जिस स्त्रीके सुन्दर मोतियों के से दाँतों की पांति मुंह की शोभा वढ़ा रही है उस को मौके वे मौके सदा हंसने का एक रोग हो ही जाता है।

राधा वल्लभ को अकेले निशाकाल में स्वस्थिर हो कर हेमाङ्गिनी की यह हंसी देखने की अभिलाषा थी। इसी कारण गुलवी से वोले—"अब तो हम कचहरी जा रहे हैं गुलाव! तुम आज रात के लेकर आओ तो सुभीते से वात करेंगे। जल्दी में यह सब ठीक नहीं होगा।"

हेमाङ्गिनी बोली—" ना, ना, ! आप को अभी वचन देना होगा कि हमारे भाई को छुड़ा देंगे। विना इसके मैं छोड़ूंगी नहीं !

गुलबी बोली—" आप जब तक वचन नहीं देंगे तब तक हेमाङ्गिनी जल नहीं गरहन करेगी बाबू! कसम खाकर आयी है।"

" मेरा भाई छूट जाय तो मैं आप की खरीदी हुई लौंडी हो कर रहूंगी। आपही इस घड़ी हम लोगों के सब कुछ हैं। आपही के कारण हम लोगों पर यह विपद आयी है।"

इतना कहकर हेमाङ्गिनी ने तिरछे नयनों से फिर राधा वल्लभ की ओर ताक दिया। इस चोट के मारे राधावल्लभ व्याकुल होकर गिर गये।

उन्होंने कहा-" देखो हेमाङ्गिनी जब तुमने आकर पकड़ लिया तब तो यह काम मुझे करना ही होगा। तुम्हारी बात मैं कभी टाल सकता हूं? पहले तुम आकर मिली होती तो क्या तुम्हारे भाई को जेल होता?"

हेमाङ्गिनी बोली-"वह अपराध तो हमारा माफ करना होगा। गुलाब कई बार हमसे बोली रही लेकिन यहां आने में बड़ी लाज लगती थी इसी से नहीं आ सकी। इस के लिये अब हमारी पूरी सजा हो चुकी। अब तो मैं आयी हूं? अब से ही सही हम लोगों का मुंह आप देखिये। नहीं तो मैं अपनी जान यहीं दे दूंगी हां।' इतना कह कह फिर हेमाङ्गिनी मुसकरायी।

हम हेमाङ्गिनी के इस दँतनिपोर की स्निग्ध कौमुदी से उपमा न देकर तेज सूर्य्य की किरणों से समता देने की इच्छा करते हैं। क्योंकि इस से राधावल्लभ के हृदय से रोष और हिंसा का अन्धकार ही दूर नहीं हुआ वलिक नन्दलाल पर राधावल्लभ की कठोरता का ठिठुरा हुआ वरफ जो जमा पड़ा था उसको भी इसने गला दिया। चाहे जैसे हो नन्दलाल को कैद से छुड़ा देंगे यह वचन देकर हेमाङ्गिनी को उन्होंने विदा कर दिया। और कहा कि जल्द जज साहब के यहाँ अपील दायर कर दी जाय।

जाती वेर हेमाङ्गिनी कह गयी—"जब तक मेरा भाई जेल से रिहाई नहीं पावेगा तबतक मैं किसी को अपना यह काला मुँह नहीं दिखलाऊँगी।"
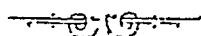
(२५)

अपील से रिहाई।

अपील के लिये योगेश वावू ने झट नकल की दरख्वास्त दे दी। राधावल्लभ वावू ने भी एक दिन वार लाइब्रेरी में उन के कानों के पास जाकर कह दिया कि—"जासूस प्रेमचन्द के सिवाय और कोई सुवूत नन्दलाल पर नहीं है। यह वात अपील के ग्राउण्ड में साफ तौर से लिखी रहे। और अपील की सुनवाई के समय इसी वात पर खूब जोर दिया जाय। क्योंकि इससे कम से कम एक असामी भी तो रिहाई पा जायगा।"

सातही दिन में अपील दाखिल हो गयी और दो सप्ताह के बाद एक दिन उस की सुनवाई होने लगी। योगेश बाबू ने ही असामियों की ओर से सवाल जवाब किया। उन्हों ने सब असामियों की सफाई करके जो कुछ कहना था वह कह दिया। जवाब में राधा बाबू केवल असामी नन्दलाल के वेगुनाह होने के सुबूत में जो बातें थीं उनको मान कर बोले- "हाँ इस असामी को रिहाई देने से न्यायविचार की मर्य्यादा रक्षा हो सकती है किन्तु और असामी बिलकुल गुनहगार हैं उनके ऊपर अकाट्य सुबूत मौजूद हैं।"

पेशी के तीन दिन बाद जज साहब ने फैसला सुना दिया। विधुभूषण और तीन और असामियों की सज़ा बहाल रही। और नन्दलाल की रिहाई हो गयी।

उसी दिन सूरज डूबने से पहले ही नन्दलाल जेल से घर लौट आया। खोयी हुई निधि पाने पर माता का आनन्दाश्रु बहने लगा। बड़ी धूमधाम से काली माई की पूजा हेमाङ्गिनी ने की और तार से सुरेश को नन्दलाल के छूटने की खबर दे दी गयी।

दूसरे दिन सुरेश कृष्ण नगर पहुंचा और कचहरी जाकर सब से पहले योगेश बाबू को धन्यवाद करके उसने कृतज्ञता प्रगट की। उस घड़ी योगेश बाबू गुलबी पानवाली की दूकान-दरबार पर हाथ में हुक्का लिये खड़े सुड़ सुड़ा रहे थे। बहुत आदमी उन से इसी स्वदेशी मामले की बातें कर रहे थे। नन्दलाल की अपील से रिहाई कराने के लिये सब में उनका बखान हो रहा था।

गुलवी सुनकर बोली-"हाँ जी हाँ! दुनियां का यही धन्धा है। लड़ता कौन है और नाम किसका होता है।" सुरेश को गुलवी की इस बात का अर्थ समझ में नहीं आया वहाँ से वह नन्दलाल के घर पर जाकर सब की खुशी में शामिल हुआ।

खा पी चुकने पर हेमाङ्गिनी ने अपना अभिसार कुछ बातों में जाहिर किया। और कुछ उपाय न देखकर वह कैसे गुलवी के साथ राधावल्लभ बाबू के यहाँ गयी थी। और कैसे राधा वल्लभ को चकमा देकर उसने भाई को छुड़ाया है सब थोड़े में बतला दिया। तब सुरेश को गुलवी की बात समझ में आगयी। सुरेश ने कहा-"तुम ने तो बड़ा बुरा साहस किया था बहन! राधावल्लभ जब समझ लेगा कि तुम ने उसको धोखा दिया है तब वह क्रोध के मारे जल उठेगा और तुम लोगों पर बहुत ही आफत विपत डालेगा। इस लिये अब तुम लोगों को यहाँ एक दिन भी रहना नहीं चाहिये।

दूसरे दिन सबेरे हो सुरेश नन्दलाल वगैरः को लेकर कलकत्ता भाग आया। गुलबी जब राधा वल्लभ का नेवता लेकर वहाँ गयी तब देखती है तो पंछी पिंजड़ा छोड़कर भाग गया है। वह उलटा वापस गयी और तुरंत जाकर राधा-वल्लभ से कहा कि शिकार तो हाथ से निकल गया। राधा-वल्लभ ने सुनते ही कपार पीटा कहा—"ओः हो! इसने तो बेतरह ठगा हम को।"
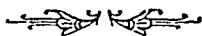
(२६)

नवीन वनाम प्रवीण ।

नन्दलाल अपनी मा और वहन के साथ सुरेश वाले बोर्डिङ्ग के पासही एक छोटा सा मकान किराये पर लेकर ठहरा और नौकरी की खोज में चारों ओर घूमने लगा। उसी से मामा पञ्चानन वावू ने सुना कि विधुभूषण कृष्ण नगर की जेल में है।

जेलखाने पर पाँचू वावू की बड़ी घृणा थी। अलीपुर जेल के डाकृर रजनी वावू उनके मित्र थे। पहले रजनी बाबू के साथ पांचू मामा एक दिन जेल देखने गये थे। तब से वह कहा करते थे "जेल के लुहार खाने में निर्दयता की निहाई पर निर्यातन की हथौड़ी से पीट पीट कर कैदियो का दिल फौलाद किया जाता है।" असल में उसी नरक में नारकियों का गठन होता है।

एक दिन रजनी वावू ने पाँचू मामा से कहा—"कृष्ण नगर जेल से विधुभूषण नाम का एक स्वदेशी कैदी अलीपुर जेल में आया है।" पञ्चानन ने उनसे कहा—"मैं विधुभूषण को पहचानता हूं। वह एक पढ़ा लिखा शिक्षित छोकड़ा है लेकिन उसका मग़ज़ कुछ फिरा हुआ है वह है वड़े उद्धत स्वभाव का। उस से मैं चाहता हूं कि एक दिन भेट करूँ।

पञ्चानन ने कई किताबों में रूस के कैदखानों का भीषण वर्णन पढा था। कि वहाँ निहलिष्ट कैदियों को लोहे की साँकल में कसकर किस तरह सुनसान अन्धकार कोठरी में अकेले कठोर यातना में रखा जाता है। इस देश में स्वदेशी कैदि-

यों को कैसे रखते हैं यही देखने के लिये पाँचू बाबू ने अलीपुर जेल में विधु भूषण से भेंट करने का इरादा किया।

रजनी बाबू ने उन को साथ लेजाकर एक दिन विधुभूषण से मिला दिया। उसने प्रणाम करके पाँचू मामा का चरण रज माथे चढ़ाया। उस को कैदी के वेष में देख कर पाँचू के, मन में दुःख हुआ। पूछा—"कैसे हो विधुभूषण।

वि०—मैं तो बहुत अच्छी तरह से हूं। मुझे कुछ तक-लीफ नहीं है।

प०—तुम ने हाईकोर्ट में मोशन किया था?

वि०—नाः।

प०—क्यों नहीं किया? मोशन में तो तुम रिहाई भी पा सकते थे?

मुसकुरा कर विधुभूषण बोला—"अगर सब लोग हाई-कोर्ट में मोशन कर के रिहाई पाने की कोशिश किया करें तो स्वदेशी के लिये कैद कौन काटेगा?"

प०—क्यों! क्या जेल काटे बिना स्वदेशी नहीं होता।

वि०—सीधे सादे स्वदेशी में जेल काटने की जरूरत नहीं होती लेकिन जिसको स्वदेशी का रास्ता धरकर स्वराज्य में पहुंचना होगा उसको जेलखाना ही के भीतर से जाना होगा। उस के लिये दूसरा रास्ता नहीं है।

प०—जेलखाना तो नरक है।

वि०—स्वर्ग के रास्ते पर युधिष्ठिर को भी नरक का दर्शन करना पड़ा था।

पञ्चानन ने समझा कि विधुभूषण के मग़ज में जो स्वदेशी भाव आदि से अण्डकार वना हुआ था वह कारादण्ड की चोट से फट गया है। उस में से अव स्वराज्य का वछड़ा पैदा हुआ है। वह जानते थे कि आदमी सताया जाने पर जिस सिद्धान्त पर पहुंचता है वह उस के मन से सहज ही नहीं हटता।

इस कारण पञ्चानन ने स्वदेशी और स्वराज्य की वहस छोड़ कर कहा—"विधुभूषण! तुम को क्या यह विश्वास है कि वेकसूर तुमको जेल हुआ है?"

वि०--नहीं, नहीं! मैंने अपराध किया था, राखीवन्धन के दिन मैंने कृष्ण नगर के नटवर विश्वास के घर रसोई वन्द करने के लिये जवरदस्ती की थी। कानून से जरूर यह अपराध है। मुझे वे कसूर दण्ड नहीं मिला है।

प०--हर एक को अपने खास काम में स्वाधीनता है। अपनी रसोई में नटवर विश्वास भी स्वाधीन था। तव मुक्तिमार्ग के यात्री हो कर भी तुम ने उस की स्वाधीनता में क्यों हाथ डाला। पढ़े लिखे शिक्षित हो कर तुम ने ऐसा अनुचित काम क्यों किया?

वि०--स्वदेशी के लिये मैं जेल जाने को तैयार हूं इस को सावित करना ही मेरा मतलव था। मैं Martyr * होने की अभिलाषा रखता था।

प०-वाह! तुम स्वदेशवासी पर ज़ुल्म कर के martyr-

* शहीद।

dom पाओगे ? यह तुम्हारा कैसा स्वदेशी है ? इस पागल पने के लिये तुम को अनुताप नहीं होता ?

इस से विधुभूषण के दिल पर कुछ चोट लगी। वह कुछ गर्म होकर बोला--

"पाँचू मामा आप अगर फिर से स्वदेशी युवक होकर जन्म ले सकें तो हम लोगों के मन का भाव समझ सकेंगे। भगवान ने हम लोगों में क्षत्रियवृत्ति प्रबल करा दी है लेकिन उस वृत्ति को पूरा करने के लिये उपाय नहीं है। भूतल में सब सभ्यदेशों के स्वदेशभक्त शिक्षित युवक देश के लिये, साम्राज्य के निमित्त रणभूमि में प्राण देने का अधिकार पाते हैं। और उसे दे कर वे लोग राज-सन्मान पाते हैं। हम लोग बङ्गाली होने के कारण उस अधिकार से वञ्चित हैं। * और खून के जोश से हम लोग भूल कर अपनी शक्तिऔर सामर्थ्य को दूसरे रास्ते पर ले चलें तो क्या इस में सोलहो आने हमी लोग गुनहगार होंगे ?"

अब विधुभूषण की बात से पाँचू मामा को कुछ सोचना पड़ा। वह कुछ चिन्ता कर के बोले--

"अच्छा विधुभूषण ? अफसर लोग हुक्म दें तो तुम सैनिक होने को राजी हो ?

वि०--हां, हां ! जरूर।

प०--जिन शिक्षित युवकों के जी में तनिक भी द्रोही भाव है उनको सैनिक होने देना उचित है या नहीं यह एक टेढ़ा सवाल है। इस को तो अफसर लोग हल करेंगे। लेकिन

* उस समय बंगाली सैनिक नहीं हो सकते थे।

विधुभूषण ! मैं इस बारे में तुम से दो एक बातें पूछना चाहता हूं। भरोसा है तुम सच्ची बात बतलाओगे अपने मन का भाव छिपाओगे नहीं।

वि०—आप पूछिये जहां तक जो कुछ मुझे मालूम है आप की बातों का मैं ठीक ठीक जवाब दूंगा।

प०—यह तुम मानते हो न कि सैनिकों पर कितनी बड़ी जवाबदेही है ?

वि०—हां, जरूर !

प०—और सैनिकों को पग पग पर अपने अफ़सर का हुक्म मानकर चलना होता है यह भी तुम जानते ही हो ?

वि०—हां जानता हूं।

प०—आज अगर गवर्नमेण्ट तुम्हारे ऐसे पांच सौ या हजार शिक्षित बङ्गाली युवकों को (Experiment) परीक्षा के लिये पल्टन में भरती होने का अधिकार दे देवे तो तुम लोग फौजी उहदों की सब जवाबदेही लेकर पल्टन के सब (Discipline) कायदे और सिलसिले से चल सकोगे ?

वि०—जरूर चल सकेंगे।

प०—साम्राज्य को जब काम पड़ेगा तब आज्ञा पाकर तुम लोग बाहरी शत्रुओं से जान रहते तक लड़ सकोगे ?

वि०—हाँ, हाँ जरूर।

प०—अच्छी बात है। अब तुम यह देखो कि बाहरी दुश्मनों से बचाना जैसा सैनिक का अवश्य कर्त्तव्य है। देश में जब अन्तर्विप्लव हो तब उसको दबाना भी वैसा ही उचित

कर्त्तव्य है। तुम लोग सैनिक होकर जरूरत पड़ने पर वैसा कर सकते हो?

इसका विधुभूषण ने कुछ जवाब नहीं दिया। पञ्चानन ने कहा—"बोलो विधुभूषण! जवाब दो। तुमने भीतर का भाव न छिपाकर ठीक जवाब देने का वचन दिया था उसको मत भूलो।"

वि०—अगर हम लोगों पर प्रजाविद्रोह दबाने का हुंक्म हो। और हम लोग उसको न करें तब?

प०—सम्राट के सैनिक हो तब ऐसा करने को तुम वाध्य हो। नहीं करने से तुम पर बलवा करने का अपराध लगेगा। जो लोग बलवा करते हैं कोर्टमार्शल से रणक्षेत्र में ही उसी दम उनको प्राणदण्ड तक हो सकता है। तुम्हारे ऐसे मुट्ठी भर बङ्गाली सैनिकों का कोर्टमार्शल करने में बहुत देर नहीं लगेगी। छिः छिः विधुभूषण तुम हमारे ही सामने पास नहीं हुए। देखो हृदय में पाप या बुरा भाव रखकर सैनिक होने की अभिलाषा हरगिज मत करना। म्यूटिनी करने से यह सुविशाल बृटिश साम्राज्य नष्ट नहीं होगा। सन १८५७ ई० में इस देश में अङ्गरेजी राज उतनी मजबूती पर नहीं पहुंच सका था। लेकिन उस समय के भीषण सिपाही विद्रोह से भी यह साम्राज्य नष्ट नहीं हुआ। म्यूटिनी होती है Brainless riot of the soldiery. इससे बड़े बड़े आधुनिक साम्राज्य हिल नहीं सकते।

विधुभूषण कान देकर यह सब सुन रहा था। पाँचू मामा बोले—

"आयलैंण्ड और दक्षिण अफरीका की कुछ प्रजा में द्रोही-भाव छिपा हुआ ज़ान पड़ता है। अगर किसी दिन वहाँ की पागल प्रजा अन्तर्विप्लव करे तो देखना वहाँ की वालण्टियर सेना ही राजा का हुक्म पाकर सब से पहले उसे विप्लव को दवाने के लिये आगे वढ़ेगी। और उसी से वह प्रजाविद्रोह झट दूर हो जायगा। रूस के निहलिष्ट लोग म्यूटिनी का बुरा इरादा रखकर कभी कभी सेना में भरती होते थे। एक वार कुछ निहलिष्ट युवक गोलन्दाज सैन्य वनकर राजप्रासाद के सामने तोप लिये हुए कवायद करते थे। जव सम्राट सामने आकर जंगले पर खड़े हुए तव उन लोगों ने उनको निशाना करके फैर किया। ईश्वर की कृपा से सम्राट तो वच गये लेकिन निहलिष्टों को म्यूटिनी के अपराध में प्राणदण्ड हुआ।"

अन्त का पञ्चानन वावू वोले—"सुनो विधुभूषण! जव तक तुम लोगों के मन में सम्राट पर यथार्थ भक्ति और साम्राज्य में अनुरक्ति न हो तव तक तुम लोग हरगिज़ सैनिक होने का इरादा नहीं करना। नहीं तो महापातक होगा।"

इसके वाद जेल में स्वदेशी कैदी कैसे रखे जाते हैं। यह सव विधुभूषण से पूछने पर मालूम हुआ कि रूस के कैदखाने को अगर नरक कहें तो इस देश का कैदखाना उसकी तुलना में स्वर्ग है। यहाँ कैदी को वेदर्दी से शासन करने के लिये knout * नहीं है न wheel-barrow है। यहाँ वेदर्दी से कैदी नहीं पीसे जाते इस कारण उनको भूखों रहकर hunger strike आत्मघात की कोशिश नहीं करना पड़ती।

* एक तरह की चमड़े की चिपटी चावुक।

(२७)

झूमन ।

पढ़ा लिखा होने के कारण विधुभूषण को जेल में प्रूफ रीडर का काम मिला था। वह रोज वहाँ सब दरजे के कैदियों की दशा अच्छी तरह देखता भालता था।

विधुभूषण ने देखा तो वहाँ समाज के नीचे दरजे के पशु स्वभाव वाले ही बहुत हैं। वे सब घोर अज्ञान की अन्धेरी सौरी में जन्म लेकर दारुण दुःख और दुर्दशा की गोद में पलते हुए बच्चे से बड़े होते हैं। इन अभागों का एक बड़ा पराक्रमी मालिक था जो कहिये वह है अभाव। उसके मारे दुनिया का ऐसा कोई काम नहीं है जिसको वह न कर सकते हों? और वही सब करने से वे बाँधे जाते हैं।

जेल के डाक्टर रजनी बाबू प्रायः रोज़ ही विधुभूषण की ख़बर लेते थे। वह एक दिन एक बालक कैदी को विधुभूषण के पास ले गये। उसका नाम झूमन था। उम्र बारह तेरह बरस की रही होगी। पहला कसूर होने के कारण वह रिफा- मेंटरी में रखा गया था। इस बार जेब काटने के कसूर में तीन महीने को कैद किया गया। इस गुण में वह बड़ा पक्का था।

विधुभूषण ने कहा—"इन जेबकटों की आँखों में रसा- ञ्जन होता है उसी से ये चालाक लोगों के जेब में छिपे हुए रुपये अशरफ़ी पैसे सब साफ़ देख लेते हैं।" रजनी बाबू ने कहा—"मैं तो समझता हूँ सोना चांदी या तांबा से कोई खास गन्धि निकलती है जो इन कुत्तों की नाक में महक जाती है।"

झूमन का ढङ्ग ढांचा देखकर विधुभूषण ने समझ लिया कि वह बड़ा धूर्त्त लड़का है । वह अपनी मां का नाम तो बतला देता था लेकिन बाप कौन है सो कुछ नहीं जानता था। मछलियों की मां के समान इन लोगों की मां जन्म देकर ही अलग हो जाती है। जलाशयों की कीट काई और मैल चैल खाकर ये बच्चे पलते बढ़ते है। झूमन की तरह के बच्चे भी समाज सरोवर में लात घूसा और झाड़ू झांटा खाकर जीते बढ़ते रहते हैं। वे लोग किसी के घर में घुसें तो अनधिकार प्रवेश होता है। इसी लिये ये सरकार कम्पनी के सदर रास्ते पर दिन रात रहा करते हैं। सरकारी रास्तों पर मदाखलत बेजा नहीं होती इसीलिये सड़कें इनका घर द्वार है । लेकिन इनमें जो कभी कभी जेलखानों की मेहमानी कर आते हैं। वह मुफ्त का सरकारी भात बिगाड़ने और जेल में राज भोग ही करने की गरज़ से जाते हैं। जेलखाने में झूमन से विधुभूषण की अच्छी गठ गयी। वह उनका पांव दबा देता था। और विधुभूषण भी अपने खाने में से कुछ कुछ झूमन को खिला दिया करता था। जेल में बीड़ी की सख्त मनाही होने पर भी झूमन न जानें कहां से लाकर हाजिर करता था। लेकिन विधुभूषण पानबीड़ी नहीं पीता था इस कारण झूमन ही सब भोग करता और भकाभक उड़ा जाता था। झूमन की वहां सब शरारत शैतानी देखकर विधुभूषण हंसता और कहा करता था—"देखो झूमन अब जेल से छूटकर जाना तो यह सब जेब ओब काटने का काम छोड़कर किसी बीड़ीवाले की दुकान में नौकरी कर लेना।

[२८]

स्वराजिष्ट शिरोमणि ।

एक दिन सन्ध्या [बङ्गला के दैनिक समाचार] पत्र के कार्यालय में एक बड़े शिखासूत्र वाले निष्ठावान ब्राह्मण से बातें हो रही थीं। सब लोग उनको शिरोमणि स्वामी कहा करते थे।

वह शिरोमणि सन्ध्या आफिस के एक अलग कमरे में रहते थे। अनेक स्वदेशी सभाओं में स्पीच दिया करते थे। और अपने को एक स्वराज्यवादी कहा करते थे। वह उस दिन पञ्चानन बाबू से यही विस्तार कर के बतला रहे थे कि अगले दिन उन्होंने एक स्वदेशी सभा में स्पीच देते हुए हिन्दू मुसलमानों की एकता फैलाने के लिये क्या क्या कहा था। इसी समय मौलवी लियाकत हुसैन ने उनको वहां आ पकड़ा। कहा कि आज ही सन्ध्या के गोलदिग्घी में उनकी एक स्वदेशी सभा होगी। उस में उनको स्पीच देना होगी। जब शिरोमणि ने उनका नेवता मान लिया तब लियाकत हुसैन खुश होकर वहाँ से चले गये।

मौलवी लियाकत हुसैन के जाते ही शिरोमणि झुंझला कर उठे और कमरे में पानी का जो घड़ा रखा था उसे बाहर ले जाकर पटक दिया। ऐसा मालूम हुआ कि मौलवी साहब के उस कमरे में आने से ही उस घड़े की जाति मारी गयी थी।

घड़ा फोड़ना देखकर पञ्चानन हँसे। बोले--"आप को तो देखता हूं स्वराज्य मिलने में अब देर ही नहीं है।"

इसी समय विधुभूषण ने वहां पहुंच कर पांचू मामा को प्रणाम किया उस को अगले दिन कैदखाने से रिहाई मिली थी।

विधुभूषण को गेरुआ पहने देखकर पांचू मामा अकचकाये। उन्होंने कहा—"अरे! विधुभूषण! तुम क्या जेल से निकल कर संसार त्यागी संन्यासी हुए हो?"

वि०—संसार मेरे पास था कब जो अब संसारत्यागी बनूंगा।

प०--तब यह रूप क्यों लिया?

वि०--कुछ दिनों तक मैंने अभी हरिद्वार के एक मठ में रहते का ठीक किया है।

प०--मठ में रहकर क्या करोगे?

वि०--देश का कुछ काम करने का इरादा है।

प०—क्या गेरुआ पहनकर मठ में रहे बिना देश का काम नहीं किया जाता?

वि०--बात यह कि धोती कमीज पहन कर सुसराल जाना होता है और कोट पतलून पहन कर तो होता है आफिस जाना। लेकिन गेरुआ पहने बिना सर्वत्यागी हो कर देश का काम करना नहीं चलता। आप ने तो मामा जी! आनन्द का मठ पढ़ा ही है। कहिये सन्तान गेरुआ पहन कर संन्यासी नहीं होते तो वह सब काम कर सकते थे।

प०—आनन्द मठ के सन्तान सम्प्रदाय वालों ने एक साधारण गोलमाल कर दिया था उनकी कोशिश पूरी कहां हुई थी। देखो विधुभूषण! इस बीसवीं सदी के बेतार के

(Wireless) तार तथा स्टीम एन्जिन और हाइटजर तोप के सामने आनन्द हो चाहे निरानन्द हो किसी मठ के स्वामी संन्यासी पल भर भी नहीं ठहर सकेंगे।

संन्यासी और गेरुआ * पर पञ्चानन वाबू को बड़ी ही घृणा थी। इस से उस की वात पर 'सन्ध्या' सम्पादक से उनकी बड़ी मुंड़चुथौअल क्या खासा वाक्‌युद्ध हो जाया करता था।

पञ्चानन वावू को विश्वास हो गया था कि मठों के साधू संन्यासी समाज रूपी ववूल पर अकास वौर या समाज देह के शरीर पर इल्ला (मसा) के समान हैं। ये अवलम्ब देने वाले की देह का रस चूस चूस कर पुष्ट होते हैं।

पञ्चानन समझते थे कि मानव समाज को वालकपन में उस का पशुत्व दवा कर देवत्व जगाने के लिये मठ की जरूरत होती है लेकिन समाज अव नावालिग नहीं, वह अव सयाना हो चुका है। इस सयानेपन में ये सव समाज के लिये वढ़े हुए निकम्मे नाखून ही नहीं वल्कि हानिकारी हैं। वह देखते थे कि त्याग और धर्म्म का रूप धरकर आज कल के संन्यासियों में तरह तरह के भोग और अधर्म आकर उनका जीवन कलुषित कर देते हैं। विलास आलस्य, नशा और छिपी निकृष्ट इन्द्रियवासना पूरी करना वह साधारण संन्यासियों के जीवन में वरावर देखते थे। इस देश में प्राचीन वौद्ध संघ अन्त को कहां तक पापतीर्थ हो गये थे यह सव पुरावृत्त इतिहास पढ़कर वह अच्छी तरह समझ गये थे।

---

* गुरू और गेरूआ का पूरा हाल गोवर गणेश में देखिये। मूल्य ॥-) मिलने का पता—मैनेजर जासूस गहमर (गाज़ीपुर)

इसी कारण पञ्चानन ने विधुभूषण से गेरुआ और संन्यास धर्म की वहुत कुछ वहस के बाद कहा—"देखो विधुभूषण गेरुआवालों का टोटल तो वढाइयो मत। हां अगर देश का काम करना चाहते हो तो गेरुआ छोड़ो सादे ही कपड़े लत्ते पहन कर तुम को जो करना हो करो। इस घड़ी हमारे अनगिनित युवकों को ज्ञानविज्ञान सीखने के लिये हिन्दुस्तान से बाहर देशों में जाना होगा। इन को अव गेरुआ का रास्ता मत दिखाओ विधुभूषण! दोहाई देता हूं तुम्हारी।"

इतना सुनकर शिरोमणि जी वोले—"आप तो पञ्चानन वावू! गेरुआ वालों पर लाठी ही लिये रहते हैं। गेरुआ ने आप का क्या अपराध किया है? यह गेरुआ त्याग मार्ग का निशान है। त्याग मार्ग ही परमुक्ति है। और भोग के रास्ते में वन्धन मिलता है। भारतवासी को विद्या और आदर्श खोजने के लिये पराये देश में जाने की जरूरत नहीं होगी। यहाँ की जो प्राचीन श्रेष्ठ सभ्यता है उस को आप भूल क्यों जाते हैं। पश्चिमी जाति विज्ञान के वल से जो नहीं कर सकेगी वह भारतवासी योगवल से करने की शक्ति पावेंगे। ब्रह्मविद्या के साथ कभी पाश्चात्य विद्या की वरावरी हो सकती है?"

पञ्चानन वावू ने कहा—"हिन्दुस्तान की विशेषता और प्राचीन सभ्यता को मैं इनकार नहीं करता। यह भी मैं मानता हूं कि वर्तमान काल, वीते हुए का उत्तराधिकारी है। पुराने के आगे नये को सदा ऋणी रहना होता है। लेकिन वह ऋण उतने ही के लिये है जितना उस से पाया गया है। वहुत

प्राचीन काल का समाज हमारे आजकल के समाज का आदर्श नहीं हो सकता। जो तरकारी मानधाता के अमल में बनती रही उसको आज खाने से भरी होने लगेगी। जो कपड़े मैं लड़कपन में पहनता था वह अब छोटा हो गया है। उसको खींच खांच कर आज पहन लूं तो लोग जरूर हंसेंगे। बीते हुए युग को पकड़ लाकर वर्त्तमान के कन्धे पर चढ़ाने से भी ऐसाही होगा। हम लोगों के आजा के आजा जो चरणामृत भक्ति से पाते थे उसके एक एक बूंद में भी हम लोगों ने दूरबीन से रोग के कीटाणु देख सकने का अधिकार पाया है।

उस युग की अन्धभक्ति की सामग्रियाँ इस युग में वैज्ञानिक गवेषणा का सामान हो गयी हैं, इसको इनकार करने से अब नहीं चल सकता।"

शिरोमणि ने कहा—"इस युग के विज्ञान की दौड़ बहुत थोड़ी दूर तक है। आप का विज्ञान हम लोगों के योग और मंत्र शक्ति से बहुत पीछे है। महात्माओं की दी हुई एक एक तावीज़ों में जो अलौकिक गुण रहते हैं उनका इस युग का विज्ञान ध्यान भी नहीं कर सकता।

पञ्चानन ने कहा—"आज कल की पाश्चात्य जागृति के पहले यूरप के लोग टोना टमना, मंत्र यंत्र और दुआ तवीज ही में मस्त रहते थे। उन दिनों यूरप में चारों ओर बेशुमार मोनास्टरी वा मठ थे। उन मठों के संन्यासी 'मस्क' कहलाते थे। समाज के लोगों की उन में बड़ी ही श्रद्धा भक्ति थी। लोग उनकी बातों पर आंख मूंदकर विश्वास करते और चलते

थे। अब रूस के सिवाय और सब जगहों से अन्धविश्वास का बीत गया है। लेकिन भारतवर्ष में अभी वह दकयानूसी युग पूरी मात्रा में मौजूद है। इसी से कहता हूं कि अभी हम लोगों के जागने में देर है।"

इस वादविवाद का अन्त नहीं हुआ। पञ्चानन और शिरोमणि दोनों थककर चुप हो रहे। विधुभूषण उस दिन सन्ध्या आफ़िस में ही रह कर दूसरे दिन जहां जाना था वहां चले गये।

कर्म्ममार्ग

दूसरा भाग ।

[१]

बाबू काशीनाथ बसु ।
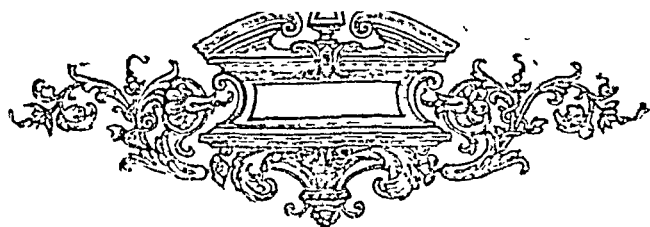
राजधानी कलकत्ते की एक हिसाब से एक बड़े वन की बराबरी की जा सकती है । उस वन में अनगिनित प्रकार के जीव जन्तु बसते हैं । यहां नराकार स्यार कुत्ते से लेकर दुगोड़े साँड़ सिंह तक सब घूमा करते हैं ।

इनमें से बागबाजार के काशीनाथ बाबू किस दरजे के जीव हैं यह हम नहीं कह सकते । इनका परिचय होने पर पाठक आप ही ठीक कर लेंगे ।

काशीनाथ बाबू एक खान्दानी बड़े आदमी हैं । चेहरा और मिज़ाज आप का वैसाही है । उम्र पचपन बरस की होगी । हिन्दू स्कूल के थर्ड क्लास तक उन्हों ने पढ़ा था । इस कारण

उनको मूर्ख कहना तो बनेगा नहीं। उनकी बैठक में पाँच आलमारियाँ पुस्तकों से भरी रखी थीं। उनमें से शब्द कल्पद्रुम कालीसिंह का महाभारत, वेवर्ली नावल तक थे, उसी कमरे में उनका एक कद्दे आदम आयल पेंटिङ्ग चित्र था। उसमें वह चोगा चपकन और सम्हला पहने हुए गार्ड चेन लटकाये हाथ में पुस्तक लिये खड़े थे। उस तस्वीर के देखने से मालूम होता था कि काशीनाथ एक पढ़े लिखे ऊँचे दरजे के जेण्टलमेन हैं।

जिस उम्र की वह तस्वीर थी उस समय काशी बाबू के सरीर में बड़ी फुर्ती थी। उन दिनों शहर में बढ़िया सुन्दरी रखे बिना कोई बड़े आदमियों में नहीं गिना जाता था।

इसके लिये काशीनाथ बाबू को दमदमा के बगीचे में एक अविद्या मन्दिर बनाना पड़ा था।

वहाँ अठवाड़े में वह एक दिन यारों की खासी ढलौअल करते थे। केलनर के यहाँ से ग्रीन सील और क्लारेट के केस आते थे। बहुतेरे पियक्कड़ यार मँड़राते हुए वहाँ पहुँच कर पार्टी की शोभा बढ़ाया करते थे। उन जवानों में पाँचवें सवार होने के लिये काशीनाथ बाबू को हर हफ्ते में सींग तुड़ाकर खासा बछड़ा बनना होता था। प्रति सप्ताह दो दिन सन से भी धपधपाते उजले बालों में काला खिजाब पोतकर उनको अपने मुख मण्डल की सफेदी-पर कालिख लगाना पड़ता था।

काशी बाबू को गाने बजाने का शौक लड़कपन से था। तबला और पखावज बजाने में वह बड़े पक्के थे। जब ध्रुपद का ताल ठोंकते हुए पखावज पर थाप मार कर गिटकिरी छोड़ते तब धूर करके मूंड़ी झाँटते हुए आँखे तरेर कर कहते

थे कि वड़ा खर्च कर के उस्ताद रखकर तो यह हुन्नर पाया है। कोदो देकर नहीं सीखा।"

उम्र गिरने पर काशी वावू के कुछ कर्जा हो गया था। लेकिन उस कर्जे से वह डरते नहीं थे। कहा करते थे कि वड़े आदमियों ही को तो कर्जा मिल सकता है। ऐसा तो कोई भी वड़ा आदमी शहर में नहीं दिखाई देता जिसको जगह जायदाद है और उसको कर्जा नहीं अगर कर्जा न तो वह वड़ा आदमी काहे का वनिया है।

काशी वावू के भीतर धर्म्म—विश्वास था। वह फलित ज्यौतिष और तन्त्र में आस्था रखते थे। एकवार उन्होंने वहुत खर्च करके एक संन्यासी से वशीकरण कराया था। जव उस से ठीक फल उनको मिल गया तभी से तांत्रिक अनुष्ठान पर उन का सोलहो आगे विश्वास हो गया था।

दहने हाथ में काशी वावू ने सोने की एक विजायट पहन रखी थी उसमें कवच था। हर रोज स्नान करने पर वायें हाथ से एक चिल्लू जल लेकर उस विजायठ से छुलाते और उसे पीकर तो आगे कदम बढ़ाते थे। खानदानी वड़े आदमियों को यह सव विश्वास रहना चाहिये।

काशी वावू अपने नौकरों का असल नाम छोड़कर उनके ज़िलों के नाम से पुकारा करते थे। इस तरह सव के नामों की फजीहत थी। उनका एक गुमास्ता वर्दवान जिले का था। उसको वर्दवानी कहा करते थे। एक मोटी थलथलही लौंड़ी थी जिसका मकान था भागलपुर उसका नाम भागलपुरिया मोटकरी पड़ा था। माली था कटक जिले का उसको कटकी भेड़ा कहा करते थे। एक नौकर मुंगेर जिले का था। कद का

छोटा होने से मुंगेरी मटका कहकर पुकारते थे। इन मीठे तकार तुकारों से उनके नौकर चाकर उनपर बड़े ही खुश रहते थे। ऊपर से लप्पड़ झप्पड़, ठोसा थप्पड़ देकर उन्हें और खुश करते थे।

तोहफा लजभड़ और वादरेशन ये तीन शब्द काशी वाबू की वातों में चावल दाल थे। इनका वह वहुत व्यवहार किया करते थे। ब्राम्हण या गुरू पुरोहित में वह चलनसार भक्ति रखते थे। जब वे लोग आशीर्वाद करने आते तब नीचे सिर तो नहीं करते थे अलबत्ते हाथ कपारपर लेजाकर वह प्रणाम कर सकते थे। और उनको रुपया अधेलीया चौअन्नी दुअन्नी नकद ही देकर विदा कर देते और कहते थे कि खान्दानी आदमी को यह सब वादरेशन सहना ही पड़ता है।

काशी वाबू केवल गुरू ही पुरोहितों पर दान में इस तरह खुले हाथ नहीं थे। वच्चेवाली वेश्याओं को भी उन्होंने निःस्वार्थ भाव से महीना वाँध दिया था। दुष्ट लोग हल्ला उड़ाये हुए थे कि रोटी कपड़े की नालिश के डर से ऐसा उन्होंने कर रखा था। अगर यह वात सच्ची है तो यह भी तो वादरेशन नहीं है।

[२]
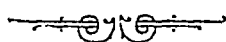
सुलोचना और पारुल।

जिस बिहङ्गम मर्द की स्त्री के साथ नहीं पटती वह अपना स्त्री के हाथ में आमद खर्च की तहवील छोड़ दे तो ठीक होता

है। स्वामी के दिल की चाभी न पाने पर भी उसके खजाने की चाभी पाकर स्त्री उतना नाराज़ नहीं होगी। वह नोट भँजाकर रुपया करेगी और रुपये तुड़ा भुनाकर गहने बनवायेगी। घर का खर्च वर्च आने जाने वालों के स्वागत सत्कार का प्रबन्ध आदि में लग जायगी। रुपये से गहना गढ़ागढ़ा कर रखना पहनना, पड़ोसियों को उधार देना और मायके के भाई बन्दों की गरीबी मिटाना इन कामों में जब तक वह लगी रहेगी तब तक स्वामी बेचारा अवसर पाकर बाहर चर चौंथ लेगा। स्त्री को काम में लगा देना चाहिये। काम में लग जाने से ही स्त्री सन्तुष्ट रहती है। बेकाम बैठे रहने से उसको अनर्थ सूझता है।

काशीनाथ बाबू स्त्री-चरित्र समझते थे इसी से वह अपनी सूलोचना के साथ में तहबील का मानो लाकलामी कबाला कर चुके थे।

सुलोचना उनकी दूसरी धरनी थी। उम्र चौबीस पच्चीस बरस की होगी। वह बड़े घर की बेटी न होने पर भी खूब सुन्दरी थी। लेकिन केवल सुन्दरी होने से ही स्वामी को बांध रखना कहां हो सकता है। और खास काशीनाथ तो इस तरह के पात्रही नहीं थे।

काशीनाथ की पहली स्त्री भी खूब सुन्दरी और गुणवती थी। लेकिन वह भी इस संडे स्वामी के प्रेम से वञ्चित रही और बड़े दुःख से थोड़ीही उम्र में एक सुन्दर कन्या जन्माकर इस लोक से चल बसी।

सुलोचना बन्ध्या थी, और वही अकेली कन्या काशीनाथ

बाबू के सन्तान नाम से थी ! उनकी बहन ने उस लड़की को पाला और आदर से पारुल नाम रखा था।

पारुल अपने बाप की बड़ी दुलारी बेटी थी। काशीनाथ बाबू का हृदय प्रेम उनकी नयी गृहिणी सुलोचना को छोड़ कर स्नेह रुप से पारुल पर आ पड़ा था। उसकी विमाता इस कारण से पारुल को देख नहीं सकती थी। इधर लहुरी स्त्री होने के कारण सुलोचना को मुखरा और करकसा होने का अधिकार था। उसके गर्जने से कोठी की खिड़की झिलमिली तक कांपती थी। घर की बिल्ली बेचारी को दलका ले लेता था। केवल कृपामयी ननद को उसके डर से कपकपी नहीं आती थी।

कृपामयी काशी बाबू से दस बारह बरस बड़ी थी और सेर सुलोचना के लिये सवासेर थी ! जब सुलोचना पारुल पर खनकती भनकती थी तब कृपामयी—"अरे बबुआ बो ! तेरा मिजाज तो बहुत चढ़ गया है देखती हूं।" कहकर जब गले की नस चढ़ाती थी तब सुलोचना एकही दो बात के बाद सब क्रोध भीतरही हजम कर जाती थी। इस तरह पारुल को फूआ के स्नेह दुलार के आगे मयभा (विमाता) का कड़ुआ तीता कट जाया करता था।

कृपामयी कुछ कम सुनती थी। इस कारण सुलोचना की दम्भ भरी बहुत सी बातें उसके कान तक पहुंचही नहीं सकती थी। इससे संसार की बहुतेरी अशान्तियों की उससे छुआई भी नहीं होती थी। लेकिन काशी बाबू बहरे नहीं थे। इस कारण सुलोचना की बहुतेरी पढ़ी टेढ़ी उनके कानों में आती थी। वह समझते थे कि उनके घर में उनकी इस स्त्री ने जो ईर्षा

की आग लगायी है उसको बुझाने का केवल यही उपाय है कि पारुल को व्याह करके पराये घर भिजवा देना।

काशीबाबू सनातन खानदानी होने के कारण समाज संस्कार के कट्टर विरोधी थे। वह कहते थे कि जो लोग लड़कियों को सयाने होने पर ब्याहते हैं उनकी सात पीढ़ी तक नरक में जाती है। ऋतुमती कन्या का व्याह देना और उसका गला दबाकर चकले में भेज देना एक बात है। इस कारण पारुल जब नव बरस की थी तभी उन्हों ने तेरह का बर ढूंढ कर बड़ी धूमधाम से उसकी शादी कर दी। लेकिन व्याह के दूसरे ही साल बेचारी पारुल का नसीब फूट गया। वह विधवा हो गयी। और वहां से उदास होकर पिता के घर चली आयी। तब से वह यहीं है।

पड़ोस में एक आधे ब्रह्मज्ञानी रहते थे। बङ्गाल में ब्रह्मज्ञानी वह कहलाते हैं जो भीतर बाहर सर्वत्र ब्रह्मसमाजी हैं और निडर होकर ब्रह्मसमाज के अनुसार राह रस्म रखते हैं। आधे ब्रह्मसमाजी वा आधे ब्रह्मज्ञानी वह जो भीतर तो ब्रह्मोमत के पगे हैं किन्तु किसी डर या लिहाज से खुल्लमखुल्ला ब्रह्मसमाजी नहीं हो सके हैं। वह पड़ोसी भी वैसे ही थे उन्होंने पारुल का पुनर्विवाह करने के लिये काशी बाबू से बात डाली। उन्होंने जवाब में कहा था—"मुझे मालूम है कि विद्यासागर अक्षत योनि विधवा का विवाह करने का विधान कह गये हैं। लेकिन मैं लजभड़ ब्रह्मज्ञानी नहीं हूं जो विद्यासागर की राय से लड़की का फिर विवाह करूं।

सनातन खानदानी के घर में निकाह नहीं होता।

एड़दह में एक वगीचे वाला वंगला काशीनाथ वावू की ओर था। वह कलकत्ते से दूर गङ्गा के किनारे सुन्दर फुलवाड़ी के वीच में दुमहली अटारी देखते ही वनती थी। वहाँ काशीनाथ की परलोकगता माता ने एक शिवालय की भी प्रतिष्ठा करायी थी। कभी कभी अपनी मुखरा सुलोचना से लड़झगड़कर काशी वावू अपनी वहन कृपामयी और कन्या के साथ उसी में जाकर रहते थे। लेकिन मछली जैसे पानी विना नहीं रह सकती वैसे ही वह भी शहर छोड़कर नहीं रह सकते थे। इस देहाती वंगले में दोही एक दिन रहकर शहर लौट आते थे। लेकिन वेचारी वुढ़िया कृपामयी को उस देहात की अटारी में रहना वहुत पसन्द था। वहाँ मानो उसका एक तरह से गङ्गावास था। नित्य गङ्गास्नान करके अपने को कृतार्थ समझती थी। इसके सिवाय वगीचे में ही माता का वनवाया हुआ शिवालय मिलता था। इसीसे कृपामयी उस वंगले को छोटी काशी कहती थी। भाई के घर में सुलोचना से उसका मनमोटाव वहुत वढ़ता जाता था। इस कारण भाई को राजी करके वह उसी वगीचेवाले मकान में रहने लगी। परिवार में जिसको जहाँ पसन्द हो वह रहे इस में काशी वावू को कुछ नाहीं नहीं थी। वह किसी को इच्छा विरुद्ध वाँध कर अपने पास रखना नहीं चाहते थे। संसार का वन्धन उनका ढीला पड़ गया था। अव वह आप तो दमदमा के वंगले में वहुत दिन से रहते थे। और पन्द्रह वीस दिन पर अड़दह के उसी गङ्गातट वाले वंगले में जाकर वहन और कन्या को देख देख आया करते थे। इधर वाग़ वज़ार वाले मकान में उनकी सुलोचना का एकल राज था। घर के सव नौकर चाकर

लौंड़ी उसी के हुक्म पर नाचती थीं . और खास सोना दाई और गुमास्ता रसिकलाल पर सुलोचना की बड़ी कृपा थी।
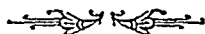
[३]

प्रस्फुटित पारुल।

पारुल अपनी फूआ के साथ एंडदह के ही बंगले में रहती थी। यहाँ उसके आदमियों में एक बुढ़िया दाई, एक रसोइया ब्राह्मण और दो माली थे। रसोइया को छोड़ तीनों विहार के रहने वाले थे। बगीचा लम्बाई में चार और चौड़ाई में दो जरीब होगा। उस में फलों के पेड़ ही बहुत थे। आम कटहल नारियल, बेल, कालीजामुन, चकोतरा कागज़ी नीबू, तगर, गन्धराज, बेला, केतकी, चम्पा, चमेली, माधवी मोगरा, मौल सिरी सब छोटे बड़े फल फूल करीने से लगे थे। पारुल को फूलों का बड़ा शौक था। उसने माली से दमादमा के बगीचे से तरह तरह के विलायती फूलों के पौधे मंगाकर अपने हाथ से एक खाली जगह में सजाकर लगाये थे। उनमें लगे थे अल-स्टर, पान्सी, पिङ्क, होलीहक काइसेथिमम, वायोलेट, नष्ट्रे-सियम, और बेलिया। कुछ अच्छी जाति के गुलाब और रजनी गन्धा भी उसने रोपे थे। उस बड़े बगीचे में पारुल की यह छोटी सी फुलवारी अजीब तरह के मोती, हीरे आदि से जड़े हुए हरे कालीनसी दिखाई देती थी। उसके थोड़ी ही दूर पर एक जगह लतापता से घिरी हुई पेड़ों की डालियाँ एक कुञ्जवाटिका बनाये हुई थीं। जरूर यह मालियों की ढिलाई से ही बना था लेकिन पारुल ने उसे तोड़कर साफ़ करने से मना कर दिया था।

पारुल अब बच्चा नहीं है। वह बराबर सुनती आती है कि उस को लोग सुन्दरी मनोरमा कहते हैं। उस के बगीचे से होकर बहुतसी स्त्रियां रोज़ नहाने जाया करती थीं। एक दिन उसे देखकर एक स्त्री ने दूसरी से कहा --' देख तो भाई कैसी सुन्दर देवी है।" पारुल ने वह बात सुन ली। मन में कहा "क्या सच मुच मेरा रूप बड़ा सुन्दर है ?" झट उसने कमरे में जाकर अपना रूप शीशे में देखा। उस ने भी वही बात उससे कही। अपना सुन्दर वदन देखकर उसको भी आश्चर्य्य हुआ। उसी दिन से वह अपना रूप बड़ी श्रद्धा से आरसी में देखने लगी। और तभी से अपने गहने कपडे की ओर उसकी नज़र पड़ी।

यह आज छ महीने की बातें हैं इन छ महीनों में उस के आकार प्रकार में बड़ा हेर फेर होगया है। यौवन की बाढ़ में उस की लड़कपन की चपलता, सरलता और ठठा कर हँसना सब बह गया है। पूरे पन्द्रह वरस की होने पर जो कुछ होता है वह सब पारुल में दिखाई देने लगा था। इन परिवर्त्तनों से उसको कुछ दुचिताई भी हुई थी। अब उसने माथे पर कभी कभी कपड़ा रखना शुरू किया था। इतना-ही नहीं किसी किसी मर्द को देख कर वह चेहरा और आँखों की टेढ़ी चितवन आधा घूंघट खींचकर ढाकना चाहती थी। मातृत्व का पूर्वाभास छाती का उन्नत होना वह कपड़े से तोपने की कोशिश करती थी। नितम्बों के भारी हो चलने से उस के पाँवों की चञ्चलता पग पग पर घटती जाती थी। इस कारण अब पारुल पहले की तरह फूलों का पराग लेने वाली सुन्दर सुन्दर तितलियों को पकड़ने के लिये दौड़ना

नहीं चाहती थी। उसकी आवाज़ अब ऐसी सुहावनी हो गयी कि सब के सामने बोलने में लजाती थी। छ महीने पहले उस में ये सब लक्षण नहीं थे। किशोर अवस्था के बाद यौवन पर चढ़ते क्या देर लगती है। कल्ह जिस को कली देखा था आज वही खिलकर सौरभ छोड़ती हुई भौरोंको आवाहन करती है।

बुढ़िया फूआ के लिये तो पारुल अभी वही बालिका है। कृपामयी रोज दोपहर के बाद उसका माथ बाँधकर मुँह पोंछ दिया करती थी। उस के बाद वह बारीक ढाके की सारी पहनकर बगीचे में टहलने जाती थी। और वहाँ मन के लायक फूल लोढ़कर माला गूंथती और गले तथा जूड़े में पहनती थी। हाथ पांव और गालों में स्वाभाविक लाली होने के कारण उसको मेहदी या महावर लगाने की जरूरत नहीं पड़ती थी।

पारुल ने किसी दिन रंड़ापा का संयम नहीं सीखा। जिन्दगी में कब उसका विबाह योग या वैधव्य भोग एक साथ ही चला गया था यह उस को याद नहीं था।

सच्ची बात तो यों है कि काशीनाथ बाबू का घर किसी दिन संयम सीखने का क्षेत्र नहीं था।

पारुल ने अपने स्त्री चरित्र में अपनी गुणवती माता के गुणों से कुछ पाया था और विलासी पिता के दोषों में से भी कुछ लाभ किया था। और कृपामयी फूआ के आदर से वह दोष कुछ बढ़ गया था। लेकिन इन सब सामान्य कारणों से पारुल के स्वभाव की आन्तरिक स्वच्छता और सरलता नहीं

गयी थी। उस के भीतर द्वेष या ईर्षा तनिक भी नहीं थी। गांव के छोटे छोटे लड़के लड़कियाँ उस के बगीचे में फल फूल तोड़ने आती थीं तो उन को मना नहीं करती बल्कि उत्साह बढ़ाती थी।
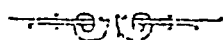
(४)

समाज का निचला तह।

पाठक, नन्दलाल और हेमाङ्गिनी आदि को भूल न गये होंगे। वे लोग कृष्ण नगर से आकर कलकत्ता सुरेश वाले बोर्डिङ्ग के बगल में किराये का मकान लेकर कोई एक महीने तक रहे थे! पीछे कमरहट्टी के एक चटकल में नन्दलाल की नौकरी लग गयी। महीना पच्चीस रुपया हुआ। कुछ उपर की भी आमदनी थी।

कमरहट्टी के चटकल में कोई चार हज़ार कुली काम करते थे। इस से वहाँ मकान बड़े महँगे भाड़े पर मिलते थे और जगह भी साफ नहीं थी। इसी कारण नन्दलाल ने शहर से बाहर चटकल से कुछ दूरी पर डेरा किया था।

कालिज बन्द होने पर छुट्टी के समय सुरेश अक्सर कमर-हट्टी में जाकर नन्दलाल से मिला करता था। एकदिन रविवार को सुरेश ने वहाँ जाकर पाँचू मामा का भी दर्शन पाया। वह उस को बहुत स्नेह करते थे। साइन्स कोर्स में सुरेश का पास होना सुनकर वह बहुत ही खुश हुए। और उसे उन्होंने डाक्टरी लाइन में जाने की सलाह दी कहा—"सुरेश

तुम डाक्टरी सीखोगे तो बहुतों की जान बचा सकोगे। मैं वकालत से डाक्टरी को बहुत पसन्द करता हूं।"

सुरेश का भी डाक्टरी सीखने का इरादा था। लेकिन उस ने मन में ठीक कर लिया था कि बी० ए० पास किये बिना मेडिकल कालिज में भरती नहीं होगा।

आज हेमाङ्गिनी का कुछ काम बढ़ गया था। उसने कई तरकारियां बड़ी श्रद्धा से बनाकर सब को पसन्द से भोजन कराया। और कहा कि चटकल के छोटे साहब भैया पर बहुत स्नेह करते हैं उन्होंने पांच रुपया महीना भी बढ़ा दिया है।

भोजन करने पर कुछ आराम कर के पञ्चानन बाबू सुरेश और नन्दलाल को लेकर घूमने के लिये गये। उस दिन छुट्टी होने से कल का काम बन्द था। इस कारण वे लोग कुली लाइन देखने लगे। पञ्चानन नीचे दरजे के अपढ़ दरिद्रों से बहुत मिलते थे। वह कहा करते थे कि उस दरजे के आदमियों में ऐसा एक सरल भाव दिखाई देता है जो समाज के ऊंचे दरजे वालों में मिलता ही नहीं। नासमझ नीचे दरजे के आदमी अपनी भूल जान लेने पर झट उसे कबूल कर लेते हैं। लेकिन लिखे पढ़े भले आदमी भूल भटक कबूल करने में सकुचाते हैं। शिक्षित आदमी अपनी विद्या बुद्धि की करामात दिखाकर अपने भूले रास्ते से एक एक सीढ़ी उतरकर जब एकदम दूसरे रास्ते पर आ खड़ा होगा तब कहेगा, उसका मत कुछ बदला नहीं वह तो पहले जैसा था अब भी वैसा ही है। अपनी अकल की हार कबूल करना उस की कुण्डली में लिखा ही नहीं।

पञ्चानन ने सुरेश को कहा "बहुत कुछ देख सुनकर मैंने समझ लिया है कि समाज का जो तह जितना ऊंचे है उस में सरलता की उतनी ही कमी है।"

सुरेश ने कहा—"लेकिन इन नीचे दरजे वालों में अधिक-तर नीच आदमी ही देखे जाते हैं।"

प०—हां यह बात सही है लेकिन इन में ऐसे बहुत आदमी मिलेंगे जिन में इतनी दया-माया धर्मज्ञान और आदमियत है, जितनी ऊंचे घर के अनेक बड़े आदमियों में नहीं है।

पञ्चानन ने सुरेश को समझा दिया कि विधाता सख्त तकलीफ और गरीबी की आग में जलाकर ही अधिक आदमियों का भविष्य रचा करते हैं। जिस में अच्छी धातु होती है वह आग में तपकर उज्ज्वलकान्ति पाता हुआ देवता रूप से निकलता है और जिसका गठन खराब धातु से हुआ है वह इस आग से इसपात की तरह कठिन निर्दय और ना-रकी होकर बाहर आता है।

पञ्चानन ने कहा—"कुली मजदूर भी आदमी हैं। उन में जरूर आदमियत छिपे भाव से पड़ी हुई है। उस दरजे के आदमियों में ज्ञान की रोशनी डालने से वे लोग गरीबी के साथ लड़कर अपनी दबी हुई आदमियत ऊपर निकाल लाने में समर्थ होंगे। और उनमें से कोई कोई उन्नति की सब से ऊंची चोटी पर पहुंच सकता है।"

पांचू मामा ने सुरेश को अमेरिका के प्रेसिडेण्ट लिङ्कन गारफील्ड आदि की जीवनी पढ़ने को कहा। उन्होंने रामा-यण और महाभारत से नजीर नहीं निकाली। इसके लिये हमारे पाठक दुःख न करें।

कुली लाइन के आस पास घूम फिर कर पञ्चानन ने देखा तो वहां मजदूरों के लिये मोदी की दूकान है। दारू शराब पीने के लिये हौली है, ताड़ीखाना है। एक जगह रण्डियां भी डेरा डाले पड़ी हैं। उन को रुपया सूद पर देने के लिये मारवाड़ी और कपड़ा उधार देने को काबुली भी मौजूद हैं। लेकिन वहां है क्या नहीं कि रात के पढ़ने के लिये रात्रि पाठशाला और मजदूर मण्डल। उन्होंने समझ लिया कि कुली मजदूरों को नरक की ओर घसीट ले जाने के लिये तो सब बन्दोबस्त तैयार है। केवल स्वर्ग की ओर चढाने का उपाय कुछ नहीं है। पञ्चानन ने दुःखी होकर सुरेश से कहा—"The nation dwells in the College" इन नीचे दरजे के आदमियों को ऊपर उठाये विना देश उन्नत नहीं हो सकता। स्वदेशी युवकों के सामने यह बहुत बड़ा लम्बा चौड़ा विशाल कर्म्मक्षेत्र पड़ा है। ये जवान केवल बायकाट और बन्देमातरम् चिल्लाने में जो अपनी शक्ति खर्च किया करते हैं वह अगर इस काम में लगावें तो देश का बहुत काम करेंगे।

यहाँ हम थोड़े में पाठकों को यह बतलाये देते हैं कि पञ्चानन बाबू के उत्साह ने काम किया था। सुरेश और नन्दलाल की थोड़ी ही कोशिश और वहाँ के कुछ पढ़े लिखे युवकों के उद्योग से थोड़े ही दिनों पीछे कमर हट्टी में एक नाइट स्कूल और एक मजदूर मण्डल स्थापित हुआ था। उस मण्डल से ही कुलियों की अर्जी और चिट्ठी पत्री लिखने का काम किया जाता था। और उनकी रोग, शोक और आफत विपत में सहायता होती थी। वहीं के और आस पास के गाँव

वाले पढ़े लिखे ऊंचे दरजे के विद्यार्थी उस रात्रि पाठशाला में पढ़ाया करते थे। नन्दलाल के आग्रह अनुरोध से चटकल के छोटे साहब ही उस नाइट स्कूल और मजदूर मण्डल के पेट्रन (सरपरस्त) हुए थे और उन्हीं के खर्च से इन दोनों का काम एक तरह से चला जाता था। अपने मतलब की खोज में साहब लोग प्राच्य देश में आते हैं तौ भी वे लोग आधुनिक संसार सभ्यता की जलती हुई बत्ती हाथ में लेकर आते हैं उसकी उज्ज्वल रोशनी के लिये हम लोग उन के ऋणी हैं। इस बात को नहीं मानने से पाप होगा।
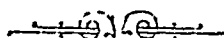
(५)

यह वही है।

देश के युवक दल बाँधकर जब सर्व साधारण के किसी हितकर काम में मुस्तैदी से मिहनत करते रहते हैं तब उस समय का दृश्य देखने से किसके मन में आनन्द नहीं होता? कलकत्ते में अर्द्धोदय योग के अवसर पर और वर्द्धमान जिले की भयङ्कर बाढ़ के दुर्दिन में बङ्गाली स्वेच्छा सेवकों ने देशवासियों के लिये जो किया था वह क्या देश के आदमी कभी भूल सकते हैं? कितनी ही जगहों में महामारी, अकाल और सार्वजनिक मेलों पर देश में स्वेच्छा सेवक युवक बहुत कुछ देशहित का काम करते हैं वह सब अखबारों में नहीं छपता। इस कारण सब को उनकी खबर नहीं मिलती। कमर हट्टी ही के मज़दूर-मण्डल वाले स्वेच्छा सेवक जो कुली मज़दूरों के लिये निः

स्वार्थ भाव से परिश्रम करते थे उसको कितने आदमी जानते हैं ?

कुली लाईन में हैजा आया था। एक बालक कुली उस बीमारी में पड़कर गिर गया। उसकी देह ठंढ़ी हो पड़ी। चट-कल के डाक्टर दवा दे रहे थे। मजदूर मण्डल के तीन स्वेच्छा सेवक उसकी सेवा सुश्रूषा करते थे। उस लड़के के कोई नहीं था। मण्डल के लड़के अपने हाथ से उसका मल और वमन आदि फेंकते थे। घड़ी देख देखकर दवा खिलाते और हाथ पाँव सेंका करते थे। जैसे डाक्टर ने कहा था दो दो घंटे पर रेक्टर सिलाइन की पिचकारी लगाया करते थे।

सारी रात इसी तरह बीती। सवेरे डाक्टर ने आकर हाथ देखा। कहा नाड़ी अब आगयी है। और भरोसा है रोगी बच जायगा। बस सेवा सुश्रूषा उसी तरह से होने लगी। सारा दिन इसी तरह कटा। फिर आठ दिन के बाद उसका पेशाब उतरा।

तीन दिन पर पथ्य दिया गया। लेकिन अभी हालत अब भी वैसी ही खराब थी। कुछ दिनों तक अभी कल में काम करने के लायक नहीं हो सकता। ऐसी हालत में नन्दलाल उसको अपने डेरे पर ले गया। अब उसका सब भार हेमा-ङ्गिनी पर पड़ा। साथही साथ उसका स्नेह भी बालक पर पड़ा। अब वह उसकी भी बहन हो गयी।

अतवार को सुरेश जब कमरहट्टी में आया तब उसने बालक को देखा और उसकी बीमारी की हालत सुनी। नन्द-लाल ने कहा—"हैजा इसका तो इतना बढ़ गया था कि नाड़ी

तक वन्द हो गयी थी। हमारे मण्डल के लड़कों ने बड़ी मिहनत करके तो इसकी जान बचायी है।

सुरेश ने उससे पूछा-"तेरे वाप मा हैं?"

उसने कहा-"नाः"

सु०-तेरा घर कहाँ है?

"कलकत्ता।"

सु०-कौन जात है तू।

"कुरमी।"

सु०-तो तू पच्छाही है?

"नहीं पछाही काहे को वङ्गाली हैं हम।"

सु०-वङ्गाली कुरमी होता है रे?

"काहे नहीं होता? नहीं होता तो हम कुरमी काहे को हम तो वङ्गाली हैं?"

सु०-नाम क्या है तेरा?

"नाम झूमन है।"

अब सुरेश ने समझ लिया कि झूमन कैसा वङ्गाली है। पूछा-"चटकल में तू कितने दिन से काम करता है?"

"यही एक महीना हुआ।"

सु०-इसके पहले क्या करता था?

"कलकत्ता में एक वीड़ी का दोकान में नोकर रहा।"

सु०-वहाँ कितना महीना पाता था?

"दस रुपया।"

झूमन ने महीने की बात जान बूझकर झूठी कही। बहुत लोग अपना मान बढ़ाने के लिये इस तरह झूठ बोला करते हैं।

सुरेश ने पूछा—"यहाँ क्या पाता है?

"छः रुपया।"

सुरेश की जिरह से झूमन रुक गया। लेकिन था बड़ा तेज। बोल उठा—"जेलखाने में विधू बाबू हम को बीड़ी का दोकान में नौकरी करने बोले रहे उसीसे वहां गया था। लेकिन जिसके दोकान में काम करता रहा वह बड़ा पाजी था। बाकस से रुपया चुराया बोल के हम को थाने में ले जाने लगा। हमने घात पाकर उसके नाक पर ऐसा घूसा मारा कि उसकी नाक फूट, गयी खून बहने लगा। बस हाथ छुड़ाकर मैं भाग आया।

सु०—जेलखाने के कौन विधू बाबू की बात करता है रे?

"वही विधुबाबू एक कैदी रहे! मैं उनका काम करता था पांव दाब देता था। वह बड़े अच्छे आदमी रहे। वही कहते रहे कि झूमन! तू अब जेब ओब मत काटना न और कुछ करना जेल से निकल कर कलकत्ते में किसी बीड़ी वाले के यहां नौकरी करना।"

सु०–तो तू कैद भी हुआ था?

"नाहीं कैद काहे को होता। मैं विधु बाबू की नौकरी करता था।"

इस नौकरी का अर्थ सुरेश बाबू समझ कर हंस पड़े।

फिर उससे पूछने लगे—"क्यों झूमन ! लिखना पढ़ना सीखेगा तू ?"

झूमन बोला—लिखना पढ़ना सीखने से तो और अच्छा होगा। बड़ी नौकरी मिलेगी । खूब रुपया पैदा करूंगा फिर बड़ा आदमी होजाऊंगा।

जब कमजोरी दूर होगयी। झूमन कल में काम पर जाने लगा तब वह नाइट स्कूल में भरती हो गया सबेरे तो वह हेमाङ्गिनी की फर फरमाइश करता था । और खा पीकर नन्दू बाबू के साथ नौकरी पर जाता था।

पाठक समझ गये होंगे यह अलीपुर जेलवाला वही गिरहकट झूमन है। स्कूल में पढ़कर बड़ा आदमी बनने की उसको इच्छा हुई तो भी उसको नाइट स्कूल अच्छा नहीं लगा।

छुट्टी के दिन झूमन को बिलकुल आजादी मिल जाती थी। वह वन के पंछी की तरह चारों ओर जिधर चाहता उड़ता फिरता था। उस दिन वह गांव के लड़कों को जमा करके घुड़दौड़ खेलता था। कभी किसी के बगीचे में घुस कर फल गिराता और डालियां तोड़ता था । जब मालिक देखता और चिल्लाता हुआ आता तब एक ही छलाङ्ग में घेरान टपकर भाग जाता था। आदत जाती कहाँ है?
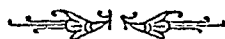
(६)

आखों का मिलान ।

कलकत्ते से कमरहट्टी जाने को आगरपाड़ा या वेलघरिया उतरकर जाना पड़ता है। या स्टीमर से अड़दह घाट पर उतर कर भी जाना होता है। सुरेश दोनों रास्तों से जाया करता था। जब अड़दह घाट से उतर कर जाता तब काशीनाथ बाबू के बगीचे के किनारे से जाना पड़ता था।

काशीनाथ बाबू के बगीचे में फले पेड़ बहुत थे। इस कारण झूमन की पहुंच यहाँ भी हुआ करती थी। उसने मालियों से साठ गाँठ कर ली थी। झूमन जब बगीचे में आता तब पारूल उससे किसी किसी पेड़ के फल तुड़वाती और दो चार उसके खाने को भी दे दिया करती थी। वेल की ऊंची डालियों से अच्छे अच्छे वेलपत्र तोड़ लाकर पारूल की फूआ से भी झूमन कुछ पैसा वसूल कर लेता था।

सुरेश ने उस बगीचे के किनारे से जाती बेर दो एक दिन पारूल को देखा था। आँखें कभी कभी कमरे की खिड़की का काम करती हैं। पारूल का खिला हुआ रूप उन खिड़कियों की राह से घुसकर सुरेश के हृदय में अङ्कित हो गया था। लेकिन पारूल इस बात को नहीं जानती थी। जानने का ढङ्ग भी कहां बगीचे के किनारे से कितने ही आदमी आते जाते हैं वह कितनों की ओर ध्यान करती? उसको लज्जा थी।

लेकिन यहां सवाल हो सकता है कि फिर पारूल का ठाठ बाट किसलिये था। जवाब है कि अच्छा दीख पड़ने के लिये अच्छा देखने के लिये नहीं। लेकिन जो अच्छा है वह जो

देखना नहीं चाहता उसकी आंखों में भी आ पड़ता है। और तभी से गोलमाल होने लगता है।

अब सुरेश एँड़दह के ही रास्ते से जाना आना पसन्द करता था। एक दिन वह काशीनाथ बाबू के बगीचे के किनारे किनारे नन्दलाल के यहाँ जा रहा था एक अमरूद के नीचे पारूल खड़ी थी। उसके आस पास अमरूद गिर रहे थे। सुरेश की नजर पारूल पर पड़ी। लेकिन उसने झूमन को नहीं देखा।

उधर झूमन ही पेड़ पर चढ़ा अमरूद तोड़ रहा था। उसको सुरेश ने नहीं देखा लेकिन झूमन ने सुरेश को देख लिया। वह ऊपर ही से सुरेश बाबू कहकर चिल्ला उठा।

सुरेश ने कहा—"कौन है रे। झूमन? यहाँ क्या करता है रे।"

सुरेश की आवाज जब पारुल के कान में गयी। उस की आँखें दूसरी ओर थीं। अब उसने राजहंस की तरह गर्दन टेढ़ी कर के सुरेश की ओर देखा। दोनों की आँखें एक दूसरे पर जा लगीं। सुरेश चन्द्र के घने काले केश, सुविशाल ललाट, दोनों गालों के बीच की नाक, सुन्दर मुखमण्डल, उच्चाभिलाष भरी चौड़ी छाती, सुडौल शरीर सब ने देखते ही पारूल के हृदय में पहुंचकर स्पर्श किया।

सुरेश ने आँखें फेर लीं। लेकिन पारूल साहस करके उसकी ओर देखती रही। पुरुष और रमणी की प्रथम प्रेम दृष्टि के समय पुरुष लजा जाता है किन्तु रमणी साहस

कर के देखती रहती है। दोनों एक दूसरे के स्वभाव का कुछ कुछ अनुकरण करते हैं।

सुरेश से झूमन ने कहा—"मैं अमरूद तोड़ता हूं।"

सु०—अरे घर नहीं चलता ? चलेगा तो आ।

झू०—आप चलिये तो मैं आता हूं।

जब सुरेश चले गये पारूल ने पूछा—"यह बाबू कौन हैं रे !"

झू०—यही न हम लोगों के सुरेश बाबू हैं बहिन ! तुम इन को नहीं जानती ?
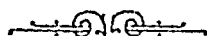
(७)

अपराधी का डर।

अगर सुरेश से कुछ अपराध हुआ तो तो पाठक क्षमा करें। उसने प्रेम की दृष्टि से पारूल को देखा था। उस युवती का जाति कुल यहां तक कि नाम तक न जान कर कुमारी है या सधवा अथवा विधवा यह कुछ न समझ कर सुरेश का उस पर इस तरह आंख डालना हो सकता है कि उचित न हो। लेकिन प्रेम की बिजली जब हृदय को छूती है तब आपही यह चलायमान होता है। दृष्टि बे लगाम घोड़ी की तरह आपही दौड़ती है। इस काम में भला बुरा, उचित अनुचित और न्याय अन्याय की बहस नहीं चलती।

प्रायः रमणी का हृदय जीतने के लिये पुरुष को बड़े बड़े युद्ध करने पड़ते हैं। उसमें साज बाज, और ठाट बाट की तैयारी करना, नयन बाण चलाना और वार्तालाप की फुलझड़ी

बजाना पड़ती है। सुरेश इस घड़ी उसी युद्ध के रास्ते पर आ गया है। वह नन्दलाल के डेरे पर बहुत आने जाने लगा था। पहनाव पोशाक में भी फेर बदल दिखाई देता था। वह काशी बाबू के बगीचे में जब पारूल को देखता तब उस पर नयनों का अचूक बाण चलाने में नहीं चूकता था। लेकिन रसालाप की तुरही नहीं बजाने पाता था। वह काम अब झूमन की मारफत होने लगा।

अब सुरेश और पारूल के पास झूमन की दर बढ़ गयी थी। पारूल ने झूमन से यह पता पाया था कि सुरेश कलकत्ते में रहता है और अपने मित्र नन्दलाल के डेरे पर आया करता है।

झूमन जब बगीचे में आता तब पारूल पूछती थी। "हां रे झूमन तेरे सुरेश बाबू कब आवेंगे।

झूमन कभी कहता " रविवार को आवेंगे " कभी कहता–" मालूम नहीं है कह नहीं गये कि कब आवेंगे।"

झूमन खूब समझता था कि पिछले जवाब से पारूल कुछ बिगड़ती थी। इसीसे एक दिन उसने सुरेश से कहा। "सुरेश बाबू आप कब आवेंगे हम को बोल जाइये ओ बगीचे वाली बहन बराबर पूछा करती है कि आप कब आवेंगे और जब मैं नहीं बतलाता तब मेरे ऊपर नाराज होती है।

सुरेश ने समझ लिया कि जिसको वह मन में चाहता है वह भी उसको देखना चाहती है। जान पड़ता है वह भी उसको चाहती है नहीं तो आने की खबर नहीं पाने से वह रंज क्यों होती है। झूमन से बोले " अब जिस दिन मुझे आना होगा उसका ठीक करके पहले से बोल जाऊंगा।"

अब सुरेश को पारूल की प्यास चौगुनी बढ़ गयी। कण्ठ की प्यास में पीने की चीज़ चाहिये और हृदय की प्यास में चाहिये प्रेम। चाह की चीज जितनाही पास होती है उसके लिये प्यास भी उतनीही बढ़ती है।

झूमन उस बगीचेवाली बहन का नाम नहीं जानता था इसलिये सुरेश को पारूल का नाम नहीं मालूम हूआ। लेकिन नाम से क्या होना जाना है। उसने अपनी बे नाम की प्रेमिनी के लिये एक लम्बी कविता लिखकर झूमन के हाथ दी और कहा-"अच्छा झूमन! यह कागज़ तू अपनी ओ बगीचे वाली बहन को दे सकता है?"

झूमन ने "हां" कहके कागज ले लिया। सुरेश ने कहा- "देखनारे कोई जानने न पावे।

उस कविता में चांद था, चकोर था, वसन्त का मलय हिलोर था और थी कोइल की कूक। झूमन ने उसको पारुल के हाथ में दिया भी था। लेकिन दुःख की बात यह कि पारूल उसको पढ़ नहीं सकी। काशी बाबू स्त्री शिक्षा पर झाड़ू लेकर दौड़ते थे। वह पारूल को लिखने पढ़ने से सदा दूर रखते और कहते थे स्त्री लिखना पढ़ना सीखे तो उसे पराये मर्द से चिट्ठी पत्री करके मेलजोल बढ़ाने का ज़रिया मिल जाता है। बात उन्होंने ठीक ही कही थी क्यों कि कम से कम वह बात उनकी लड़की के लिये तो बिलकुल फिट थी।

पारूल को अक्षर ज्ञान नहीं था। तौभी उसने उस कागज को एक हिसाब से पढ़ लिया था। उसके मन में यह बातें बैठ गयीं कि जब सुरेश बाबू ने उसको लिखा है तब वह जरूर ही प्रेमपत्र है। इस कारण उसमें जरूर प्यारी, प्राणेश्वरी

और हिये की रानी होगा। पारूल ने नाटक बहुत बार देखा था। वह झूमन को कुछ न कह कर झटपट घर में चली गयी और कागज यंत्र में पढ़ाने के लिये उस घड़ी उसने बड़े यत्न से वाक्स में रख दिया। हम समझते हैं वह इसलिये भाग गयी कि झूमन कहीं उसका जवाब भी न मांगने लगे।

जब झूमन लौट आया तब सुरेश ने उससे पूछा-"क्यों रे झूमन हाथ में दिया था वह कागज।"

झूमन—हाँ खास उसके हाथ में दिया

"पढ़ लिया उसने ?"

झूमन—हाँ हाँ—

"पढ़के क्या कहा ! खूब खुश हुई न ?"

झूमन—वह कुछ बोली नहीं हाथ में लेकर ही भीतर चली गयी।

अब तो सुरेश के मन में बड़ा डर हुआ। क्या जानें उसकी कविता वह किसी को दिखलावे या कोई आकस्मात् देख ले।

मन में सुरेश ने कहा—यह काम अच्छा नहीं हुआ। इसी कारण अब वह एँड़दह का रास्ता छोड़ कर रेल से ही कमर हट्टी जाने आने लगा। और झूमन को भी वहां जाने से मना कर दिया। क्योंकि उसी के हाथ से वह चिट्ठी वहाँ गयी थी।

[८]
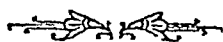
प्रेम की गति ।

प्रेम का यह एक विशेष गुण है कि उसकी किरणें प्रेमी के हृदय से जब छूटती हैं तब प्रकृति की हर एक वस्तु पर लगती हैं और उससे टकराकर फिर प्रेमिक के दिल को लौट आती हैं। पारूल फुलवाड़ी में जाकर देखती थी कि भौंरे केतकी किंशुक के पराग से पग कर खिले फूलों का मधु लूट रहे हैं। लूटते क्यों नहीं, उस समय उनको क्या पाउडर लगाकर अपने प्यारे के सामने सुन्दर बनने की साध नहीं होती? पारुल यह सब देखकर समझती थी कि फूल अपनी शोभा सौरभ और मधु लुटाकर ही अपनी जिन्दगी सार्थक करते हैं।

पारूल देखती थी सन्ध्या समय पक्षी कुञ्जों को लौटकर वृक्षों की डाल पत्तियों से चहक चहक कर अपनी दिन भर की बीती कह रहे हैं। पत्ते भी पट पट और अपनी मरमराहट से उनका जवाब देते हैं। इसी तरह परस्पर प्रेमालाप करते करते जब बहुत रात होती है तब वह उन्हीं की गोद में सो जाते हैं। प्रेम अन्तर्जगत् की रोशनी है तौ भी इसकी ज्योति से बाहरी जगत् के सब चल अचल प्रकाशमान हो उठते हैं।

बगीचे में पारूल ने अपने कुञ्ज की एक ओर देखा तो एक पेड़ ऊपर मुंह उठाये अवलम्ब ताकता है और उसको देखकर प्रेम भिखारिनी लता उसकी ओर हिलती डुलती हुई बढ़कर अपनी शाखा बाहु बढ़ा देती है। जिसको अवलम्बन की दरकार है वह अपने चाहक को क्यों नहीं आलिङ्गन करेगा। कवि ने ठीक कहा है पण्डित और वनिता लता शोभित आश्रय

पाप। जो स्त्री यौवन पर पहुंचती है उसकी दशा भी ठीक इसी अवलम्ब चाहने वाली लता के समान है। लेकिन उनमें अवलम्ब चुनने की शक्ति वहुधा नहीं होती। हो सकता है कि वह नसीव से देव मन्दिर का खम्भा पकड़कर मान मर्य्यादा से स्वर्ग की ओर चढ़े या नहीं तो नसीव के मारे किसी टूटे हुए सूखे पेड़ को पकड़ कर परनोहे के नरक कुण्ड की ओर उतर पड़े।

स्त्री का महत्व यही है कि वह सहजही पुरुष को दिल देने को तैयार होती है। वहुतेरे हत्यारे पुरुष उसे न लेकर केवल उसका रक्तमांस लेते हैं। और उसकी चिन्ता से अवला वेचारी को इसीलिये अक्सर दुःखसमुद्र में कूदना पड़ता है।

पारूल ने मन ही मन जिसको अवलम्बन चुन लिया था वह देव मन्दिर का खम्भा है या सूखा पेड़। इसका अभी कुछ प्रमाण नहीं पाया गया लेकिन इधर कई दिनों तक उसके न देखने से मन में पारूल के वड़ा डर हुआ था।

आज दो अठवाड़े वीते सुरेश को पारूल ने नहीं देखा। झूमन भी उसके वगीचे में नहीं आता इसका कारण क्या है। जितनाही दिन बीतने लगा उतनाही पारूल की उत्कण्ठा वढ़ने लगी। उसके रोज मन में होता था कि आज जरूर अपने अपलम्व को देखेगी। इसी तरह कितनेही आज चले गये। निठुर वर्तमान इसी तरह आशा को सदा निराश करके अतीत में जाकर छिपा करता है।

पारुल दिन का वड़ा भाग वगीचे में ही विताती थी। वह मन में कहती थी—सुरेश वाबू सवेरे नहीं आसके क्या जानें

दोपहर को आवें। इस लिये उसको बगीचे में सब समय हाजिर होना उचित है। जब पारुल नहाने खाने जाती तब उसको बराबर डर लगा रहता था कि इतनेही में वह बगीचे के किनारे से निकल न जायँ। इसी डर से झट स्नान भोजन करके बगीचे को वह दौड़ आती थी। उसकी फूआ ने एक दिन कहा—"अरे पारुल तू आठो पहर बगीचे में क्या करती है? जब देखो तब बगीचा जब पूछा तब बगीचे में यह बात क्या है?"

पारुल ने जवाब दिया—"करना क्या है वहां? क्या बगीचे में रहना कुछ दोष है।"

आदर की भतीजी को कृपामयी और कुछ नहीं दबा सकती थी इसी तरह दो चार दिन और बीता। पारुल सारा दिन बगीचे में रहकर भी सुरेश को नहीं देख सकी। अन्त को जब नहीं रहा गया तब रो पड़ी। उसका यह रोना जङ्गल का रोना होने पर भी निरर्थक था यह हम नहीं कह सकते। प्रेम की बढ़ती होती है तब प्राण पिघल कर आँसू के रूप में निकलता है। इन आँसुओं को और कोई नहीं देख पाया तो भी यह बात कौन कहेगा कि इनका अर्थ कुछ नहीं है?

पारुल के मन की इस समय जो दशा है उस को एक तरह का पूर्व मान कह सकते हैं। इस मान में कुछ विरह आ पड़ा था इससे उसका किसी काम में जी नहीं लगता था। खाना, नहाना, पहनाव पोशाक, आनन्द उल्लास और फूआ से किस्से कहानी सुनना, इन सब में उसकी ढिलाई दिखाई देने लगी। उसके लगाये हुए फूलों के पौधे पानी और सेवा विना सूखने लगे।

[६]
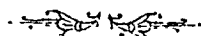
मान ।

एक दिन पारुल अपने लताकुञ्ज में बैठी सोच रही थी। जो कुछ बीता था सब एक एक करके उसकी आँखों के सामने आरहा था। बगीचे के किनारे से सुरेश बाबू की आवाजाही उनका वह देवसमान सुन्दर मनमोहन रूप, उसके साथ आँखों का मिलान, झूमन के हाथ से चिट्ठी का पाना, फिर उसी के बाद से उनका एकदम गायब हो जाना सब आया फिर मनही मन उसके सवाल खड़ा हुआ कि पिछले दो में कार्यकारण सम्बन्ध तो नहीं है? सुरेश बाबू ने वह चिट्ठी लिखकर ही आना जाना बन्द कर दिया एकदम। जान पड़ता है इस चिट्ठी में उन्हों ने लिखा है कि अब इस कारण से नहीं आवेंगे। यही मन में सन्देह करके पारुल दौड़ी हुई घर में गयी और झट मकान से सुरेश बाबू की चिट्ठी निकाल लायी।

पारुल ने उस चिट्ठी को कई बार देखा है। छाती से लगाया और चूमा है। अब उसने फिर उसको खोला अच्छी तरह से देखा उसने देखा कि सादे कागज पर बहुत ज्यादा स्याही से गिचपिच किया हुआ है लेकिन उसको तो काला अक्षर भैंस बराबर था।

पारुल अपने पिता पर इसके लिये अनखायी कि उन्होंने उसको क्यों नहीं पढ़ाया। फिर उसने ठीक किया कि वह गांव के एक छोटे लड़के को बुलाकर वह चिट्ठी पढ़ा लेगी। बस उसने एक माली को बुलाकर कहा—"देखो माली दौड़ के

जाव गांव से एक लड़का तो बुला लाव देखना देरी नहीं करना।

छोटे लड़के से पारुल का क्या काम है यह तो माली की समझ में ठीक नहीं आया। उसने समझा कि फूआजी के लिये बेलपत्र तोड़ने की जरूरत जान पड़ती है। जब वह बाहर गया तो देखा थोड़ीही दूर पर झूमन चला जा रहा है। झट उसीको लाकर पारुल के सामने हाज़िर कर दिया।

उस बगीचे में आने की झूमन को जी से लगी थी लेकिन सुरेश बाबू के हुक्म के मारे आ नहीं सकता था। उसने मालीक के हाथ में आपही आकर पकड़ाई दिया। उसका मतलब यही था कि सुरेश बाबू के यहां जाकर कहेगा कि माली उसको पकड़ ले गया तो क्या करे।

कार्तिकदेव के मोर जैसे वाहन हैं पारुल सुरेश का झूमन को भी कुछ वैसाही समझती थी। उसने समझा कि वाहन आया है तब कार्तिक देवता भी आवेंगे यही विचारकर के पारुल मन में बहुत खुश हुई।

जब माली चला गया तब झूमन से पूछने लगी—"काहे झूमन अब तू बगीचे में आता नहीं काहे ?"

झूमन को चुप देखकर फिर पारुल बोली—"अरे मैं तेरी बहन हूं। तोको इतना मानती हूं। इतनी चीजें देती हूं तो भी तू क्यों नहीं आता झूमन ? तू क्या मेरे ऊपर नाराज है ?"

झूमन अब चुप नहीं रह सका। उसने सब साफ कबूल करके कहा—'ना बहिन वह बात नहीं है। बगीचे में आने

का तो मेरा मन बहुत करता रहा लेकिन सुरेश बाबू के मने करे से नहीं आया।"

भूमन की बात सुनने पर पारुल का मान-समुद्र लहर मारने लगा। वह बोली—"तेरे सुरेश बाबू नहीं आवेंगे और तोको इधर नहीं आने देंगे तब तू यह चिट्ठी काहे को लाया भूमन ? ले जा तू अपनी यह चिट्ठी जिससे लाया था उसको देदे। जा अब चिट्ठी लायेगा तो मैं उसको छूऊंगी नहीं।"

यहाँ पारुल ने भनक कर चिट्ठी क्या लौटायी मानो अपना कटा हुआ कान लटों से ढक लिया। वह पढ़ना तो जानती नहीं थी चिट्ठी पत्री छूना उसका भक मारना है। पारुल चिट्ठी भूमन के हाथ में देकर चली गयी। भूमन को ऐसा जान पड़ा कि उसकी बहन की आँखें आँसू से भर गयी थीं।

[१०]
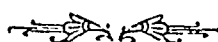
हृदय बनाम मस्तिष्क।

भूमन जिस दिन काग़ज़ लौटा लाया उस दिन सुरेश बाबू कमरहट्टी में थे। अपनी चिट्ठी वापस लेने पर उन्होंने समझ लिया कि उनकी कविता किसी को जाहिर नहीं हुई है। इस से उनको बड़ी तसल्ली हुई। भूमन ने कहा—"मैं तो उन के बगीचे में ाता नहीं था कभी, लेकिन उनका माली मुझे रास्ते से पकड़ ले गया था।

सु०—तो तेरी ओ बगीचे की बहन ने कहा क्या ?

भू०—कहने लगी भूमन तू आता काहे नहीं ? हमने कहा

सुरेश वावू मने किये हैं। वस इतना सुन के तो उनको वड़ा दुःख हुआ वावू! कहने लगी--'इधर नहीं आता तो चिट्ठी जिसकी है ओको फेर दे जा।'' यही कहती हुई आंसू पोंछती चली गयी।

सु०—तो तू ने देखा तेरी वहन मेरे ऊपर नाराज़ हुई?

झू०--हां वावू! वहुत नाराज़। वोली रही कि जव तेरे सुरेश इधर नहीं आवेंगे तो फिर उनकी चिट्ठी लावेगा तो छूयेंगी नहीं।

सु०—अच्छा तो अव मैं चिट्ठी नहीं दूंगा झूमन तू यह सव वात किसी से कहना मत।

आदमी के भीतर डर और उत्साह एक साथ ही रहता है। पहले के जाते ही दूसरा फूट निकलता है। सुरेश के दिल में आनन्द की वाढ़ आयी। आशा का ज्वार चढ़ आया। वह अपनी उपास्य देवी को अपने दिल का प्रेम जताने के लिये व्याकुल हो उठा। लेकिन उसका उपाय नहीं देखा। देवी ने वह रास्ता वन्द कर दिया। कह दिया था कि चिट्ठी लायगा तो हाथ से छूयेगी नहीं।

अव सुरेश के दिल से मग्ज़ की वहस होने लगी। दिल ने दूसरी वार फिर चिट्ठी लिखना चाही।

मग्ज़ ने कहा-"अव झूमन ले जाने को राज़ी नहीं होगा।"

हृदय ने कहा--झूमन को समझा वुझाकर चिट्ठी ले जाने के लिये राजी करेगा।

म०--उसको वहुत कहना सुनना ठीक नहीं वह मन में क्या कहेगा?

ह०—तब मैं आप ही जाकर उस से मिलूंगा।

म०—उस में बड़े बड़े सङ्कट होंगे।

ह०—सङ्कट की परवा करने से प्रेम नहीं किया जा सकता। जिसने प्राण से चाहा है उसको आफत विपत का डर करने से नहीं चलेगा।

अब मस्तिष्क चुप रह गया। उस से कुछ कहते नहीं बना।
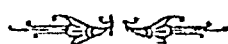
[११]

पहली भेंट।

स्टीमर घाट पर जाने को कह कर सुरेश सन्ध्या के नन्द-लाल के घर से बिदा हुए थे। काशीनाथ बाबू के बगीचे के सामने जब पहुंचे तब उन्होंने अपनी उपास्य देवी को उस में नहीं पाया। अब उन्होंने मन में ठीक किया कि इतने दिन पर जब आया हूं तब अपनी प्रेमिनी को देखे बिना एँड़दह से नहीं जाऊंगा।

अब सुरेश की आंखें जिधर ले गयीं उधर ही चलने लगा लेकिन उस के पांव विभ्रान्त सुरेश को बहुतेरी अनजान गलियों में घुमा फिरा कर संध्या की अंधियारी में फिर काशी बाबू के बगीचे के पास ले आये, और वहां उन्होंने आकर कह दिया "अब हम लोग नहीं चल सकेंगे।" डाकुओं से घूस खाकर बिश्वासघाती कहार अपने सवार को सङ्कट

की जगह पर छोड़कर इसी तरह भाग जाते हैं। सुरेश के पांव भी क्या जानें किसी से घूस ले कर ऐसा करते हों ?

सुरेश ने अब घोरान में दबाकर फाँफर किया और कठिनता से धीरे धीरे भीतर घुस गये। वह तो अब रास्ते पर पड़े नहीं रह सकते थे। उनके मन में अनधिकार प्रवेश का भय नहीं हुआ। प्रेम की बढ़ती से मन का सब डर भय दूर हो जाता है। सुरेशचन्द्र ने उस सुनसान बगीचे के एक शान्त भाग में उज्ज्वल नक्षत्र जड़े विशाल सामियाने के नीचे प्रकृति के अपने हाथों बनाये हुए हरे गलीचे पर अपनी देह डाल दी।

उस सेज पर सोकर सुरेश को नींद तो नहीं आयी लेकिन तरह तरह के वह सपने देखने लगा। प्रेम के प्रभाव से जागता हुआ आदमी भी स्वप्न देखता है। प्रेम ही असल में जादूगर है वह कल्पना का परदा डाल कर वास्तविक का लोप कर देता है।

सुरेश आँखें बन्द कर के अपनी अनामिका प्रेमिनी को देख रहा था। प्रेमी आँख मूदने ही पर अच्छी तरह देख सकते हैं। आँख खोलने पर तो उनके लिये चारो ओर अन्धेरा हो जाता है।

सुरेश को जान पड़ा कि थोड़ी दूर पर एक स्त्री चुप चाप खड़ी है। वह घास पर से उठ कर धीरे धीरे उसकी ओर चला। पास जाकर देखा तो वह छोटा सा केले का पेड़ है उसकी आंखों को भ्रम हुआ था।

लेकिन वहां से सुरेश ने देखा कि थोड़ी ही दूर पर एक झाड़ी में कुछ हिल सा रहा है। पञ्जे के बल फिर उधर को बढ़ा।

वह झाड़ी पारुल के लता कुञ्ज में थी। जब से पारुल ने चिट्ठी भूमन को लौटायी है तब से उस का हृदय दुःख, अभिमान और रंज से गर्म हो उठा है। वह उस गर्मी को ठंढक देने के लिये सन्ध्या के बाद बगीचे में घूम घाम कर उसी लता कुञ्ज में बैठी सर्द हवा खींच रही थी। वह कभी कभी उस तरह सन्ध्या के बाद भी बगीचे में आती थी।

रात अधिक गयी है देखकर पारुल अटारी के भीतर जाने के लिये उठी थी कि सुरेश झाड़ी के पास आकर कुञ्ज के द्वार पर खड़ा हुआ।

आकस्मात पारुल ने पेड़ों की ओर से उसकी पडछाईं साफ देखी। उसने अपनी फूआ से भूतों की बहुतेरी कहानियाँ सुनी थीं। सुरेश कुछ और पास आकर "मैं आया हूं।" कहने नहीं पाया था कि पारुल 'आँ, आँ" तोतलाती हुई बेहोश होकर वहीं गिर गयी लेकिन सुरेश ने बड़ी, तेजी से थाम्ह लिया इस से धरती में नहीं गिरने पायी।

थोड़ी ही देर पर पारुल होश में आ गयी। उसने देखा तो देह उस आये हुए के आलिङ्गन में है और उसका सिर है हृदय के पास।

उस आये हुए आदमी ने कहा—"तुम डर गयी। मैं तो सुरेश न हूं ?" पारुल ने सुरेश के मुंह की ओर देखा। रता की घनी अंधियारी में भी प्रेमिक दम्पति अपने भीतरी आलोक से परस्पर एक दुसरे को पहचान गये। प्रेम की भीतरी रोशनी बाहर का अन्धकार दूर कर सकती है।

युवक युवती पहली भेट के समय बालक बालिका की तरह बातें करती हैं उनको बोलने को तो कुछ रहता नहीं।

और बात आपस में करना ही होगी। इस लिये उन बातों का सिर पैर कुछ नहीं होता। अन्त को वह सब प्रेम में आ पड़ते हैं।

सुरेश ने कहा-"मैं तुम को देखने की आशा कर के आया था। मेरा आना अब सार्थक हुआ।

वा०--तो तुम मुझे चाहते हो दिल से?

"जरूर मैं तो तुम्हारे वास्ते पागल हो रहा हूं।" कह कर सुरेश ने पारुल को चूम लिया। पारुल उस के गले लगकर बोली--"इसी से तुमने चिट्ठी भेजी थी न?"

सु०--मैंने तुम्हारे वास्ते कविता लिखकर भेजी थी। तुम ने उस को लौटा क्यों दिया!

"मैं तो पढ़ना जानती ही नहीं।"

इस तरह लता कुञ्ज में दोनों ने प्रेमालाप के लिये मानो हाथ में खलो (दुध्रिया) उठायी। सुन सान लता कुञ्ज ही प्रणयी दम्पति को इस विद्या के सीखने के लिये ठीक स्कूल है। द्वापर युग में भी वृन्दावन में किशोर किशोरी इसी स्कूल में यह विद्या सीखती थीं। जगत में जब तक यह स्कूल रहेगा तब तक उपयुक्त छात्र छात्रियों की कमी नहीं होगी।

प्रेमी और प्रेमिनी जब छिपकर लता कुञ्ज में मिलते हैं तब उन के भीतर जो भेद खुल जाने की शङ्का के मारे बिजली फिरती रहती है। उसका बयान नहीं हो सकता। किसी के पाँव की आहट कल्पना कर के एक दूसरे की ऊँगली या जो पाता है दबाकर खबरदार करता है। कभी वे दोनों कुञ्ज वन के पत्ते हटाकर डरी हुई हिरनी की तरह चौंक कर चारों ओर देखते हैं कि कोई आता तो नहीं है।

सुरेश और पारुल दोनों रात के इस लताकुञ्ज में दो दिन मिले थे। मिलने के आनन्द का बहुत बड़ा समय भी उनके लिये पलक मारते ही बीत गया था। सुरेश ने अपने अनामिका का नाम सुन लिया। इस के सिवाय उसको और कुछ पूछने की जरूरत नहीं हुई।

सुरेश और पारुलने प्रण किया था कि सोते समय दोनों एक दूसरे को सपने में देखेंगे। वे दोनों अपना वचन निबाहते थे। सुरेश समझता था कि पारुल के अङ्ग प्रत्यङ्ग पर उसका पूरा दखल है। यह सब उसी की सम्पत्ति उसी का ऐश्वर्य्य है। पारुल भी समझती थी कि सुरेश के पास जो कुछ है वह सब उसी का है दोनों पर दोनों का सोलहो आने अधिकार है। इस अधिकार पर एक दिन दोनों में बहस हुई थी। सुरेश ने पारुल को कहा--' तुम मेरी हो।"

पारुल ने कहा--"मैं तुम्हारी हूं या तुम मेरे हो?" बहुत देर तक बहस होने पर भी इस का निबटेरा नहीं हुआ। प्रेम ने दोनों का आपनपन लोप कर दिया है हक़ साबित हो तो कैसे?

सुरेश और पारुल अपना यह अनिर्वनीय प्रेम अपने भीतर एकदम छिपा रखते थे। जो लोग असल प्रेमी हैं वे अपने पवित्र प्रेम की बात किसी दूसरे से जाहिर नहीं करते। उनकी मुख श्री पर प्रफुल्लता और मौनभाव खेलते रहते हैं। इस प्रेम का सोता नाले नाली, कोने अंतरे सर्वत्र भर जाने पर भी संयम भूमि से बाहर नहीं होता।
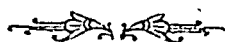
[१२]

रसिकलाल गुमास्ता ।

अब हम जरूरत देखकर एक वार पाठकों को काशीनाथ वाबू के वाग बाजार वाले मकान में ले चलते हैं। इन दिनों काशी वाबू को सुलोचना की चाल चलन पर कुछ सन्देह हुआ था।

सन्देह एक मानसिक रोग है । उम्र बढ़ने के साथ ही शरीर के चमड़े ढीले होकर सुकड़ते जाते हैं । मन भी सुकड़ जाता है। सन्देह मन का सुकड़न ही होता है। वह उमर का धर्म्म होने से आप ही आ पहुंचता है।

सुलोचना पर काशी वाबू का अविश्वास पहिले से ही था। जो मर्द चरित्रहीन और अविश्वासी है वह कभी स्त्री का विश्वास नहीं करता। स्त्री चाहे कैसी ही साध्वी हो। और सुलोचना पर तो वह विश्वास ही नहीं कर सकते। उसका मन तो किसी दिन उन से भरा ही नहीं था।

सुलोचना का जो रूप था वह हम पहले ही कह आये हैं। उसको अच्छी तरह पहचानने के लिये उसकी चढ़ती जवानी और चञ्चलता मिला लेना होगी । जैसे वच्चा हाथ में छुरी लेकर खेल करता है वैसे ही कुछ सुन्दरियां अपना रूप लेकर खेलती रहती हैं। और अक्सर आप ही आप उससे घाव मार देती हैं। सुलोचना अपना रूप लेकर खेल करना वहुत पसन्द करती थी । सोना लौंडी उसके खेल की गोइयाँ थी। इसी से वह सोना को वड़ा पियार करती थी।

घर का सब खरच वरच सुलोचना के हाथ में था। लेकिन

वह थी परदानसीन स्त्री। काशीनाथ वावू आप तो कुछ देखते नहीं थे। इस कारण रसिकलाल गुमास्ता की मारफत ही सुलोचना सब खरीद विक्री किया करती थी। इस कारण रसिक वावू की भीतर बरावर पुकार हुआ करती थी। घर के नौकर चाकर सब रसिक वाबू के हाथ में थे। होने की बात ही है। सब का तलब और रोज की जलपानी सब उसी के हाथ में था। लेकिन सोना वरावर उसका कान धरकर घुमाया करती थी और वह उसका सब सहता था। सब लोग कहते थे कि वह छोकड़ी कच्ची उम्र की है इसी से गुमास्ता महाशय की उस पर जरा नेक नजर रहती है। कोई कोई लौंड़ी इसमें भी गहरा दोष उन पर लगाती थी। काशी वावू की भागलपुरी ने सोना को दो दिन रसिक के घर से विरत रात के निकलते देखा था।

रसिक की उम्र उतनी नहीं चालीस से इधर ही थी। रङ्ग खूब साफ न होने पर भी कमल सी आँखों और मूछों की वहार देखने योग्य थी। शिकारी विड़ाल मूछ से ही पहचाना जाताहै। रसिक के मा बाप ने न जानें क्या पहचानकर उसका नाम रसिक ठीक ही रखा था। उसके भीतर रस और प्रेम पूरा था। एक तरह के प्रेमिक ऐसे होते हैं कि जो प्रेम सरोवर में कूद पड़ने पर एक दम पेंदे में पहुंच जाते हैं। फिर वे उठ नहीं सकते। रसिक इस तरह का प्रेमिक नहीं था। उसको कई बार प्रेम सरोवर में कूदना पड़ा था लेकिन हर बार पैर कर किनारे जा लगा था।

रसिक वावू पाँच वरस से काशी वावू के यहाँ गुमास्ता का काम करता है। वर्दवान जिले का रहने वाला होने कारण

उसको वह वर्दवानी कहते थे। और इसी कारण वह उन पर भीतर से जलता था। इसीसे जान पड़ता है सुलोचना की उस पर कृपा भी आ पड़ी थी। जहां मालिक मालकिन में सदा कपर-चौथ उअल रहती है वहां जो नौकर मालिक को बुरा कहता है उस पर मालकिन की नेक नजर पड़ती ही है। इसके सिवाय आजकल रसिक लाल की रसीली बातों और सुहावने मुख मण्डल पर सुलोचना का मन पसीज गया था। इस कारण जब काशी बाबू दुमदुमा की कोठी में रहते थे तब रसिक लाल की बाग बाजारवाले महल में बहुत पुकार होती थी। और उसको जरूरत बे जरूरत की बहुतसी बातों के कहने, करने और समझाने के लिये अधिक समय मालकिन के पास बिताना पड़ता था। मुखरा सुलोचना जब रसिकलाल गुमास्ता के सामने मुँह खोलती थी तब वह सहज ही बन्द नहीं कर सकती थी। मालकिन के साथ गुमास्ता बाबू का यह सब घसड़ फसड़ देखकर सोना को कुछ डाह होता था।

एक दिन रसिक लाल नोटों का एक बण्डल सुलोचना के घर में लाकर उस में से कुछ नोट निकाल निकाल कर दे रहा था। सुलोचना ने सब नोट माँगा। रसिक ने कहा—"ना मालकिन! सब नहीं दे सकता। इसी में से दो सौ का नोट मालिक ने दमदमा की कोठी पर भेजने का हुक्म दिया है।" सुलोचना ने वह बात नहीं सुनी। और हंसी ही हंसी में नोटों के लिये रसिकलाल से हाथापांही करने लगी। उसी समय सोना उस कमरे में आ पड़ी। इससे रसिक कुछ अनखाया और नोटों का बण्डल वहीं छोड़कर चला गया।

इसी घटना के बाद रसिक से सोना का एक मानसिक

संग्राम होने लगा। गुमास्ता के घर का सब काम काज सोना अपने हाथ से कर दिया करती थी। और उसी अवसर पर दोनों में मीठी बातें घुलती थीं। आजकल उस अवसर पर सोना रसिक को वचनबाण मारा करती है इस कारण जब सोना घर में आती है तब रसिक काम का बहाना करके निकल जाता है। इससे सोना और बिगड़ कर घर का काम और बिगाड़ जाती है।

जब गुमास्ताराम लौटकर आते हैं तब देखते हैं कि हुक्का बोरसी की राख में ढनगा पड़ा है। चिलम धरती में लोटकर फूट गयी है। राख इधर उधर छितरा रही है। घर में घुठना भर कूड़ा कर्कट पड़ा है।

[१२]

अन्तर्जगत में भूडोल

घर के लौंडी नौकरों में से बहुतों ने सुलोचना का ब्याह और उनको घूँघट काढ़कर बहू के रूप में उतरते देखा था। इस कारण वे लोग लहुरी मालकिन कहा करते थे। उनकी देखा देखी सोना भी उसको लहुरी मालकिन कहा करती थी। गुमास्ता रसिक लाल की भीतर दिनों दिन बाढ़ देखकर सोना मन में समझती थी कि छोटी मालकिन उसके मुँह का कवर छीनना चाहती है। उसने एक चाल चलने की मनमें ठहरायी।

एक दिन काशीनाथ बाबू को अकेले पाकर सोना ने

कहा —"मालिक आप ! गुमस्ता वावू का भीतर आना जाना वन्द कर दीजिये वह आदमी अच्छा नहीं है।"

"क्यों सोना ! क्या हुआ ?"

सो०—ना मालिक। आप माफ करें हम से कुछ नहीं कहा जायगा।

"तो कहती काहे नहीं सोना डरती काहे को है ?"

कहने के लिये ही तो सोना का मुँह खुजलाता था इसीसे उसने वात छेड़ी थी लेकिन अव जो इधर उधर कर रही थी यह उस की चाल थी।

वात सान पर चढ़ाये विना सीधी तरह कह देने से उस की धार विगड़ जाती है। और जिस पर चलायी जाती है उस का कुछ विगाड़ नहीं सकती। अन्त को काशीनाथ के वहुत कुछ कहने सुनने पर सोना वोली—"एक दिन तो मालिक मो अपने आँखन मालकिन को ये गुमास्ता से लोटों के वास्ते हाथा वाही करते देखे रही। लेकिन मालकिन का इस में कुछ दोस नहीं था जनी जाति रुपया देखे ही से लोभ होता है ! गुमास्ता वावू मर्द हैं उनको रुपया पैसा लेकर भीतर मालकिन के घर में वारवार जाना आना अच्छा नहीं लगता।"

फिर हाथ जोड़कर वोली—"लेकिन दोहाई मालिक की हमारे नाम वाम मत लें नहीं तो मोरी रोटी मारी जायगी।"

उसी दिन से उन्होंने रसिक लाल का भीतर आना जाना वन्द कर दिया। और सुलोचना से कहा—मैंने वर्दवानी का भीतर आना अव वन्द किया है। वह खर्च को रुपया

सोना के हाथ भेजेगा और तुम भी उसी के मारफत देना लेना।

सुलोचना सुनते ही गर्ज कर बोली —"क्या तुम हमारा विश्वास नहीं करते ?"

का०—नहीं यह बात नहीं। मैंने सुना वह वर्दवानी अच्छा आदमी नहीं है। वैसे लज्भड़ के भीतर आने जाने से वदनामी होती है।

सु० —वाह ! मैं स्त्री जाति ठहरी इतने बड़े खान्दान का खर्च बर्च और सब काम काज गुमाश्ता से कहना पड़ता है। वह भीतर नहीं आने पावेगा तो उस से काम काज होगा कैसे ?"

का०—अच्छा अगर ऐसा ही है तो कहो उस को जवाब दे दूँ और एक तोहफ़ा बूढ़ा बुलाकर उसी को गुमाश्ता कर दें।

इस बात से तो सुलोचना डर गयी। एक नौकर के बदले दूसरा नौकर मिल सकता है। आफ़िस की कुर्सी कर्म्म-चारी के बदले दूसरे के आने से भर सकती है लेकिन आदमी बदलने से हृदय की खाली जगह दूसरे आदमी से नहीं भर सकती। सुलोचना जानती ही थी कि रसिक ने उस के हिये में जगह कर ली थी। अब उसको डर हुआ कि वह जगह कहीं खाली न हो जाय। बोली-"हाँ नये गुमाश्ते के आने से काम तो चलही जायगा लेकिन कसूर क्या हुआ कि एक पुराने आदमी की रोटी मारी जाती है"

का० —नहीं मैं उसकी रोटी नहीं मारना चाहता।

लेकिन चाहता यही हूं कि वह लज्झड़ भीतर नहीं आने पावे।

सु०—तो अच्छी बात है ऐसाही कीजिये।

उस दिन सुलोचना के अन्तर्जगत में भूडोल आया था, काशी बाबू को भी उस का धक्का कुछ कुछ मालूम हुआ था। सुलोचना अपने मन का भाव छिपा नहीं सकी। कोई कोई स्त्री इस काम में महा अपारग होती है।

सोना ने समझा कि एक ही ढेले से उस ने दोनों कौवे मारे हैं। लहुरी मालकिन और गुमाश्ता बाबू दोनों को खूब ठीक कर दिया है।

खान्दानी बड़े आदमियों में चाहे वे खुद कैसे ही हों पारिवारिक पवित्रता रखने की ओर कभी कभी उनका बड़ा हठ देखा जाता है। काशीनाथ बाबू ने तीन दिनों तक दमदमे की ओर मुंह नहीं किया। घर ही पर रहकर यह देखते रहे कि उन्होंने जो नया बन्दोबस्त किया है वह कैसा चलता है। सोना अब अन्दर महल का हुक्म लेकर बराबर गुमाश्ता के पास पहुंचने और ताने का बेत हाथ में लेकर उन की पीठ पर देने लगी। वह उन को कहती थी–"काहे साहब! लहुरी मालकिन के पास नहीं जायेंगे!"

लेकिन सुलोचना का खन खन झन झन देखकर काशीनाथ बाबू ने समझ लिया कि दम दमा की ओर जाते ही नये बन्दोबस्त का दम छूट जायगा। नौकर चाकरों के पहरे से कुछ होना हवाना नहीं है। इसीलिये आप ही ऍंड़दह जाकर उसी दिन लड़की और बहन को ले आये।
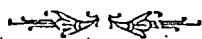
[१४]

अदर्शन ।

अब पारूल को पिता के साथ बाग बाजारवाले मकान में आना पड़ा। वह सुरेश को कुछ ख़बर नहीं दे सकी। देने का कुछ उपाय भी नहीं था। उनका परस्पर परिचय भी बहुत नहीं हुआ था न आपस का उतना खाता खुला था। पारूल ने कहा था। उसके बाप हैं फूआ है लेकिन उसने यह नहीं कहा था कि बाप का नाम काशीनाथ बोस है। क्योंकि वह सब कहने का अवसर नहीं आया था। पारुल भी नहीं जानती थी कि सुरेश का मकान कहां है और उसके कौन कौन हैं? केवल दो दिन उसी बगीचे में उन का मिलान हुआ था। उन दोनों दिनों तक उनमें केवल प्रेम की बातें भर होती ही थीं।

सुरेश सन्ध्या के बाद ठीक समय उसी बगीचे के लता कुञ्ज में पहुंचा! देखा तो आज पारुल खड़ी उसकी राह नहीं देखती। मन में उसने समझा कि आज कुछ पहले पहुंचा है। बस वहीं बैठकर अपनी प्यारी की राह ताकने लगा। पाव घंटा बीता, आधा घंटा बीता, घंटा बीता लेकिन पारुल नहीं आयी। सुरेश को चिन्ता हुई उसके मिनट घंटे के समान बीतने लगे। इसी तरह रात बहुत गयी। चाँद डूब गया लेकिन सुरेश का उधर ध्यान ही नहीं गया। वह पारुल के पाँव की आवाज़ सुनने के लिये कान लगाये था लेकिन उसके कानों में केवल झिल्ली और झींगुर की ही झनक आती रही।

सुरेश अब उठ खड़ा हुआ। इधर उधर चारों ओर नजर दौड़ाने लगा। लेकिन पेड़ों की डालियां, पत्ते और लताओं के सिवाय और कुछ नहीं दिखलाई दिया। अब वह लताकुञ्ज

से निकलकर बाहर आया तो देखता है कि कुछ दूरी पर मालियों के घर में चिराग़ जल रहा है। वह धीरे धीरे पञ्जे के बल उधर ही को चला। चलते चलते उसके पांव के पास ही से खर खराकर साँप की तरह कुछ निकल गया। और समय होता तो "बाप रे बाप" करके सुरेश कूद जाता। डर और क्रोध भी मौका देखा करते हैं।

सुरेश ने मन में सोचा कि पारुल जान पड़ता है बीमार हो गयी इसी से आज नहीं आयी है। अब उसने अटारी की ओर देखा तो किसी भी खिड़की जंगले से रोशनी नहीं दिखाई दी। उसके मन में विस्मय हुआ कि ऐसा तो होना नहीं चाहिये।

जब सुरेश मकान के पास गया तब मालूम हुआ कि उस घर में कोई नहीं है। सदर दरवाजे पर धीरे धीरे पहुंचने पर देखता है तो बाहर से ताला बन्द है। अब मन में सोचने लगा-"यह क्या हुआ! क्या इस घर से वे लोग चले गये। लेकिन जाने की बात उसने बतलाया क्यों नहीं। वह बिना कहे क्यों चली गयी। वह तो ऐसी बेदर्द नहीं थी। उसके प्रेम में तो कुछ कलाम नहीं है।" अब सुरेश का सिर चिन्ता के मारे चकराने लगा। क्या करना चाहिये सो भी ठीक नहीं कर सका। लेकिन इस तरह दरवाजे के सामने बहुत देर तक रहना भी ठीक नहीं है। इसके सिवाय यहां छिपने के लिये भी कोई जगह नहीं देखी। केवल एक शिवाला देखा उसके दरवाजे पर भी ताला बन्द पाया। लेकिन भीतर चिराग़ टिम टिमाता देखकर समझा कि पुजारी सन्ध्या की आरती कर के ताला बन्द कर गया है।

उस रात के मालियों के पास जाने के लिये सुरेश को साहस नहीं हुआ। इस कारण बगीचे से बाहर होकर धीरे धीरे स्टेशन की ओर चला। कोई घंटा भर चलकर जब स्टेशन पहुंचा। देखा तो घड़ी में एक बजा है। कलकत्ता आने के लिये कोई गाड़ी नहीं थी। होती तो भी पारुल का पता पाये बिना सुरेश का कलकत्ता लौटना नहीं हो सकता था।

सुरेश स्टेशन को आया था, खाली रात काटने के लिये और साटफार्म पर टहलकर, कभी बेञ्च पर बैठकर, रात बीतने की राह देखने लगा। बेञ्च पर लेटा तो भी नींद नहीं आयी। एक बार भोर होते होते आंख झप गयी। सपने में वह पारुल को देखने लगा। झट चौंककर उठ बैठा। भूखे और उनींदे सुरेश को सवेरे की प्राकृतिक छवि कुछ आकर्षित नहीं कर सकी। ट्रेन की घरघराहट और लोगों की बक बक में वह सब जाता रहा।
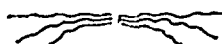
[१५]

विफल प्रयास।

सवेरा होने पर सुरेश स्टेशन से नन्दलाल के मकान को न जाकर काशीनाथ बाबू के बगीचे को लौट गया। उस समय सात बज गये थे। बगीचे से एक माली बाहर आ रहा था उससे सुरेश ने पूछा—"क्यों माली यह बगीचा किस का है ?"

मा०—काशी बाबू का है।

सु०—काशी बाबू रहते कहां हैं !

मा०—कलकत्ता रहते हैं।

सु०—कलकत्ता किस महल्ले में।

"वाग वाजार के काशी वाबू को आप नहीं जानते ? वह तो वहुत वड़े आदमी हैं। वहुत मकान कोठी जमीन है कल्ह यहीं आये थे। लड़की और वहन को साथ ले गये हैं।"

सु०—किस गली में कौन नम्बर का मकान है।

माली यह सव नहीं वतला सका। लेकिन पूछा कि आप को क्या काम है?

सुरेश भी अपना काम नहीं वतला सका। उसके गुप्त प्रेम की रामा गती हो रही है किन्तु अभी उसके लिये उसने झूठ वोलना नहीं सीखा है। माली ने उसका नाम गांव पूछा वह भी उसने नहीं वतलाया तव माली कुछ नाराज होकर चला गया।

सुरेश ने समझ लिया कि काशी वावू ही पारुल के पिता हैं। उन्हीं के साथ पारुल वागवाज़ार वाले मकान में गयी है। यही समझ वूझकर वह स्टीमर से कलकत्ते के लिये रवाना हुआ।

उस दिन से सुरेश रोज़ वागवाजार में कावा देने लगा। थोड़े ही दिनों में उसकी गलियों और वड़े वड़े मकानों का पता पा गया। उन मकानों के ऊपर वाले खिड़की जंगलों पर ही उसकी वरावर नजर रही। आशा यह थी कि क्या जानें किसी में से पारुल का मुखचन्द्र आंखों तर आ पड़े।

मन में सङ्कोच आता था और काशी वावू का पूरा नाम मालूम नहीं था इस कारण किसी से पूछने का साहस नहीं हुआ। इसी तरह मँड़राकर निराश भौंरे की तरह गुलाव की डालियाँ छोड़कर रोज सुरेश अपने अड्डे को चला आता था।
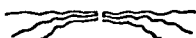
[१६]

विरह का बड़ा पिंजड़ा ।

पहले सुरेश को आनन्द था। उसको आशा थी। उत्साह था। कल्पना उसके हृदय गगन में इन्द्रधनुष का उज्ज्वल चित्र उतारा करती थी। पारुल से भेट होने के बाद से उसकी आँखों में यह संसार एक बहुत बड़े हीरे की तरह सदा चमकने लगा था। अब पारुल के खो जाने पर उसका दिन वह नहीं रहा। निराशा के साथ अवसाद आने से उसके हृदय में अन्धकार छा गया है। उसको अब कुछ भी अच्छा नहीं दीखता। काम काज में मन नहीं लगता। अकेले रहना भी पसन्द नहीं। प्रकृति की शोभा उसके मन को आनन्दित नहीं करती। पहिले उसकी सब चिन्ताओं में सुख था अब उसको चिन्ता है लेकिन सुख नहीं। वह विरह के बड़े पिंजड़े में दुःखी मन से दिन बिताने लगा।

पारुल को देखे बिना सुरेश के हृदय नभ में दिनों दिन अंधियारी होती जाती थी। अब उस आकाश में केवल चमकते हुए तारे ही उसकी प्रेमिनी के यादगार थे। अँधियारी जितनी बढ़ने लगी तारे उतने ही उज्ज्वल होने लगे।

किसी किसी कवि ने प्रेम को एक तरह का रोग कहा है। जिसको यह रोग होता है उसके मन से कर्त्तव्यज्ञान और जरूरी कामों की चिन्ता थोड़ी बहुत हट जाती है। इस रोग से पीड़ित सुरेश बहुत दिनों से कमरहट्टी के मजदूर मण्डल और रात्रि पाठशाला की बात भूल गया था। लेकिन अभी कमरहट्टी को जाया करता था। क्योंकि उसी रास्ते में पारुल का बगीचा था। आशा थी कि अगर पारुल वगैरः का

बगीचे की कोठी में फिर आना हुआ तो दर्शन हो जायगा। लेकिन आशा टूटने से उसका एँड़दह जाना भी बन्द हो चला।

कोई रोग एक ढङ्ग से बहुत दिनों तक नहीं रहता। या तो वह आराम हो जाता है या बढ़ जाता है। प्रेम अगर रोग हो तो विरह उसका सन्निपात समझना चाहिये। आज तीन महीने तक पारुल के विरह से सुरेश को सन्निपात का कुछ विकार दिखाई दिया था। आज एक महीने से कलकत्ते के स्कूल कालिज गर्मी की छुट्टी में बन्द हैं तो भी सुरेश इस अवसर में एँड़दह नहीं गया। वह नन्दलाल को भी एक तरह से भूल ही गया था। नन्दलाल ने सुरेश को तीन चार चिट्ठियाँ लिखीं तब एक का जवाब आया। उसमें सुरेश ने संन्यासधर्म ग्रहण करने की इच्छा जाहिर की थी।

[१७]
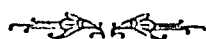
गरज वाला बावला।

सुरेश के मिजाज का यह फेर बदल हेमाङ्गिनी समझ रही थी। उसने झूमन के मुंह से उसकी बगीचे वाली बहन की बातें सुनी थीं। वह उसको बहुत मानती है। उसको फल फलहरी देती है। उसकी फूआ के लिये बेलपत्र तोड़ देने पर वह पैसा पाता है। उसकी वह बहन देखने में खूब सुन्दर है, यह सब झूमन हेमाङ्गिनी से कह चुका था। उसने बातोंही बात में एक दिन हेमाङ्गिनी से यह भी कह दिया कि सुरेश बाबू ने उसको वहां बगीचे में जाने से मना कर दिया था। फिर एक दिन वहां का माली आकर उसे पकड़ ले

गया। इतना कहने पर भी झूमन ने वह चिट्ठी वाली वात नहीं कही।

एक दिन हेमाङ्गिनी ने झूमन से सुना कि उसकी वगीचे वाली वहन एड़दह से वहुत दिन हुए कहीं चली गयी। इतना सुनतेही हेमाङ्गिनी का माथा ठनका। वह सोचने लगी कि झूमन की वगीचेवाली वहन के भागने और सुरेश के एँड़दह में आना जाना वन्द करने से कुछ लगाव है या नहीं? फिर उसने सोच विचार कर यही ठीक किया कि इन घटनाओं में ऐसा कुछ सम्वन्ध नहीं होगा।

इसी समय एक आदमी ने "झूमन झूमन" कहकर जोर से पुकारा जव वह वाहर आया देखा तो उसकी वगीचेवाली वहन का माली है। उसके हाथ में चिट्ठी देकर वह चला गया। हेमाङ्गिनी सव देख रही थी। झूमन के हाथ में चिट्ठी देखकर पूछने लगी--"यह किसकी चिट्ठी है?"

उसने कहा —"उसी वगीचे वाली वहिन का छोटा माली दे गया है। वही पुकारता था। यह सुरेश वावू को देने के वास्ते है।" लेकिन हेमाङ्गिनी ने कहा--"तो चिट्ठी दे मैं रखूं। तू भुला देगा। जव सुरेश आवेंगे मैं उनको दे दूंगी।"

झूमन चिट्ठी देकर चला गया तव हेमाङ्गिनी ने देखा कि वह मोड़ा हुआ पुरजा है। वन्द लिफाफे में है नहीं। खोल कर देखा तो वड़े वड़े टेढ़े मेढ़े अक्षरों में लिखा थाः--

"हमारे वाग़ वाजारवाले खिड़की वगान में रात के दस वजने पर जरूर जरूर आना। तुम्हारी पारुल।"

क़ागज लेटर पेपर था उसके सिरे पर वायीं ओर काशी नाथ वसु का नाम और दाहिनी ओर मकान का नम्वर और

महल्ला नीली स्याही से छपा था । बीच में लाल स्याही का मोनोग्राम था ।

हेमाङ्गिनी चिट्ठी पढ़कर मन में हंसने लगी। यहां कुछ पहले की बात कहना जरूरी है । पिता के साथ जब पारुल कलकत्ते बाग बाजारवाले मकान में आयी तब वह सुरेश को खबर देने के वास्ते बहुत व्याकुल हुई थी। पँड़दह के माली बगीचे से फल और तरकारी लेकर हर हफ्ते आया करते थे। उनसे पारुल झूमन की बात पूछा करती थी । वे सब बराबर यही कहते थे कि झूमन से तो भेंट ही नहीं हुई । तब पारुल ने समझा कि मालियों के हाथ से सुरेश को सीधे खबर देना नहीं हो सकता।

अब लाचार होकर पारुल ने सोना को किताबों की दूकान पर भेजा और वर्णपरिचय पहिला, दूसरा भाग और शिशुबोध खरीद मंगाया। फिर सब काम छोड़ कर बड़ी तेजी से पारुल सुलोचना से पूछ पाछ कर लिखना पढ़ना सीखने लगी। गरज बड़ी बावली होती है। उसने दो ही महीने में उन तीनों किताबों को खतम खर डाला। जब सीख चुकी तब रद्दी सद्दी कागज पर हाथ बिठाकर उसने अपने बाप के चिट्ठी वाले कागज का बण्डल खोला और उसी पर वह ऊपर लिखी बातें लिखकर छोटे माली के हवाले कर दी और धीरे से कह दिया कि झूमन को देना कि वह सुरेश बाबू को दे आवे ।

छोटा माली झूमन के साथ कईबार उसके घर गया था। झट बगीचे पहुंचकर उसने सब से पहले वह चिट्ठी झूमन को पहुंचा दी। और वही चिट्ठी हेमाङ्गिनी के हाथ पड़ गयी।

लेकिन वह वड़े गम्भीर स्वभाव की थी। उसने चिट्ठी की वात किसी से जाहिर नहीं की।

[१८]

झूमन की बे अदबी।

इस घटना के कई दिन वीत जाने पर हेमाङ्गिनी के मुहल्ले की कई स्त्रियाँ बाग़ बाजार के मदन मोहन का दर्शन करने आयीं। उनमें हेमाङ्गिनी भी थी। उसी अवसर पर सुरेश की मनोमोहिनी का दर्शन करना ही उसका मतलव था। इस लिये साथ में झूमन को भी पहचान करने की गरज से लायी थी।

मदन मोहन का दर्शन करके हेमाङ्गिनी ने अपनी सङ्गिनियों से थोड़ी देर के लिये परवानगी ली और झूमन के साथ जाकर सहज ही काशीनाथ वावू का मकान ढूंढ लिया। लेकिन भीतर जाने से पहले झूमन को समझा दिया कि चिट्ठी की वात पूछने पर कह देना कि पास रखे हैं जव सुरेश वावू आवेंगे तव दे दी जायगी। ख़वरदार यह मत कह देना कि मुझे तू ने चिट्ठी दे दी है।

अव हेमाङ्गिनी और झूमन वाहरी दालान पार कर के भीतर गये। सोना ने हेमाङ्गिनी से पूछा—"कहाँ से आयी हो तुम लोग?"

हेमाङ्गिनी वोली—"आयी तो हम लोग एड़दह से थी मदन मोहन का दर्शन करने के लिये। अव पारुल से भेट करना चाहती हूं।"

इतने में पारुल ने ऊपर के वरण्डे से झूमन को देख लिया और झट नीचे उतरकर उन लोगों को आदर मान से बिठाया। झूमन बोला—"वहन यह हमारे नन्दलाल बाबू की वहिन हेमाङ्गिनी वहिन हैं। सुरेश बाबू इन्हीं के घर आया करते हैं।"

हेमाङ्गिनी के सामने ही वे अदब झूमन ने सुरेश बाबू का नाम ले दिया इससे लज्जा के मारे उसका चेहरा लाल हो आया। लेकिन हेमाङ्गनी ने ऐसा भाव दिखाया कि उसके कान में मानों वह सुरेश की बात ही नहीं गयी। उसने झूमन की बात ढाक कर पारुल से कहा—"तुम झूमन की वहन हो। झूमन हम को वहन कहता है इस वास्ते मैं तुमारी वहन हुई।"

इस बात से पारुल को बड़ी खुशी हुई। वह नयी वहन को अपनी फूआ के कमरे में ले गयी। कृपामयी ने हेम और झूमन को जलपान कराया और कहा-"जब हम लोग एड़दह के बगीचे में जायँगे तब तुम वहां जरूर आना बेटी। झूमन ने कोठी देखी है। तुम उसी के साथ आना जरूर।

इसके बाद पारुल हेमाङ्गिनी को अपनी मयभा सुलोचना के कमरे में ले गयी। हेमाङ्गिनी का मिज़ाज बड़ा मिठ बोलवा और मिलनसार होने से वह सुलोचना से भी वहुत देर तक घुल घुल कर बातें करती रही।

जब सुलोचना ने सुना कि हेमाङ्गिनी पहले कृष्णनगर रहती थी तब बोली—"कृष्ण नगर में हमारी वहन है। वहाँ के सरकारी वकील राधवल्लभ बाबू हमारे बहनोई लगते हैं।" उन का नाम सुनते ही हेमाङ्गिनी चौंकी लेकिन सुलोचना उस का वह भाव समझ नहीं सकी।

इधर झूमन ने मौका पाकर सब घर द्वार देख डाला और खिड़की वगीचे में पहुंच कर एक अमरूद के पेड़ पर

चढ़ा फल खा रहा था। पारुल ने वहाँ जाकर अकेले में उससे चिट्ठी की बात पूछी। उसने हेमाङ्गिनी का ही सिखलाया हुआ जवाब दे दिया।

पारुल के घर से विदा होने के पहले हेमाङ्गिनी ने इतनी बातों का पता पा लिया। पारुल के पिता बड़े आदमी हैं। पारुल ही उनकी एकलौती लड़की है। उस सुन्दरी कन्या की छुटपन में शादी हुई थी। व्याह के एक ही वर्ष के भीतर वह राँड़ हो गयी। पारुल की माता जीती नहीं है उसकी मयभा बड़ी मुखरा है वह पारुल को देख नहीं सकती।
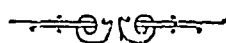
[१६]

सुरेश का इकरार।

इसके बाद जब पञ्चानन बाबू कमरहट्टी में आये तब हेमाङ्गिनी ने पारुल की वह अजीब चिट्ठी दिखलायी। और यह भी कहा कि सुरेश ने अब आना जाना छोड़ दिया है। पारुल को देखने जाकर हेमाङ्गिनी ने जो कुछ पता पाया था यह भी मामा से सब कह सुनाया। पञ्चानन ने सब सुनकर हंस दिया। उन्हों ने हेमाङ्गिनी से इस बारे में बहुत बातें नहीं कीं।

पञ्चानन बाबू सुरेश को जी से स्नेह करते थे। वह पहले से ही समझते थे कि इस कोमलहृदय चिन्ताशील सुन्दर युवक के मन में रमणी का प्रेम सहज ही घुस सकेगा। पाँचू बाबू व्याह के पहले वर कन्या में प्रीति बढ़ने के विरोधी नहीं थे। वह कहते थेः—"हिन्दू समाज में प्रेम सञ्चार होने के पहले व्याह होने की रीति चलने के कारण दाम्पत्य जीवन का

Romance नाश हो गया है। इसी कारण प्रेम का चित्र आँकने के लिये हमारे उपन्यास लिखने वालों को "विधवा होय पाय तरुणाई" वाली कुन्दनन्दिनी रांड़ों या विजातीय आयेषा जुलेखाओं को घसीटना पड़ता है। इसलिये और कारणों को छोड़ देने पर भी हम लोगों को साहित्य की यह कमी दूर करने के लिये अपने समाज में love marriage और late marrige जारी करने की जरूरत है।"

पञ्चानन कलकत्ता आकर ही एक दिन सुरेश के मेस में जाकर उससे मिले। उस दिन उन्हों ने पहले घर द्वार की बात छेड़ी कहा—"इस साल तुम गर्मी की छुट्टी में सुरेश घर क्यों नहीं गये। मा कैसी हैं?"

"मा अच्छी हैं ख़बर मिली है। घर जाने का मन नहीं किया इसी से नहीं गया।"

"अब तुम्हारा ब्याह हो जाना चाहिये। आज स्त्री घर में रहती तो तुम दौड़े गये होते।"

सुरेश ने हंसकर कहा—'नहीं मैं ब्याह नहीं करूंगा। चिट्ठी घर से आयी थी कि शादी मेरी ठीक हो रही है मैंने लिख भेजा है कि ब्याह नहीं करूंगा।"

"क्यों ब्याह नहीं करोगे? क्या जिन्दगी भर क्वारे रहने का ठीक कर लिया है?"

सु०—ब्याह नहीं करने में क्या कुछ हरज है? आपने तो मामा जी ब्याह किया ही नहीं।

"देखो सुरेश! मेरे दिल में कभी स्त्री के प्रेम की गुजर नहीं हुई। लेकिन मैं कभी किसी स्त्री के प्रेम में पड़ता तो जरूर ब्याह करता। अगर तुम भी मेरी तरह स्त्री से अलग

रह सकते हो तो मैं तुम को व्याह करने के लिये नहीं कहूंगा।"

पाँचू मामा की यह बात सुनकर सुरेश चुप हो गया। मामा फिर बोले—"जो काम काज की मिहनत से दूर होकर अकेले अपनी चिन्ता में रहना पसन्द करता है, प्रकृति की सुन्दरता देखकर जो अपने को भूल जाता है, जो स्वभावतः संसार के सब प्राणियों को आलिङ्गन करना चाहता है, रमणी का प्रेम उसको सहज ही वर कर लेता है। देखो सुरेश मैं बराबर देखता हूं कि तुम में ये सब पूरे लक्षण हैं और मुझे पूरा भरोसा है कि तुम रमणी प्रेम के बन्धन में जरूर पड़ोगे। अगर कभी तुम इस फन्दे में पड़ो तो हजारों बाधा विघ्न लाँघकर तुम को उसे व्याह कर लेना होगा।"

सुरेश ने पूछा-"विशुद्ध प्रेम से व्याह का क्या सम्बन्ध है?" पाँचू मामा ने कहा—"विवाह दाम्पत्य सम्बन्ध का सामाजिक अनुमोदन है। समाज के इस अनुमोदन बिना पवित्र प्रेम का सम्बन्ध भी पाप सम्बन्ध हो जाता है।

मामा ने यह भी दिखलाया कि क्वारे प्रेमिक दम्पति को अपना प्रेम सम्बन्ध छिपाकर रखना होता है। उसको गुप्त परकीया प्रेम कहते हैं। उसको उन्मादन बहुत अधिक होता है। इसकी चिन्ता में आदमी जब बढ़ते बढ़ते तन्मय हो जाता है तब एक तरह से यह तन्मयत्व उसको पागल और निकम्मा बना देता है। कर्म्म चिन्ता के समय मग़ज चलाना पड़ता है। सभी चिन्ताएं बुद्धि के साथ क्रीड़ा करती हैं। इन में एक से दूसरे का कुछ बिगाड़ नहीं होता। लेकिन चिन्ता जब गहरे से गहरे पहुंच कर तन्मय के हाते में जा खड़ी होती है तब मस्तिष्क में अवसाद आता है। बुद्धि वृत्ति लोप हो जाती

है। और सब ज्ञानेन्द्रियों पर वन्धन पड़ जाता है। भाव और भावना में यही अन्तर है। भावना है ज्ञान का अनुशीलन और भाव के नशे में यह ज्ञान संज्ञाहीन हो जाता है।" सुरेश यह सब बातें शान्त मन से सुनता रहा था।

पांचू बाबू कहते चले—"गुप्त परकीया प्रेम के नशे में बदहवास होकर कितनेही आत्मघात कर लेते हैं। विक्टर ह्यूगो ने कहा है—'By continually going out for reverie, there comes a day when you go out to throw yourself into the water!' * चैतन्यदेव अपने काल्पनिक परकीया प्रेम में आत्मविभोर होकर समुद्र में कूद पड़े और वहीं शरीर छोड़ दिया था। मैं इसको आत्म-घात के सिवाय और कुछ नहीं कहता। इस कारण मैं समझता हूं व्याह जब तक न हो जाय तब तक प्रेमिक दम्पति को कर्म्म का अधिकार नहीं होता। व्याह रूप सामाजिक अनुमोदन से ही वे लोग परकीया प्रेम को स्वकीया और संयत करके कर्म्ममार्ग में पाँव रखते हैं।

सुरेश को वृथा तर्क का लोभ नहीं था। उसने पाँचू मामा से हार मान ली और इकरार किया कि जरूरत पड़ने पर व्याह कर लेगा। लेकिन मन में उस ने कहा–" "मैं पारुल को छोड़कर और किसी से व्याह नहीं करूंगा।' लेकिन पारुल कहां है। कैसे उसको पत्नीरूप में पावेगा यह सब सुरेश ने कुछ

* सदाविभोर होकर भटकते रहने से एक दिन तुमको पानी में कूद पड़ना होगा।

नहीं सोचा। पञ्चानन वावू उसको एँड़दह नन्दलाल के मकान पर एक वार आने को कहकर चले गये।
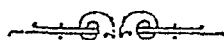
[२०]

सन्यास की जरूरत नहीं।

व्याह का इकरार करके सुरेश ने समझा था कि उसकी जिन्दगी का एक निवटेरा हो गया है। उसने सपने में देखा कि साधारण ब्रम्ह-समाज में पारुल से उसकी शादी हो रही है। और आचार्य के आज्ञानुसार वह "सम्पद विपद में सुख दुःख में—"आदि का मंत्र पढ़ रहा है। जो हो इस सपने के वाद उसका चित्त कुछ स्थिर हुआ था। इसी से आज रविवार को वह कमरहट्टी नन्दलाल के मकान पर पहुंचा।

एँड़दह में वगीचे से होकर जाती वेर उसने पारुल के मालियों से दो एक वात कहने का इरादा किया था लेकिन वहाँ पहुंच कर उसने देखा तो मालियों के दरवाजे भी ताले से से वन्द पड़े हैं। सुरेश ने समझा कि अव पारुल की सव खवर, खासकर उसके सम्वन्ध में जो कुछ है सव पर धीरे धीरे ताला पड़ता जा रहा है। निदान निराश होकर सुरेश नन्दलाल के मकान पर पहुंच गया।

उस दिन चटकल वन्द था तौ भी नन्दलाल या झूमन कोई घर नहीं था। नन्दलाल की मा भी पड़ोस में एक जान पहचानवाले के यहां गयी थी। अकेली हेमाङ्गिनी थी। उसने कुशल मङ्गल पूछकर आदर से चटाई बिछायी।

जब सुरेश बैठ गया। इतने दिन न आने का कारण हेमाङ्गिनी ने कुछ नहीं पूछा। सुरेश ने भी मन में कहा–"जान बच गयी।" फिर इधर उधर की बातें करके हेमाङ्गिनी ने कहा—

"काहे सुरेश भैया ! तुमने हाल की चिट्ठी में लिखा था कि संन्यासी होने का मन है। तुम्हारे नाम से एक चिट्ठी यहां बहुत दिनों से आयी पड़ी है। तुम आये नहीं इसी से नहीं दे सकी। पढ़ने पर तो मैं समझती हूं तुम को गेरुआ पहनकर संन्यासी बनने की जरूरत नहीं पड़ेगी।"

यही कह हेमाङ्गिनी ने भीतर से पारुल की चिट्ठी लाकर दे दी। सुरेश ने बड़ी उत्कण्ठा से पूछा–"चिट्ठी किसने लिखी है।"

जवाब में चिट्ठी ही पाकर उसने पढ़ी। पढ़कर वह मन में लज्जित हुआ। हेमाङ्गिनी ने कहा—

"इस चिट्ठी को जिसने लिखा है उसको मैं बागबाज़ार जाकर देख आयी हूं। वह घर की पूरी लक्ष्मी है। रूप और गुण से वह तुम्हारी स्त्री होने के लिये पूरे तौर से योग्य है। तुम चाहो तो उसको व्याह भी सकते हो वह विधवा है। विधवा विवाह की बातें तो आज कल बहुत सुनी जाती हैं। मैं खुद वहाँ जाकर उसकी बहन हो आयी हूं। इस लिये व्याह के समय उसका कन्यादान करने का भार मेरे ही ऊपर रहेगा।"

सुरेश ने लजाकर कहा—" छिः छिः यह तुम क्या पागलों की सी बात करती हो बहन ?" यह कहकर चिट्ठी तो उसने जेब के हवाले कर दी। और इधर उधर की बातें करने लगा। हेमाङ्गिनी ने भी उसको अब और लजाना ठीक नहीं समझ कर पारुल की बात छोड़ दी।

[२१]
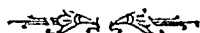
भोग से लालसा बढ़ती है।

वर्त्तमान ही भविष्य को बच्चे की तरह गर्भ में धारण करता है। ऐसा समझना चाहिये कि कल जो होने वाला है अदृश्य में आज उसकी सूचना हो गयी है। कुम्भकार रूपी भगवान काल के चाकपर घुमा कर घटना वैचित्र्य की मिट्टी से सृष्टि का सिरजन करते हैं।

उसी समय अगर काशीनाथ बाबू बर्दवानी को जवाब दे देते तो सुलोचना के हक में अच्छा ही होता लेकिन वह बात नहीं हुई। प्यास का पानी बाहर रहा और भीतर तृषा के मारे सुलोचना की छाती फटने लगी। यह यातना भला कौन सह सकता है?

सुलोचना भीतर से रसिक देव के लिये बड़े यत्न से खूब आरती देने लगी। उनके खदोने में बढ़िया बढ़िया चीजें और खूब तर माल जलपान के लिये आने लगा। रात के उनकी थाल के पास न जाने कहां से एक कटोरा असल दूध और रबड़ी आ पहुंचती थी। सोना की इन बातों पर बड़ी नजर थी। वह समझ रही थी कि यह सब लहुरी मालकिन के ही इशारे से हो रहा है। इस हालत में दूसरे को दोष देना ठीक नहीं है।

काशी बाबू अब दुमदुमे की ही कोठी में पड़े रहते हैं यहाँ उतना आते नहीं। सुलोचना स्वामी की सेवा करने का सुअवसर नहीं पाती। उधर पारुल को तो वह देख ही नहीं सकती थी। इस कारण ऐसा एक आदमी तो चाहिये जिसको आदर मान और यत्न से खिला पहनाकर मन में सन्तुष्ट

होती। और कोई जब नहीं मिला तब रसिक ही को उस गद्दी पर बैठना पड़ा। रसिक बाबू इसको अपना सौभाग्य ही समझते थे। और इसी सौभाग्य से यह राजभोग उनको नसीब हो रहा था।

भोग से लालसा बढ़ जाती है। रसिक की भी सब लालसा बढ़ने लगी। वह जहाँ तक बना मालिक का धन हड़पने लगा। दूसरी लालसा उसकी सुलोचना पर पड़ी। यह लालसा सुलोचना ने आप ही बढ़ा दी थी। और किस किस उपाय से बढ़ाया था सो यहां कहने की जरूरत नहीं पड़ेगी।

कृपामयी अपने पुजा पाठ और पर्व्वव्रत में ही लगी रहती थी। काशी बाबू के घर में अपने बहुत आदमी न होने पर भी नौकर चाकरों के कारण उनका परिवार उतना छोटा नहीं था। मामूली बन्दोबस्त पर ही इतना बड़ा संसार कल की तरह चला करता था। इस कारण सुलोचना और पारुल की चाल चलन पर कृपामयी उतनी नजर नहीं डालती थी। इन साधारण मामलों पर बड़े घर की प्रवीणाओं को नजर डालने से चलता भी नहीं।

सोना लौंडी के साथ रसिक बाबू का मन मुटाव सोलह आने से आगे बढ़ गया था। उनका छूआ तो काला बादल था वह सोना की ओर आंख उठाकर कहां देखते हैं। सुलोचना के आगे सोना मानो चाँद के आगे खद्योत थी। इधर सोना बहुत ढूंढ़ खोज करने पर भी रसिक बाबू से बदला लेने का अवसर नहीं पाती थी।

सोना के मारे रसिक बाबू अब महल्ले में किराये का एक

मकान लेकर रहने लगे थे। उसी में रात विताते थे। और दिन को मालिक के मकान में हाजिर होकर नौकरी वजाते थे।

[२२]
अभिसार।
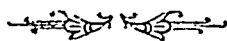
काशी वावू के खिड़कीवगान में छिप कर पहुंचने का रास्ता सुरेश ने कई दिन की कोशिश पर ठीक कर लिया था। इसी कारण आज रात के दस वजे वहां गुप चुप पहुंच गया। पहले सुरेश ने दीवार टपकर भीतर जाने का ठीक कर रखा था क्योंकि वगीचे का फाटक सदा वन्द रहता था लेकिन जव पहिली रात को वहां पहुंचा तो फाटक में फांफर देखा। मन में समझा कि आने में सुभीता करने के लिये पारुल ने ही उसे खोल रखा है। धीरे से सिर भीतर करके चारो ओर देखा। जव किसी को नहीं पाया तव चुप चाप भीतर चला गया। वगीचा छोटा होने पर भी सुन सान था। उसके वगल से एक पतली गली गयी थी। उसमें से दिन को भी आदमी नहीं जाता था। रात को तो इधर एकदम सन्नाटा और अन्धकार रहता था। सुलोचना खिड़की की तरफ़वाली रोशनी वुझा देती थी। यह तो शायद इसीलिये कि तेल फजूल क्यों खर्च हो।

सुरेश भीतर घुसकर धीरे धीरे खिड़की वाग के दरवाजे पर गया। देखा तो भीतर से वेवड़ा वन्द है। उसने मन में समझा कि इसी को खोलकर पारुल वाहर आवेगी इस कारण जव तक नहीं आवे तव तक यहां ठहरना चाहिये।

फिर सुरेश ने देखा तो एक जगह दो तीन कामिनी और हिना के पौधों की एक झाड़ी सी बनी हुई है। वह चुप चाप उसी में जाकर पारुल की राह देखने लगा। घंटा भर बीता तौ भी पारुल नहीं आयी लेकिन सुरेश ने धीरज नहीं छोड़ा।

इसी समय स्त्री और पुरुष के बात कहने की आवाज उसके कानों पड़ी। सुरेश ने देखा कि जहां खड़ा है उसके पास ही एक जंगला है उसी जंगले से बात करने की आवाज आ रही है। भीतर कुछ रोशनी थी तौ भी सुरेश ने भीतर मुंह डालकर यह नहीं देख पाया कि कौन कौन बातें कर रहे हैं। जंगलों पर बारीक मस्लिन के परदे लटक रहे थे। मकड़ी रूप जिन जुलाहों ने परिश्रम से उनको तैयार किया था उनका भी इस रात के पता नहीं लगा तौ भी उन परदों में आंख और कान का संयोग करके सुरेश ने अपनी दर्शन शक्ति दूनी कर ली। स्त्री कहने लगी—"इस तरह की वसीयत होने से तो हम लोगों का सर्वनाश हो जायगा!

मर्द ने कहा—"ट्रस्ट्रियों के हाथ में अख्तियार रहने पर तुम्हारे हाथ तो कुछ नहीं रहेगा न तुम कुछ छूने ही पाओगी। लेकिन अब उपाय ही इसका क्या है?"

"उपाय तो यही है कि किसी तरकीब से यह वसीयत न होने पावे। हमारे बहनोई बोले रहे कि अगर यह वसीयत नहीं करें तो मैं ही सब जायदाद की मालकिन हूंगी और जैसा चाहूं खरीद बिक्री या दान कर सकूंगी पारुल जब विधवा हो गयी और उसके कोई बाल बच्चा नहीं हुआ तब उसका कुछ भी हक नहीं रहेगा।"

"बाबू का अटर्नी तो कहता है कि दो ही एक दिन में वसीयत का मस्विदा तैयार हो जायगा।"

"तो तुम कल्ही कृष्णनगर जाव और यह सब कहकर हमारे बहनोई को साथ ही ले आओ। जब वह आ जायंगे तब जरूर वसीयत किसी न किसी तरह रोक देंगे।"

"आज उनकी तबीयत है कैसी?"

"आज भी १०५ डिग्री बुखार है तकलीफ़ खूब बढ़ी है। डाक्टर लोग बोल गये हैं कल्ह फिर पीठ में अपरेशन करना होगा। अगर इस वसीयत के करने से पहले खतम हो जाय तो सब बलाय दूर हो जायगी।"

"उनके मरजाने पर तो तुम को चूड़ी फोड़कर सादा कपड़ा पहनना होगा।"

"आ! दुत्त! तुम्हारे रहते तो नहीं न?"

"तो तुम दवा पिलाने का गोलमाल करके क्यों नहीं मामला खतम कर देती?"

"नहीं दिन रात पारुल पास बैठी सेवा करती है। वही दवा दारु देती है यह भार उसी पर है।"

"तभी—तो—"

"इस घड़ी यह सब बे काम की बातें रहने दो। डेरे पर जाकर सोओ और सवेरा होते ही कृष्णनगर रवाने हो जाव!"

"अच्छा" के बाद और कुछ सुनाई नहीं दिया। बात यह हुई कि दोनों बातें करनेवाले अब खिड़की से हट गये। नाटक के स्टेज की तरह यह खेल मानो परदा पड़ जाने के कारण सुरेश की आँखों से ओट हो गया। पाठकों को समझने से बाकी नहीं रहा होगा कि यह मर्द रसिक बाबू हैं और स्त्री है वही सुलोचना।

इसके बाद ही खिड़की खुली और झट सुरेश सरककर अलग हो गया। उसी आदमी के लिये वह दरवाजा खुला था। थोड़ी ही देर पर सुलोचना आयी और फाटक बन्द करके चली गयी। पारुल मरन सेज पर पड़े पिता की सेवा सुश्रूषा में है यह बात जब सुरेश ने सुनी तब वहां ठहरना बेकाम समझकर चुप चाप वहां से दीवार टपकर लौट गया। उसका आना या जाना किसी को मालूम नहीं हुआ।
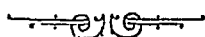
[२३]

स्वर्ग लाभ।

राधावल्लभ बाबू का आना व्यर्थ नहीं हुआ। उन्हों ने काशीनाथ बाबू को अच्छी तरह समझा दिया कि जायदाद ट्रस्टियों के हाथ में देने से वे लोग तरह तरह की चालाकी करके सब हड़प जायंगे। इस कारण आप अच्छे हो जायं और किसी अच्छे वंश के लड़के को गोद लेकर ऐसा प्रबन्ध कर दें कि सब बरकरार रहे।

इस बात से काशीनाथ बाबू का आसन डोल गया और उन्हों ने राय मान ली। वसीयत की बात इधर उधर करके टालने लगे। अटर्नी ने दो दिन फेरा लगाया लेकिन फिर निराश होकर वह भी बैठ रहा। बस सुलोचना की जीत हो गयी।

इधर काशीनाथ बाबू की पीठ का फोड़ा कई बार अपरेशन होने पर भी बराबर बढ़ता ही गया। पेशाब की एकदम खराबी होने के कारण जल्द विकार दिखाई पड़ा। निदान डाक्टरों के पलस्तर मिक्सचर सब को लात मारकर काशी बाबू इस संसार को लात मार गये। अखबार में सुरेश ने

उनके मरने की ख़बर पढ़ी। संसार को जरूरत न होने पर भी बड़े आदमियों की गति विधि और परलोक पधारने की खबरें अखबार के कालमों की शोभा बढ़ाया करती हैं। विधिपूर्वक काशीनाथ बाबू का क्रिया कर्म्म समाप्त हुआ। कोई पांच हजार आदमियों को भोजन कराया गया। नवद्वीप और भट्ट पल्ली से आये हुए शिखाधारी मान्य ब्राम्हण परिडत उचित विदाई पाकर विदा हुए। राधावल्लभ बाबू ने खुद खड़े होकर कंगलों को भोजन कराया। उनकी स्त्री मोक्षदा सुन्दरी भी इस काम में आयी थीं। उन्होंने अपनी छोटी बहन को कम उम्र होने के कारण शरीर से कुछ भी गहना उतारने नहीं दिया।

जिस दिन काशीनाथ बाबू मरे उसी दिन से गुमास्ता रसिकलाल को भीतर जाने का अधिकार मिलगया था उनको भी मानो सशरीर स्वर्गलाभ हुआ। भीतर सुलोचना माल-किन होने पर भी बाहर रसिक बाबू ही सब के मालिक हुए। घटना के फेर में पड़ कर कितनों ही का नसीब फिर जाता है।

अब सोना का काम बहुत हलका हो गया। अब उसको सुलोचना और रसिक बाबू के बीच में आवाजाही का तार नहीं लगाना पड़ता। अब उनका अन्तर आप ही आप जाता रहा। इस कारण सोना अब सुलोचना से हटकर पारुल की ओर आयी है। अब सुलोचना के महल में उसका उतना दर्शन नहीं मिलता। वह रसिकलाल का वहां कब्जा दखल देखकर आप फूआ और बहुई के महल में सरक गयी थी क्योंकि उसको डर था कि वहां से अब कहीं जवाब न हो जाय। सोना वह घर छोड़ना नहीं चाहती थी। वह चाहती

थी कि उसी मकान में रहकर दूर से सुलोचना और रसिक की दौड़ देखती रहे।
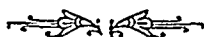
[२४]

हेमाङ्गिनी और पारुल।

एक दिन झूमन ने हेमाङ्गिनी को खबर दी कि उस की बहन अब एडदह के बगीचे को लौट आयी है उसकी फूआ भी साथ हैं। आज वह गया था। और बहुतसा फल और बेल पत्र तोड़कर ले आया है। लेकिन पारुल ने सुरेश की जितनी बातें पूछी थीं वह सब झूमन खा गया।

भाई के मरने पर क्रिया कर्म्म निबटाकर ही कृपामयी पारुल को साथ लिये हुए अपनी एडदह वाली कोठी में चली आयी थीं। अब उनको बागबाजार की कोठी काटने दौड़ती थी। उनके मन में था कि उसी बगीचे में कुछ दिन रहें फिर ठीकठाक करके काशी जायं। वहीं सदा गंगास्नान और विश्वनाथ का दर्शन करके बाकी जिन्दगी बिताडालें। लेकिन दुःख था केवल इस बात का कि पारुल को भी उनके साथ काशीवास करना होगा। तौ भी मनको यही समझ कर प्रबोध देती थीं कि जब छोटी ही उम्र में उसका नसीब फूट गया। तब अब उसका उपाय ही क्या है? ब्राम्हण कायस्थ * के घर की विधवा को धर्म्म कर्म्म के सिवाय और कुछ गति नहीं है।

*बङ्गाल में क्षत्रिय नहीं है। केवल ब्राह्मण और कायस्थ ही द्विज धर्म पालन करते हैं।

पारुल सोना लौंडी को साथ लायी थी। कृपामयी ने उसको कह दिया था कि जब वे दोनों काशी चली जायंगी तब तुम बाग बाजारवाली कोठी को चली आइयो। क्योंकि सोना उनके साथ काशीवास पर राजी नहीं थी। उसके मन में कुछ कृष्णप्रेम था। यद्यपि उसके कृष्ण चन्द्रावली के कुञ्ज में विहार करने लगे हैं तौ भी क्या सोना उन पर अभिमान करके अब काशीवास कर सकती है?

भूमन से खबर पाकर हेमाङ्गिनी अपने दिये हुए वचन के अनुसार एड़दह के बगीचे में कृपामयी आदि से भेट करने के लिये आयी। साथ में भूमन भी आया था। हेम को पाकर पारुल खुशी से भर गयी। वह उसको अपनी फूआ के पास ले गयी। कृपामयी ने हेमाङ्गिनी का बड़ा आदर सत्कार किया। उनमें बहुतसी बातें हुईं। भाई की बीमारी, दवा दारू और फिर अन्त को मरने की बात, फिर बाद को श्राद्ध आदि की बातें कृपामयी ने रो रो कर कह सुनायीं। पिता की यह बातें सुनते सुनते पारुल के गुलाबी गालों पर जो पड़े हुए आंसू सूख रहे थे उनकी अपूर्व शोभा थी। जिसने कभी किसी सुन्दरी युवती को आन्तरिक दुःख से आंसू बहाते हुए देखा है वह पारुल के उस समय के सजल वदन मण्डल की कल्पना कर सकता है।

हेमाङ्गिनी की आंखों में भी आंसू आये थे। उसने कई बार बात करना चाहा लेकिन उससे नहीं बना। दूसरे का आंसू बन्द करने के बदले आपही आंसू बहाने लगी।

पारुल हेमाङ्गिनी को बिलकुल अपना समझ रही थी। जब वह जाने लगी तब पारुल बोली—"बहन रोज तुम आवो। बोलो जब तक आने की बात नहीं होगी तब तक मैं जाने नहीं

दूंगी।" जब हेमाङ्गिनी ने वचन दे दिया तब पारुल उसको साथ लेकर बाग में गयी और शिवालय, घाट, बड़ा बगीचा और अपना वह कुञ्जलतापता पूरित सुशोभित स्थान सब दिखाया। फिर चलती बेर सोना को पुकार कर बोली-"जो सोना बहन को पहुंचाकर घर देख आ। जिस दिन नहीं आवेगी उस दिन तू पकड़ लाइयो।"

झूमन बहुत पहले चला गया था। वह एक जगह चार पांच घंटा स्थिर बैठनेवाला नहीं था। अपनी बहन को पाकर पारुल जान पड़ता है सुरेश की बात भूल गयी थी। इसी से झूमन की खोज उसने नहीं की।
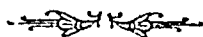
(२५)

समाजतत्व।

काशीनाथ बाबू के क्रिया कर्म्म हो जाने पर लगातार तीन बार सुरेश बागबाज़ार वाली कोठी के पिछवाड़े वाले नजर बाग में चोरी से घुसा और बाहर गया था। हर रोज़ उसको दीवार टप कर जाना पड़ता था क्योंकि उस रात की तरह अब फाटक खुला नहीं मिलता था। अब उसने वहां उन स्त्री पुरुषों की बातें नहीं सुनीं न किसी को वहां से बाहर निकलते ही देखा। रसिक को अब खिड़की से जाने की जरूरत नहीं थी। पारुल भी अपने लिखे मुताबिक उस बगीचे में आकर सुरेश से नहीं मिली। वह अपने एड़दह के बगीचे को चली गयी है यह सुरेश को नहीं मालूम था।

अब सुरेश बड़ी चिन्ता में पड़ा। पारुल से कैसे भेंट होगी। इसका उपाय वह कुछ भी ठीक नहीं कर सका। एक

वार उसने सोचा कि पारुल के नाम डांक से एक चिट्ठी भेजें। लेकिन फिर यह विचार कर डर गया कि क्या जानें वह किसी के हाथ पड़ जाय। ऐसे मामलों में दूसरे के हाथ से भी चिट्ठी भेजना खटके से खाली नहीं होता। पारुल ने माली के हाथ जो चिट्ठी भेजी उसको हेम के हाथ में पड़ जाने से उसको वहुत लजाना पड़ा था लेकिन सुरेश ने देखा कि उसका नतीजा अच्छा ही हुआ है। उसकी वहन मदनमोहन का दर्शन करने जाकर पारुल से भेट मिल आयी है। उसने सोचा कि वह एक वार और दर्शन करने वहां जाय तो अच्छा हो। लेकिन फिर मन में भय हुआ कि इस लिये उसको कहने से कहीं फिर पारुल की वात छेड़कर लजवाने न लगे।

सुरेश अपने मेस में पड़ा सामने एक उपन्यास रखकर यही सव सोच रहा था। इसी समय पाँचू मामा आ पहुंचे। सुरेश पुस्तक वन्द करके उठ वैठा। पञ्चानन वावू भी उसी पर जाकर वैठ गये। कुशल प्रश्न के वाद उनमें वातें होने लगीं। उन वातों में दर्शन, विज्ञान, राजनीति और समाजतत्व सव आ पड़े। विधवा विवाह की वात उठी। उस समय विलायत से लौटे हुए एक वङ्गाली ने प्रायश्चित्त करके हिन्दू मत से एक विधवा से शादी की थी। अखवारों में उसी वात पर धूम मची हुई थी।

पञ्चानन ने कहा—हिन्दू मत से इस विवाह का होना सुनकर मैं वड़ा संतुष्ट हुआ हूं। इससे हिन्दू समाज में श्रद्धा दिखाई देती है। यूरप से लौटे हुए हमारे देशी आदमी अगर हिन्दू समाज में रहना चाहें तो इससे और आनन्द की वात क्या होगी?"

सुरेश ने कहा—"लेकिन हिन्दू समाज तो उनको हटा देता है वे लोग क्या अपने इरादे से समाज छोड़ते हैं ?"

प० –सताये और निकाले जाने पर भी जो आदमी अपनी माता समान समाज के गले लिपटा रहता है उसी की बहादुरी है। वही असल में समाज का भक्त है। समाज मुझे छोड़ना चाहेगा तौ भी मैं उसको नहीं छोड़ूंगा यही प्रतिज्ञा करना चाहिये।

सु०—विधवा विवाह करने से समाज से उसको अलग रहना होगा यह बड़ा कठोर दुःख है मामा साहब !

प०—जो आदमी विधवा विवाह करने के लिये दृढ़ है उसको मन से सामाजिक निर्य्यातन का डर एकदम दूर कर देना चाहिये। अब यह सामाजिक निर्य्यातन बहुत दिन नहीं ठहरता। शिक्षा की बाढ़ और दूसरी जातियों से राह रस्म होने के कारण आजकल समाज बहुत कुछ संस्कार की ओर मुंह किये हुए जा रहा है। समुद्र यात्रा के लिये जो समाज की अड़चन थी वह अब घट रही है। अब विलायत जाने से यहां के वैद्य कायस्थों में जाति नहीं जाती। हिन्दू समाज में विधवा विवाह भी बराबर बढ़ रहा है। जो आदमी समाज के आजकल मुखिया हैं उनमें से भी किसी किसी के घर विधवा कन्या का फिर विवाह हो रहा है। मेरी राय में जो लड़की कम उम्र में विधवा होती है वह स्वभाव से ही अगर त्याग मार्ग पर न चले तो उसके लिये जबरदस्ती ब्रह्मचर्य्य की व्यवस्था करना उचित नहीं है। उससे फल उलटा होता है।

सु०—मेरी भी यही राय है। हम लोगों के समाज में जो ऐसी विधवा हैं उनका विवाह कर देना उचित है।

प०—जरूर जरूर! ऐसी विधवाओं के लिये सदा से रंडापा काटने का विधान करके हिन्दू समाज अपना आप ही घात कर रहा है। यही कारण है कि यहां मुसलमान जिस तरह बढ़ रहे हैं हिन्दुओं की गिनती उतनी नहीं बढ़ सकती। इसका नतीजा यह होगा कि दो तीन सौ वर्ष पीछे मुसलमान हिन्दुओं के नम्बर पर पहुंच जायंगे। इस कारण हिन्दू समाज में विधवा विवाह चलाने की बड़ी जरूरत है।

सु०—तब समाज में विधवा विवाह क्यों नहीं चलता?

प०—ऐसी बालविधवा बहुत हैं जो विवाह करना चाहती हैं। लेकिन ऐसे आदमियों की गिनती हमारे समाज में बहुत ही कम है जो साहस करके उनका व्याह कर दें। अच्छा सुरेश! तुम तो अच्छे घराने के एक शिक्षित युवक हो किसी अच्छे घर की बालविधवा से विवाह करने का तुमको साहस होता है?

सु०—मेरे साहस की बात आप क्या पूछते हैं? मैंने तो बहुत दिनों से यही ठीक कर रखा है कि अगर विवाह करूँगा तो किसी विधवा से ही करूँगा।

प०—अच्छी बात है सुरेश! अब मैं तुम से एक साफ़ बात पूछता हूं। बाग़बाजार के काशीनाथ बाबू की एक बड़ी सुन्दरी विधवा लड़की है। हेमाङ्गिनी से उस की जान पहचान हुई है। तुम्हारे विवाह के लिये उसने उसी को पसन्द किया है। तुम्हारी इस में क्या राय है?

इतना सुनतेही सुरेश चुप हो गया। उसका हँसता चेहरा और सङ्कोच देखकर पञ्चानन बाबू ने उस की राय समझ ली। चेहरे को एक तरह की भाषा बोलने की सामर्थ्य है। जीभ

उस को नहीं कहती तौ भी चेहरा देखकर ही उसके मन का भाव जाना जाता है लेकिन यह समझना सब से नहीं बनता।
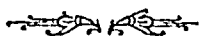
(२६)

हेमाङ्गिनी की अगुआई।

हेमाङ्गिनी रोज ही पारुल के बगीचे में जाया आया करती थी। एक दिन उसने बात ही बात में कृपामयी से पारुल के दूसरे विवाह की बात डाली थी। कृपामयी ने कहा था-"वह अभी कच्ची उम्र की है उसको। अभी संसार देखने, सुनने और खुशी मौज के दिन हैं। उस को इसी उम्र में मैं काशीवासदेना नहीं चाहती। लेकिन क्या करूँ। कुछ उपाय ही नहीं है। पारुल का ऐसा कोई नहीं है जिस के पास उस को रख जाऊँ।

हेमाङ्गिनी बोली—"तो फूआ जी ! आप पारुल का व्याह करके क्यों नहीं जातीं ?"

कृपामयी बोली-"अरे बापरे ! कायस्थ के घर की लड़की। एक बार व्याही जा चुकी है जब विधवा हो गयी तब उसका व्याह कैसे होगा ?"

हे०—काहे ? बहुत बड़े बड़े आदमी भी तो आज कल विधवा लड़कियों का व्याह करते हैं। अभी तो उसी दिन कलकत्ते में एक बड़े भारी कायस्थ और एक बड़े ब्राह्मण की विधवा लड़की का व्याह हो गया। सब बड़े बड़े ब्राह्मण पण्डितों ने उस व्याह में भोजन किया था।

कृ०-हाँ, हाँ ! हमलोग भी बाग बाज़ारवाली कोठी ही में रहे थे। याद आया उसी व्याह में बड़तले की पोथी उचरी रही। लेकिन क्या करना बेटी ! यह करमुंहे समाजवाले

कुछ गड़ बड़ न करें तो हमारी पारुल का भी एकठो बिआह हो जा सकता है। भगवान वह दिन क्या दिखायेगा कि जब पारुल के फूटे नसीब में फिर बर घर मिलेगा ?

हे०—हमने तो फुआ जी उसके वास्ते बर ठीक कर लिया है। लड़का ऐसा है कि देखते ही बनता है। तीन ठो पास करके अब कालेज में पढ़ता है। कलकत्ते में रहता है। नाम उसका सुरेश है। शान्तिपुर के रामलाल मित्र का लड़का है। वहाँ उसका घर द्वार और कुछ जायदाद भी है। सुरेश के बाप कृष्णनगर के राजा के यहाँ नायबी करते थे। जब बाबू जी के मरने पर हम लोगों को कोई अवलम्ब नहीं रहा तब सुरेश के बाप ने ही हम लोगों को शरण देकर पाला था। तभी से सुरेश हम को बहन कहता है। मैं भी उस को अपना भाई जानती हूं।

अब जो कुछ कहना था वह कहकर हेमाङ्गिनी ने हंसते हँसते कृपामयी से कहा—"पारुल से सुरेश की देखा सुनी भी हो गयी है। वे आपस में व्याह होना मन से चाहते हैं। इन दोनों ने मुझ से अपने अपने मन की बातें कह दी हैं। फूआ जी ! इस व्याह में आप नाहीं मत कीजिये नहीं तो पारुल जीयेगी नहीं जहर खाकर मर जायगी।"

इस अगुआई में हेमाङ्गिनी ने दो तीन बातें लगातार झूठी कही थीं। इस झूठ से सत्य की मर्य्यादा घटी या बढ़ी सो हम नहीं कह सकते। किसी अवसर पर आदमी सच्चा कह कर पाप और झूठ कहकर पुण्य कमाता है। ऐसा सत्य भी है जो झूठ से भी अधम है और ऐसा झूठ भी है जो सत्य से महान है।

हेमाङ्गिनी की बातें सुनकर कृपामयी अवाक् हो

गयी। कुछ देर पीछे बोली—"अरे वाप रे यह तुम सच्च कहती हो वेटी ?"

इस घड़ी डर, विस्मय, स्नेह हर्ष और चिन्ता सब वारी वारी से कृपामयी के दिल में खेल रहे थे। ऐसी दशा में किसी बात पर पक्की राय जाहिर करना नहीं हो सकता था।

बात करते करते अन्त को सोना आ पहुंची। वह भी बोली—"अहा रे! हमारी बबुई का बिआह होने में तुम भाँजी मत डालियो फूआजी। हमारा नसीब खुल जायगा। सोने का कङ्कन मिलने का रास्ता मेरा बन्द मत करना।"

सूरज डूबने भी नहीं पाया था कि सोना ने पारुल से जा कहा कि तुम्हारा व्याह जल्दी हो जायगा। हेमी बबुई ने वर ठीक कर रखा है। पारुल ने उसको चींटी काटकर कहा—"दुर हो।"
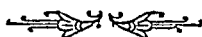
[२७]

विधि का विधान।

शान्तिपुर वाले रामलाल मित्र के लड़के बाबू सुरेश चन्द्र मित्र का जो बाग़ बाजारवाले काशीनाथ वसु की लड़की श्रीमती पारुल कुमारी वसु से विवाह हुआ उसमें हम पाठक पाठिकाओं को नेवता नहीं दे सके इसके लिये क्षमा चाहते हैं इसका कारण यही है कि वह विवाह एड़दह के बगीचे में एक तरह से गुप चुप हो गया था। दूसरी बात यह थी कि बहुतेरे इस विवाह में नेवता खाने से अपनी जाति जाना समझकर न आने के लिये बहाना ढूंढ़ने की तकलीफ़ करते। बहुतों की आंख इस जोड़े का समाचार सुनकर ही कपार

पर चढ़ जाती। कितने ऐसे भी होंगे जो उस नेवते को छूने का प्रायश्चित्त करके गङ्गा नहाने जाते।

कृपामयी व्याह के समय वहां नहीं थीं। वह व्याह के लिये कुछ नक़द और पारुल के गहने के लिये पांच हज़ार रुपये दे कर काशीवास के लिये टरक गयी थीं। पारुल का कन्यादान दूर नाते की एक अनाथा मौसी ने किया था। वह ख़बर पाकर आयी थी। कृपामयी उसके खर्च के लिये भी एक सौ रुपयां रख गयी थीं।

व्याह के समय नन्दलाल की रची हुई कविता छापकर बाँटी गयी थी। स्वर्गवासी ईश्वरचन्द्र विद्यासागर के यहां से शालिग्राम लेकर एक पुरोहित आये थे। कलकत्ते से सुरेश की ओर से कई मित्र छात्र और पांच सात ब्रम्हो बाराती होकर आये थे। इन में से एक ब्रम्हो ने कहा कि साधारणतः हिन्दू विवाह में तो शालिग्राम के रहने से हम लोग उसमें शामिल नहीं हो सकते लेकिन हिन्दू विधवाविवाह में तो शालिग्राम के रहने पर भी हम लोग शामिल हो सकते हैं।"

इसको सुनकर पञ्चानन बाबू ने दिल्लगी से कहा—"जैसे आप लोगों के साथ उपासना में शामिल न होने पर भी हम लोग आप लोगों के साथ खाने पीने में शामिल होते हैं।" बात यों थी कि पञ्चानन बाबू धर्मानुष्ठान के इन बाहरी अङ्गों पर उतनी आस्था नहीं रखते थे। वह कहा करते थे :—

"असल में ब्रम्हसमाजी भी मूर्तिपूजक हैं क्योंकि वे लोग भगवान की शाब्दिक मूर्त्ति बना कर उसको कर्ण गोचर करते हैं और साधारण हिन्दू साधक पत्थर की मूर्त्ति बनाकर भगवान को दृष्टिगोचर करते हैं इन दोनों उपासनाओं में भेद क्या है। उपासना मात्र ही पौत्तलिकताके अवलम्ब से होती है। इस

लिये उपासना के भेद से मारामारी करने व लट्ठ चलाने की जरूरत नहीं है। खाली उपासना ही आदमी का एक मात्र कर्त्तव्य नहीं है। दिन रात उपासना में डूबे रहने से Intellectuosity * घट जाती है। जगत के इतिहास में नपोलियन, विस्मार्क, क्रामवेल आदि जो कर्म्मवीर अमर हो गये हैं उनके जीवन में उपासना की अधिकता नहीं दिखलाई देती। धर्म्मवीरों की बात दूसरी है।"

यह कहने की जरूरत नहीं है कि पांचू मामा, हेमाङ्गिनी, नन्दलाल और सोना लौंडी की ही कोशिश से वह विवाह पूरा हुआ था। झूमन ने सहवाला होने को कहा था। इस कारण नन्दलाल ने उसको एक थप्पड़ मारा था। सुरेश की मा और पारुल की विमाता सुलोचना को इस विवाह की कुछ खबर नहीं दी गयी। पांचूमामा ने सुरेश से कहा था-मैं तुम्हारी मां को अच्छी तरह जानता हूं। वह इस विवाह में किसी तरह राजी नहीं होंगी। लेकिन व्याह हो जाने पर वह पतोहू को छोड़ नहीं सकेंगी। इसलिये तुम इसकी चिन्ता कुछ मत करो।"

मजदूर मण्डल के कुछ जवान और उस गांव के कुछ पढ़े लिखे आदमी उस विवाह में शामिल हुए थे। उनके लिये उस गांव के समाज में कुछ गोलमाल हुआ। गांव के समाज में जो वहां के मुखिया लोग थे वे लोग ऐसा अवसर हाथ से क्यों जाने देते? तड़बन्दी करके मिलाने के लिये कुछ खाकर कबर उठाना उनका सदा का धन्धा है। इस कारण जब उन लोगों ने उन जवानों को पकड़ा। तब पांती से बाहर होने के डर

* बुद्धि की तेजी।

से वे वेचारे एक एक करके कैफियत देकर सफाई देने लगे। किसी ने कहा—"मैं विधवा-विवाह का तमाशा देखने गया था।" किसी ने कहा—मैं इसलिये गया था कि कौन कौन हमारी पांती के लोग वहां गये हैं उनको आंखों देख आऊं!" एक ने कहा—"मैं यह देखने गया था कि इस भोज में मुरगी का अन्डा मांसादि अखाद्य पत्तल में पड़ता है या नहीं? वहां मैंने जाकर भी आहार नहीं किया। व्याह में जो पढ़े लिखे शिक्षित लोग गये थे उन्होंने देखा कि इस गांव में तड़वन्दी की आग भभक उठी वहां से स्कूल और हितकारिणी सभा आदि टूट टाट कर चकनाचूर हो जायगी। वहुत दिन हुए इस तरह की तड़वन्दी एक वार और हुई थी। इस कारण वे लोग सुधार का विरोध करने वालों से नरम होकर वोले कि इस व्याह में शामिल होने से ऐसा उन लोगों ने नहीं समझा था इसलिये यह भूल माफ करने लायक है। इस वात से तड़वन्दी का सब घोटाला मिट गया। पञ्चानन ने गांव के पञ्चों का यह गोलमाल जान कर कहा था:— "समाज में जब तक शिक्षा का प्रचार खूब नहीं वढ़ेगा तव तक सामाजिक वात पर जोर देने से नहीं चलेगा। इस कारण संस्कार चाहनेवालों को जरूरत के मुताबिक वहुत कुछ Compromise [परस्पर समझौते] के भीतर ही आगे पांव वढ़ाना होगा। हिन्दू समाज के सामने से सुई भी नहीं गड़ सकती लेकिन चतुराई के पीछे से चाहे तो हाथी पार कर जा सकता है। काम के करने के लिये संस्कार-वादियों को चाहे जैसे हो समाज में सिर डाल कर ही रहना होगा। उससे वाहर होने पर वे लोग फिर हिन्दू समाज का संस्कार नहीं कर सकेंगे।

[२८]

सुलोचना की बात।

सुरेश और पारुल का विवाह एँड़दह के बगीचे के एक सुनसान स्थान में बहुत संक्षेप में पूरा किया गया था। तो भी उसकी खबर अखबारों में बहुत कुछ रङ्ग चढ़ा कर छापी गयी। कृष्ण नगर में बैठे हुए राधावल्लभ बाबू उसको पढ़कर बड़े विचलित हुए। नायब रामलाल के लड़के सुरेश को वह जानते थे। और पारुल उनके साढ़ू काशीनाथ की एकलौती लड़की ही ठहरी। व्याह हिन्दू मत से हुआ है पढ़कर राधावल्लभ बाबू ने सोचा कि पारुल के गर्भ से लड़का हुआ तो वह काशी बाबू की सब जायदाद का उत्तराधिकारी हो जायगा। इस कारण सुलोचना उसमें से एक कौड़ी भी नहीं पा सकेगी। उन्होंने अब मन में सोचा कि काशीनाथ बाबू को वसीयत करने से मना करके अच्छा काम नहीं किया। वसीयत होती तो सोलह आना न सही तो बहुत कुछ भाग वह जरूर पाती।

राधावल्लभ बाबू अपने एक काम के लिये कलकत्ते पहुंचे और सुलोचना से भेंट करके उस विवाह से जो उसका नुकसान होगा वह सब समझा गये थे।

इस विवाह पर कलकत्ते के कायस्थों में बड़ी हलचल मची थी। काशीनाथ बाबू के परिवार को भी पांति से अलग करने की बात उठी। सुलोचना की ओर रसिकलाल बाबू ने मुखिया पञ्चों के दरवाजे पर जाकर कहा—स्वर्गवासी काशीनाथ बाबू की स्त्री के बिलकुल अनजाने में यह व्याह

हुआ है। इसके लिये उनका अपराध नहीं है। वह सौतेली मा हैं। सौत के दामाद से उनका कुछ सम्बन्ध नहीं है।

इस चाल से सुलोचना समाज के निर्यातन से बच गयी लेकिन भविष्य में जो उसको जायदाद आदि से वञ्चित होने की चिन्ता थी वह दूर नहीं हुई। काशीनाथ बाबू सुरेश से पहले कह गये थे कि बहन भी जबतक जीती रहेगी तब तक एड़दह वाली कोठी उसी के अधिकार में रहेगी। और कृपामयी के हुक्म से पारुल और सुरेश उसमें रहते थे। सुलोचना एक दिन उस बगीचे में पारुल के दुल्हे को देखने गयी। राधावल्लभ बाबू उनसे जबानी प्रीति रखने की सलाह दे गये थे। हेमाङ्गिनी से उनकी दूसरी बार भेट हुई। परिचय भी अच्छी तरह हो गया। सुलोचना को मालूम हो गया कि हेमाङ्गिनी वगैरह एड़दह वाले सुरेश के मकान में बहुत दिन रही थीं। और उसके बहनोई राधावल्लभ बाबू को अच्छी तरह से जानती हैं। और कमरहट्टी के चटकल में भाई की नौकरी है इस कारण अब अड़दह में रहती हैं यह भी वहीं सुना।

जब सुलोचना चली गयी तब सोना ने हेमाङ्गिनी से उसके रूप और गुण का विस्तार से बयान शुरु किया। कहा—"इस लहुरी की तरह बेहया और बदमाश लुगाई दुनियां में दूसरी नहीं है। बाबू अभी मरे भी नहीं थे कि इसने एक नौकर के साथ वह छके बारह खेलना इस तरह शुरू किया था कि लोग देख कर दांतो ऊंगली काटते थे। और सच पूछो बबुई तो इसी के पाप से बाबू मरे भी हैं। देखती नहीं हो विधवा होने पर कैसी सुघराई चढ़ी है। ऊपर से गहने एड़ी से कपार तक ठाँसे पड़ी है। मैं तो डरती हूं कहीं बबुई का

ब्याह सुनकर यह रसिक लाल से शादी न कर बैठे। ऐसा कोई काम नहीं है जिसको यह नहीं कर सकती हो।"

हेमाङ्गिनी ने समझ लिया कि सोना को इसका बड़ा डाह है। बोली—"तुम्हारी लहुरी मालकिन है वह भीतर क्या करती है क्या नहीं करती तुम उधर क्यों नजर डालती हो।" सोना क्यों उधर नजर डालती थी यह बेचारी हेमाङ्गिनी क्या समझेगी?

दूसरा भाग समाप्त।

कर्म्ममार्ग

तीसरा भाग।

[१]
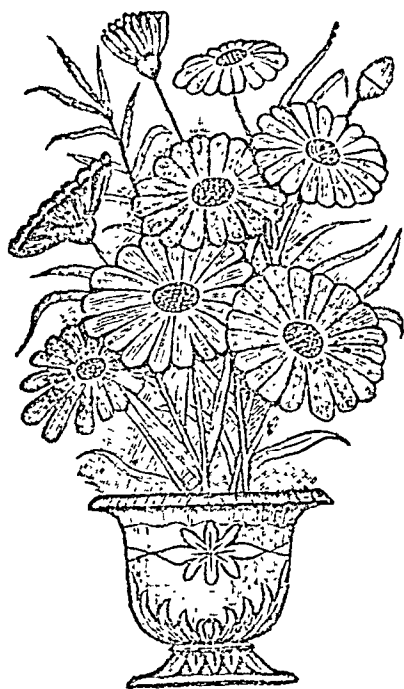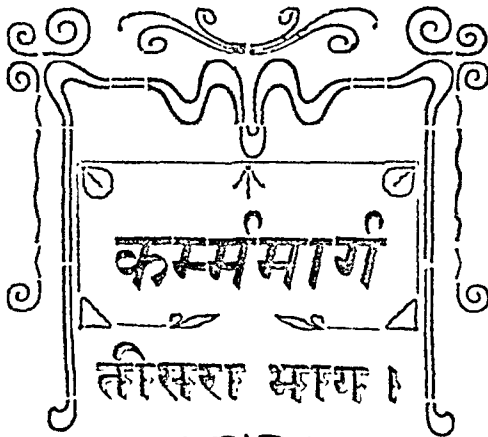
सुरेश का कारबार।

भगवान ने सुरेश को दो अच्छी चीजें दी थीं। एक थी उसमें ऊँचे होने की मानसिक लालसा। दूसरी थी स्वाधीन भाव से जीविका पैदा करने की शक्ति। पारुल को ब्याह कर सुरेश घर गृहस्थी वाला हुआ है। अब उसको सन्तान सन्तति होना सम्भव है। पारुल अब बच्ची नहीं है। निदान संसारी आदमी को धन कमाने की चिन्ता होती ही है।

सुरेश ने मन में यही ठीक किया था कि कोई स्वाधीन रोज़गार करेंगे। नौकरी से वह बहुत चिढ़ता था। और यह चिढ़ स्वदेशी और बायकाट के समय से और बढ़ गयी थी।

कलकत्ते में इण्डस्ट्रियल कानफरेंस जो हाल में हुई थी उसमें विलायत से आये हुए एक साहब ने भारत के शिल्पवाणिज्य की उन्नति के सम्बन्ध में एक स्पीच दी थी। सुरेश ने उनकी बातें जी लगाकर सब सुनी थीं। साहब ने अन्त में कहा था-"जर्म्मनी, इङ्गलैण्ड, अमेरिका और जापान शिल्पवाणिज्य की ही उन्नति करके जातीय उन्नति की ऊँची चोटी पर पहुंचे हैं। स्वदेश की उन्नति के लिये भारतवासियों को भी यही रास्ता पकड़ना होगा। इस कारण केवल राजनीति लेकर बैठे रहने से उनका नहीं चलेगा। उस स्पीच को सुनने के बाद से ही सुरेश ने स्वाधीन व्यवसाय करने की मन में दृढ़ प्रतिज्ञा की थी कि उसके अनुसार आज काम करना ही होगा।

विज्ञान और रसायन विद्या पर सुरेश का बड़ा झुकाव था। इसी लिये उसने फर्म्मा कोपिया की दवा और केमिकल्स तैयार करने के लिये एक कारखाना खोलने का विचार किया। इस कारबार में पग पग पर रसायन विद्या की सहायता दरकार होती है। सुरेश ने देखा कि यह सब माल तैयार करके कलकत्ते की बड़ी बड़ी दुकानों में व्यापारी भाव से दे सकें तो बड़ा लाभ हो सकता है।

सुरेश ने यह उपाय किया कि पारुल के गहने बन्धक धर दिये और ढाई हज़ार रुपया जुटाकर पहले उसीसे कारबार शुरू किया। उसी एड़दह के बगीचे में एक तरफ़ (करोगेटेड) नारीदार लोहे का एक छप्पर डलवा कर उसी के नीचे लेबोरेटरी स्थापित की। उसका नाम रखा नेशनल फर्म्मास्यूटिकल वर्क्स।

बाज़ार में उस कारखाने की चीज़ों का बड़ा बखान होने

लगा। कलकत्ते के सब दूकानदार कहने लगे कि विलायती माल से उसका माल किसी तरह कम नहीं है।

पञ्चानन बाबू एक दिन सुरेश की लेबोरेटरी देखने आये। उन्होंने कहा—"बड़े अफिसरों का उत्साह पाये बिना ऐसे कारखानों की उन्नति नहीं होती। ऐसी कोशिश करो कि तुम्हारा माल सरकारी अस्पताल और खैराती दवाखानाओं में चल जाय। इसके लिये बङ्गाल सरकार के बड़े मंत्री और इन्स्पेक्टर जेनरल आफ सिविल हास्पिटल्स साहबों से तुमको भेंट करना चाहिये।"

पांचू मामा की सलाह सुरेश को बहुत पसन्द आयी। उसने कई इधर उधर की सिफारिशी चिट्ठियां हासिल कीं। और झट मान्यवर चीफ सेक्रेटरी साहब के यहां बङ्गले पर जाकर मिला। वह साहब बड़े उदार थे हिन्दुस्तानियों को जी से चाहते थे। इसके लिये कोई कोई एङ्गलो इण्डियन अखबार बाबू सेक्रेटरी कह कर उनकी हंसी उड़ाते थे। उन्हों ने सुरेश को भी कृपा दृष्टि से देखा। और उसके कारखाने का सब हाल सुन कर खुश ही नहीं हुए उन्होंने सिविल हास्पिटल के इन्सपेक्टर जेनरल साहब के नाम एक चिट्ठी लिखकर सुरेश को दी और कहा कि जाकर साहब से मिलो।

दूसरे ही दिन सुरेश इन्सपेक्टर जेनरल साहब से भी मिला। उन्होंने उसकी बनाई हुई चीजों का नमूना मांगा। सुरेश ने सब लाकर हाजिर किया। और अपनी लेबोरेटरी का एक सूचीपत्र भी दे दिया। साहब ने जांचकर कहा कि, दवाइयां बहुत अच्छी बनी हैं। ऐसी बढ़ियां चीज यहां बन सकती है ऐसा उनको भरोसा नहीं था। साहब ने कहा कि कि अगले शनीचर को सन्ध्या के साढ़े चार बजे उसका

कारखाना देखने जायंगे। सुरेश ने कृतज्ञता प्रकट की और साहब को धन्यवाद देकर घर लौट आया।
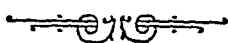
[२]

चक्र चालन।

एड़दह वाले बगीचे के माली सदा की तरह अब भी वहां से फल तरकारी नौका पर लेकर वाग बाज़ार वाली कोठी पर जाया करते थे। उनसे सुलोचना ने नये दामाद के खोले हुए वहाँ के कारखाने की बात सुनी। रसिकलाल गुमास्ता एक दिन एड़दह का बगीचा देखने गया। वहां सुरेश से उसकी जान पहचान हुई कहा—"मैं आपके ससुर का पुराना गुमाश्ता हूं।" सुरेश ने उसको सब कारबार अच्छी तरह दिखाया और कुछ दवाइयां तैयार करने की विधि भी बतलायी।

रसिक जब लौटा तब सोना ने दूर से हाथ में झाड़ू लेकर दिखलाया था। लेकिन रसिक की नज़र उस पर पड़ी या नहीं कौन जाने। वह बागबाजार वाली कोठी पर पहुंच कर एक दम भीतर चला गया। जाकर देखा तो राधा वल्लभ बाबू आये हुए हैं। और सुलोचना उनसे पारुल और सुरेश की बातें कह रही है।

सुलोचना ने राधा वल्लभ बाबू से कहा—"अच्छा हां भले याद आया। सुरेश के घर पर कृष्णनगर में हेमाङ्गिनी नाम की एक लड़की रहती थी। उसके भाई का नाम नन्दू था। आप जानते हैं उसको बहनोई जी। वे सब भी एड़दह

में ही रहते हैं। हेमाङ्गिनी कहती है आपको वे लोग अच्छी तरह जानते हैं।

राधावल्लभ ने कहा—"हां नन्दू तो मेरा मुहर्रिर ही था। हेमाङ्गिनी को मैं खूब जानता हूं वह लौंडिया बड़ी घाघ है। वे सब इतने दिनों तक रहे कहां थे ?"

सु०—वही हेमाङ्गिनी तो पारुल के व्याह में अगुवा रही है। वह एड़दह के वगीचे में रोज़ आती रही। उसका भाई कमरहट्टी के चटकल में नौकरी करता है। इसी से वे सब एड़दह में रहते हैं।"

रा०-हो! हो! समझा मैंने। तो उसी लौंडिया ने सुरेश को तुम्हारी सौतेली लड़की से लगा दिया है। उसी ने देखता हूं तुम्हारा सर्वनाश किया है। अब उस लड़किया को लड़का बच्चा होनेही से तुम अपना नसीव फूट गया समझो।

रसिक ने कहा-" आपको इसका एकठो उपाय करना ही होगा। आप इतने बड़े वकील हैं। चाहें तो मालकिन की यह आफत टाल सकते हैं।"

राधा०- देखूँ जहां तक बनेगा करूंगा। जब वह हेमिया इसमें आ गयी है तब मैं भी पीछे हटनेवाला नहीं हूं।

सुलोचना बोली-" इस घड़ी तो सब सम्पति मेरे हाथ में न है ? मैं उसको उस वगीचे से निकाल दे सकती हूं न।

रसि०-निकाल क्या दोगी मालकिन। वहाँ तो तुम्हारे दामाद देवता पद्मासन लगाकर बैठे हैं। वगीचे में ही खरीदार टीन का छप्पर डालकर उसी में दवा वनाने का बड़ा भारी कारखाना खोल रखा है। वहां दस पन्दरह आदमी काम कर रहे हैं। मैं तो अपनी आखों वह कारखाना आज देखकर आ रहा हूं। कितना कल पुरजा, माल असवाव लाया है कि

कुछ ठिकाना है ? यही तो उसके कारखाने का किता इसमें सब हाल उसका छापा हुआ है।

यही कहकर रसिक लाल ने नेशनलफरमास्यूटि वर्क्स का एक केटलग राधावल्लभ बाबू को दे दिया। सुचना बोली —"यह तुम क्या कहते हो जी। वे सब मुझे बेदखल कर देंगे।

राधावल्लभ ने कहा—"नहीं उन सबों को निकालने की जरूरत नहीं होगी वे सब तो आपही मौत की बेड़ी में पाँव दे रहे हैं देखता हूं।"

इसके बाद राधावल्लभ, सुलोचना और रसिक लाल में बहुत देर तक धीरे धीरे सलाह और कानाफूसी होती रही।

जाती बेर राधावल्लभ ने कहा।" देखो इन बातों में से कहीं कुछ भी जाहिर न होने पावे नहीं तो बड़ी आफत आवेगी।"
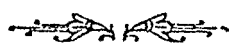
(३)

परिदर्शन।

आज शनिवार है दिये हुए वचन के अनुसार सिविल अस्पतालों के इसपेक्टर जेनरल साहब बहादुर आज साढ़ेचार बजे सन्ध्या के सुरेश का कारखाना देखने के वास्ते एड़दह के बगीचे में पहुंचे। सुरेश ने कारखाना फूलपत्ती से अच्छा सजाया था। कमरहट्टी अस्पताल के डाक्टर ने सुरेश के साथ होकर साहब का फाटक पर स्वागत किया और आदर मान से भीतर ले गये।

सब देख सुनकर साहब ने सुरेश से पूछा तब मालूम हुआ कि केवल ढाई हजार रुपये के मूल धन से यह कारबार किया गया है। साहब ने कहा—पहले स्पिरिट डिष्टिलरी स्थापित करके तो उसमें दवा की फैक्टरी बनाना होता है। डिष्टिलरी में टिंचर, क्लोरोफार्म ईथर आदि तैयार करने के समय जो स्पिरिट सुखवन आदि में नुकसान होता है उसका महसूल नहीं देना पड़ता। इसलिये यूरोप और अमेरिका आदि सब जगह डिष्टिलरी और केमिकल लेबोरेटरी एक ही साथ देखी जाती है। इस कारण विदेशी माल के साथ भाव का मुकाबला करने के लिये इस देश में भी इसी तरह डिष्टिलरी में ही दवाओं की लेबोरेटरी बनाना चाहिये। ऐसा करने में कम से कम एक लाख रुपये की पूंजी दरकार है।

लाख रुपये का मूल धन जुटाना शक्ति से बाहर बतला कर सुरेश ने साहब से निवेदन किया कि वह अगर सरकारी अस्पतालों के लिये उसको कुछ माल का छोटा मोटा आर्डर देने की कृपा करें तो वह सब माल सप्लाई करते करते धीरे धीरे कारखाना बढ़ाकर उनके कहे मुताबिक कर सकता है। साहब हँसकर बोले–"अस्पतालों के लिये एक एक बार एक ही एक तरह के टिंचर दो दो हजार पाउण्ड दरकार होते हैं। इन छोटी फैक्टरियों में उनको तैयार करना बिलकुल अनहोनी बात है। और इस समय दो दो वर्ष आगे तक के लिये दूसरी कम्पनियों के साथ अस्पतालों की दवाइयों के लिये कंट्राक्ट हो चुका है। हां दो वर्ष के बाद दवाओं का कुछ आर्डर हम दे सकेंगे।"

ऐसी आशा देकर साहब ने कहा कि तब तक जहाँ तक बने सुरेश फैक्टरी बढ़ाने का उपाय करता रहे।

सुरेश ने नरमी से साहब को बतलाया कि अफसरों की कृपा बिना ऐसा हो नहीं सकता। वे लोग अगर किसी बड़े आदमी को इस कारखाने का हिस्सेदार होने का अनुरोध कर दें तो यह कारखाना सहज ही बढ़ सकता है।

इस बात को सुनकर साहब कुछ देर तक सोचने लगे फिर बोले—"अच्छा तुम एक हफ्ते के बाद मिलो। तब तक हम सरकार के बड़े सेक्रेटरी से मिलकर इसकी सलाह कर लें।"

साहब की सुरेश ने आन्तरिक कृतज्ञता दिखलायी और इस कृपा के लिये धन्यवाद किया। उनको चलती बेर गले में दोनों हाथों से गजरा पहनाया और हाथ में फूलों का दो सजा हुआ गुलदस्ता दिया। साहब खुश होकर हँसते हुए वहां से विदा हुए।
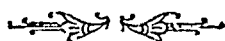
[४]

गजट की इन्तिजारी।

इन्स्पेक्टर जेनरल साहब की कोशिश से सुरेश को माननीय चीफ़सेक्रेटरी की एक चिट्ठी मिली। जो उत्तर बङ्गाल के एक बड़े जमींदार बाबू गङ्गा गोविन्दराय के नाम थी।

उस चिट्ठी को लेकर सुरेश बहुत जल्द जमींदार बाबू से जा मिले। गङ्गा गोविन्द बाबू अक्सर कलकत्ते ही में रहते थे। बड़े सेक्रेटरी साहब की चिट्ठी पाकर वह बड़े खुश हुए। उन्होंने अपने पारिषदों को वह सुना दी। उस में साहब ने उनको सुरेश के कारखाने का हिस्सेदार बनने का इशारा किया था।

गङ्गा गोविन्द सुरेश ने का पता पूछा और उसके कार-वार की वहुत सी वाते पूछने लगे। अन्त को उन्होंने कहा— "इस कारवार के लिये तुम को कम से कम कितना रुपया चाहिये?"

सुरेश ने कहा—"इन्स्पेक्टर जेनरल आफ सिविल हास्पिटल्स कहते हैं कि इसके लिये पहले एक लाख की जरूरत है। फिर पीछे भी कुछ काम पड़ सकता है।

गङ्गा गोविन्द बाबू ने यह जानने की इच्छा प्रगट की कि एक लाख लगाने से किस तरह का लाभ हो सकता है?

सुरेश ने काग़ज कलम उठाया और हिसाव लगा कर दिखा दिया कि सब खर्च वरच वाद देकर अभी सैकड़े पन्द्रह रुपये का फायदा है लेकिन अभी कारवार नया होने से यह वात है।

गङ्गा गोविन्द बाबू ने कहा—"अच्छा मैं, इस कारवार में रुपया दूंगा। और जव चीफ़ सेक्रेटरी ने लिखा है तव इसमें कुछ कहना ही नहीं है। मैं चिट्ठी देकर अपनी राय उनको भी जाहिर कर दूंगा। लेकिन तुम इस नफे में से क्या लेकर प्रसन्न होगे?

सुरेश ने कहा—देखिये आप तो इस कारखाने के sleeping partner * भर होंगे। मुझे ही working portner † होकर सब काम काज में जुते रहना होगा। अगर

---

* जो हिस्सेदार केवल रुपया देता है काम करने को वाध्य नहीं।

† जिस हिस्सेदार पर कार्य करने का भार रहता है।

आप को कुछ उज्र न हो तो मैं इसमें से तीसरा भाग लेने की इच्छा करता हूं।"

गङ्गा गोविन्द बावू ने यह वात मान ली कि तुम्हारा इरादा मुनासिव है। उसके वाद सुरेश अव रोज़ उनके यहां आने जाने लगा। एक महीना वीता। दूसरा वीता तीसरा भी वीत गया। एटर्नी के आफ़िस से अंशनामे का दस्तावेज़ भी तैयार होकर आ गया। लेकिन गङ्गा गोविन्द वावू न जानें क्यों उसको रजिस्टरी कराकर रुपया देने और काम शुरू करने में देर करने लगे। वह रोज सुरेश को मीठी वातें कहकर विदा कर देते थे। लेकिन उधर सुरेश का धीरज साथ छोड़ने लगा। एक दिन वावू के एक आदमी ने छिपकर धीरे से सुरेश को कह दिया—"जान पड़ता है अगली पहली जनवरी का गज़ट देखे विना वावू इस काम में पांव नहीं देंगे।" यह वात सुनते ही सुरेश निराश हो गया।

इधर एक वड़ी विकट समस्या आयी। सुरेश के कारखाने में जो दवाइयां तैयार होती थीं। वाज़ार में उनका भाव पौण्ड पीछे तीन चार आना घट गया। जर्मनी की "जिहि एण्ड कम्पनी" का माल ही उस समय कलकत्ते में वहुत चलता था। यहां की नेलशन फार्मास्यूटिकल वर्क्स को विगाड़ देने ही के लिये जर्मनी की उस कम्पनी ने यह चाल चली थी। उस कम्पनी की तरह कम भाव में सुरेश माल नहीं दे सकता था। इस कारण उसके माल की खप कम हो गयी।

सुरेश ने देखा कि उसका माल जो कुछ कटता था वह केवल स्वदेशी आन्दोलन के वल से। दूकानदार लोग उससे कहते थे:—सुनिये साहव आपका माल हम लोग वाज़ार

भाव से अधिक दाम देकर इसी लिये ले रहे हैं कि खरीदार लोग आज कल स्वदेशी माल मिलने पर विदेशी नहीं लेते।"

सुरेश ने समझ लिया कि स्वदेशी आन्दोलन का बल जितना बढ़ेगा उतना ही उसका माल खपेगा। और इसी में उसका मङ्गल है। इस कारण तन मन धन से जहां तक बने वह इस आन्दोलन को बढ़ाने के लिये कमर कस कर तैयार हुआ। पीछे ऐसा सुना गया था कि अकेले सुरेश के उद्योग से छ महीने में ठौर ठौर कोई पच्चीस स्वदेशी सभा हुई और चार स्वदेशी पुस्तकों का प्रकाश हुआ था।
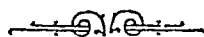
[५]

स्वदेशी भजहरी।

दवा बनाना सीखने के लिये कई जवान सुरेश के कारखाने में एप्रेंटिस बनकर भरती हुए थे। उनमें भजहरीदास नाम का एक जवान सब कामों में बड़ा मुस्तैद था। पारुल की मयभा सुलोचना के कहने से सुरेश ने उसको अपने कारखाने में भरती किया था।

भजहरी ने कहा था कि वह रसिकलाल के साढ़ू का लड़का है खुलना जिले के सेनहट्टी गांव का रहने वाला है।

भजहरी बड़ा स्वदेशी था। उसने गाँव और कारखाने के युवकों को जोड़कर स्वदेशी सङ्कीर्तन का एक दल तैयार किया था। जहां कोई स्वदेशी सभा होती थी भजहरी उसकी ख़बर पाते ही अपना दल लेकर पहुंचता था। कलकत्ते की बहुत सी विराट स्वदेशी सभाओं में एड़दह की वह स्वदेशी सङ्कीर्त्तन मण्डली शामिल हुई थी। जब वह मण्डली निकलती

थी तब भजहरी माथे पर गेरुआ की पगड़ी बांधकर लांग कसकर छाती पर जनेऊ के रूप में गेरुआ गमछा लगाकर हाथ में नेशनल ध्वजा या जातीय झण्डा लेकर वन्देमारम् करता हुआ आगे आगे चलता था। भजहरी को हल्ला गुल्ला और शोर सरावा अच्छा लगता था इसीसे दो तीन दिन उससे पहरे वाले सिपाहियों में भिड़न्त होते होते रह गयी थी। सुरेश उसके इस हठ पर बिगड़ता और समझाता था इस लिये वह सब लोगों में कहता फिरता था कि सुरेश बड़े कादर और डरपोक हैं।

भजहरी के भीतर अजीब राजनीतिक ज्ञान था। वह अपने तईं एकस्ट्रीमिस्ट कहता था। उसने कलकत्ते में तिलक और गोखले की स्पीच सुनी थी। वह गोखले को एक्स्ट्रीमिस्ट और तिलक को माडरेट कहता था। क्योंकि गोखले की स्पीच क्या थी कूजे अर्थात् बारूद भरे अनार में आग लगा देना था और तिलक की स्पीच को न्याय और दर्शन की मधुरता से भरा हुआ कहता था।
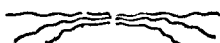
(६)

खाली फैर।

स्वदेशी आन्दोलन के प्रसाद से इस समय सब तरह के स्वदेशी कारबार जोर पर जा रहे थे। नेशनल फार्मास्युटिकल वर्क्स का माल भी खूब कटने लगा था। लेकिन उस कारखाने की पूंजी कम होने से दूकानदारों का पूरा आर्डर सुरेश नहीं पहुंचा सकता था। इस बात को समझकर बड़े बाजार के एक दूकानदार ने कहा—"सुरेश बाबू! कुछ रुपया और

लगाकर अपना कारवार और वढ़ाइये। वाजार में आजकल आप के माल की ऐसी खींच है कि ठीक समय पर माल नहीं पहुंचने से आपका क्रेडिट जाता रहेगा और कारखाने का क्रेडिट एक वार गिर जाने पर फिर सहज ही नहीं उठता।

सुनकर सुरेश के मन में गङ्गागोविन्द की वात याद आयी। छः महीने से सुरेश उनके यहां नहीं गया। अव उनको राजा का खिताव मिल गया है। इस कारण इस समय क्या जानें उनसे काम चल जाय। यही सोचकर सुरेश दूसरे दिन उनसे मिला। राजा गङ्गागोविन्द वहादुर इस समय दिल के दरयाव थे। सुरेश ने उनको मान्यवर सेक्रेटरी की चिट्ठी की वात फिर याद दिलायी। कहा—"स्वदेशी आन्दोलन के कारण इस समय उसके माल का वेतरह डिमाण्ड है।

राजा वहादुर सुरेश से स्वदेशी मामले पर वहुत कुछ कह सुनकर अन्त को वोले—"अव मुझे भरोसा हुआ है कि स्वदेशी कारवार खड़े हो सकेंगे। मैं इस घड़ी और तो नहीं लेकिन अगले हफ्ते में इसके लिये पचास हजार रुपया दे सकूंगा। तव तक अंशनामें के दस्तावेजों की रजिस्ट्री हो जानी चाहिये। इसके लिये अव की सोमवार को तुम खा पीकर वारह वजे के पहले ही यहां आ जाव।"

खुश होकर सुरेश घर लौट गया और पारुल से यह सव कह सुनाया। अर्द्धाङ्गिनी स्वामी के हर्ष विषाद में भी आधे भाग की मालकिन है। भगवान ने अपने हाथ से इस अंशनामें के दस्तावेज की रजिस्ट्री कर दी है।

सुरेश कल्पना के सूत से अपने कारवार का भविष्य वून रहा था। उस सूत से वहुत वढ़िया माल तैयार हुआ करता है। अव एक ही सप्ताह में राजा गङ्गागोविन्द राय उसके कार

खाने में रुपया देंगे। उस समय नेशनल फार्मास्यूटिकल वर्क्स देश में एक नमूने का कारखाना हो जायगा। अगले वार्षिकोत्सव के समय छोटे लाट साहव वहादुर को नेवता देकर बुला लावेगा और गवर्नमेण्ट के आवकारी विभाग से जल्द प्राइवेट डिष्टिलरीका लाइसेंस पाने की कोशिश करना होगी। सुरेश हवा में इसी तरह के महल वनाने लगा था।

इसी समय अकस्मात एनार्किष्टों का वम फटा और चारों ओर विभ्राट हो उठा। एक भयानक आवाज किये विना वम नहीं फटता। उसकी आवाज टेलीग्राफ का तार धरकर धरती के एक छोर से दूसरे तक फैल जाती है। वम की आवाज वहुत दूर तक जाने पर भी वह खाली आवाज है यह सव धीर चिन्ताशील विचारवान मानते हैं। एनार्किष्टों के वम की आवाज से वृटिश साम्राज्य इसी से नहीं उड़ा की वह उतनी हलकी चीज नहीं है। लेकिन उससे वायकाट नामकी चीज एक दम धूल होकर उड़ गयी। चारों ओर खाने तलाशी और धर पकड़ शुरु हुई। चारों:ओर वन्देमातरम् ध्वनि स्तब्ध हो गयी। स्वदेशी का सोता मन्द पड़ गया। और शान्ति-प्रिय समाज की राजभक्ति मुखरा और मूर्तिमती होकर चारों ओर राजशक्ति की पोषकता में खड़ी हुई। एनार्किष्टों के उपद्रव से सव देश की सरकारों को ऐसा लाभ होता है। लेकिन इस उपद्रव से वहुत जगह अनेक निरीह आदमियों की हानि हुआ करती है। सुवूत में हमारे सुरेश चन्द्र और उनका एड़-दह वाला कारखाना है।

वम की आवाज से सुरेश के रोएं खड़े हो गये। उसके मन में डर हुआ कि राजा गङ्गागोविन्द राय कहीं डर कर पीछे पांव न हटा लें।

(७)

भजहरी का कुचक्र ।

भजहरी जाहिर :में एनार्किष्टों का तरफदार होकर कहता था—"नान्यः पन्था विद्यते अयनाय।" नन्दलाल के घर पर भी उसकी पहुंच थी। हेमाङ्गिनी में खूब स्वदेशी भाव है समझकर भजहरी ने एक दिन उससे कहा था कि पहले ढाका जिले के मुन्शीगञ्ज परगने में अनार्किष्टों के साथ उसने वहुत क़ाम किये थे। जव वहां का स्वदेशी दल स्वदेशी डकैती के अपराध में गिरफ्तार हुआ था तव उसको वहा से भाग आना पड़ा है।

भजहरी ने यह भी कहा था कि कृष्णनगर में तारिनी के मकान में उस का एक मामा रहता है उसका नाम प्रेमचन्द कँड़ारी हैं। लेकिन जव सुना कि वह पुलीस का मुखविर है तव से वह उसके साथ भेट करने नहीं जाता था। नहीं तो वरावर पहले कृष्णनगर जाया करता था।

इधर सुरेश को सन्देह हुआ था कि भजहरी उसके कारखाने में कई युवकों को मिलाकर गुप चुप एक अनार-किष्ट दल तैयार करने की कोशिश करता है। इसके लिये सुरेश उस पर खास नजर रखता था।

एक दिन झूमन ने पारुल से कहा—"आज भजहरी वावू ने कारखाने में एक अच्छी आतिशवाजी छोड़ी थी। कलकत्ते से तीन चार ठो मसाला लाकर उससे एक पटाखा बनाया था उसी पटाखे को छोड़ने पर वन्दूक की तरह आवाज़ हुई थी।

सुरेश उस दिन कलकत्ते गया था। जब वहाँ से लौट आया तब पारुल से उसने यह सब बातें सुनीं। दूसरे ही दिन सवेरे उसने भजहरी को बुला कर पूछा—उसने कहा—"मेरे पास Explosives * की एक किताब है। मैंने उसी से एक एक्सपेरीमेण्ट भर किया था।

सु०—तुमने वह किताब कहाँ पायी?

भज०—एक दूकान में खरीदा था।

सु०—उसको किस मतलब से खरीदा था?

भज०—तो इससे हुआ क्या? आप ऐसी साधारण बात से इतना क्यों डरते हैं?

सुरेश ने समझ लिया कि ऐसे आदमी को रखना अच्छा नहीं है। बस, बिना कुछ झगड़ा फसाद के उसको अपने कारखाने से बिदा कर दिया। जाती बेर उसने सुरेश से हाथ पांव पड़कर एक अच्छा सर्टिफिकेट ले लिया।
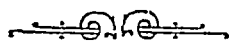
(८)

तलाशी।

आज सोमवार को राजा गङ्गा गोविन्द से सुरेश के भेंट करने की बात है। लेकिन सवेरे ही कोई पचास पुलीस अहलकारोंने पहुंचकर उस का कारखाना घेर लिया। ख़बर मिलते ही सुरेश बाहर आया। इन्स्पेक्टर ने उससे कहा-"हम लोग आप की दवाओं की फैक्टरी और मकान की तलाशी लेने आये हैं।" यही कहकर उन्होंने सर्च वारन्ट दिखलाया।

---

* बड़ी ताकत के अर्थात भक से फूटने वाले

पुलीस के साथ भजहरी भी आया था। उसको देखते ही बहुतों को आश्चर्य्य हुआ। भजहरी बोला–"पुलीस वाले ही मुझे तलाशी का गवाह बनाकर लाये हैं। मैं आप अपने मन से नहीं आया।" कोई पाँच घंटे तक मकान, कारखाना और बगीचे की तलाशी होती रही। सुरेश के मन में पाप तो था नहीं वह सहज भाव से तलाशी में सहायता देने लगा। कहीं एक रत्ती भी पिक्रिक ऍसिड या क्लोरेट आफ़ पोटास नहीं मिला। किसी को उन लोगोंने गिरफ्तार नहीं किया।

तलाशी के अन्त में बड़ी नरमी से सुरेश ने इन्स्पेक्टर से पूछा–"मेरी यह तलाशी किस कसूर में हुई है?"

उन्होंने कहा–हम लोगों को चिट्ठी मिली थी, कि आप के कारखाने में बम तैयार होता है। लेकिन आप चिन्ता न करें मैं रिपोर्ट कर दूंगा कि यहां कुछ नहीं मिला।" तलाशी के समय इन्स्पेक्टर ने बराबर भलमनसत का व्यवहार किया था।

सर्च पार्टी के साथ अख़बार के एक सम्वाददाता भी आये थे। सुरेश उनको पहचानता था। कई स्वदेशी सभाओं में उनको सुरेश ने देखा था। जब पुलीस के लोग वहां से चल पड़े। सुरेश ने उनको पुकार कर दस रुपये का एक नोट दिया और कहा—"इसको आप रखिये और ऐसा कीजिये कि इस तलाशी की खबर अख़बारों में न छपे। नहीं तो मेरे कारखाने की बड़ी बदनामी होगी।"

सम्वाददाता राजी होकर चले गये। लेकिन सुरेश ने देखा कि दूसरे ही दिन सब अख़बारों में उस तलाशी की रिपोर्ट खूब रङ्ग चढ़ाकर छापी गयी है। सुरेश इससे बड़ा लज्जित हुआ उसने अख़बारों में लिख भेजा कि किसी दुष्ट की

चिट्ठी से यह तलाशी हुई थी। इसके लिये उसका या पुलीस का कुछ दोप नहीं है।

लज्जा और चिन्ता में एक सप्ताह बीत गया। उसके बाद एक दिन सुरेश राजा गङ्गा गोविन्द राय से भेट करने गया। उन्होंने उसके कारखाने और घर की तलाशी की खबर उसी दिन अख़बार में पढ़ कर कहा था:-"भगवान ने बड़ी कृपा की। मैं तो बाल बाल बच गया।" जब सुरेश पहुंचा वह देखते ही काँप गये लेकिन बिना कुछ बातचीत किये ही उसको लौटा दिया। और द्वारपालों को बुलाकर कह दिया की खबरदार यह आदमी अब कभी घर में न आने पावे।

कौंसिल के एक मान्यवर आनरेबल ने नेशनल फार्मास्यूटिकल वर्क्स की तलाशी के बारे में एक दिन बङ्गाल कौंसिल में पूछा था। जवाब में सरकार की ओर से कहा गया कि पुलीस को ऐसी कुछ खबर मिली थी जिससे वह तलाशी दरकार हुई थी।

तलाशी के बाद से नेशनल फार्मास्यूटिकल वर्क्स की दशा एक तरह से बिगड़ने लगी। कलकत्ते के बड़े बड़े दूकानदारों ने उस कारखाने का माल लेना बन्द कर दिया। उनमें से एक ने सुरेश से कहा-"ना, ना भैया किसी दिन तुम्हारे माल के साथ बम आ पहुंचेगा। माफ करो बख्श दो। तुम्हारा माल हम को नहीं चाहिये।"

जहाँ सुरेश का माल जाता था वहां जाने पर अब वे लोग सुरेश की वैसी खातिर नहीं करते थे। कितने दूकानदारों ने तो उससे बात करना भी छोड़ दिया था। एक दूकानदार ने उससे कहा था--"जब तक हम लोग माल के लिये आप को न लिखें तब तक आप तकलीफ़ न करें। सुरेश ने समझ

लिया कि अब वही उनके डर का कारण हो रहा है। बस कई महीने तक बेइज्जती और नुकसान सहकर सुरेश ने अन्त को कारखाना बन्द कर दिया।

[६]

भीतर की आँधी।

सीमाबद्ध मनुष्य के भीतर प्राण असीम है उसका अन्त नहीं। कूल किनाराहीन समुद्र से उसकी तुलना हो सकती है। निराशा की काली घटा और विक्षोभ के वायु मिलकर कभी कभी उस समुद्र में विकट आँधी उठाया करते हैं। जिसमें-ज्ञान बुद्धि और विवेक की नाव डूब जाती है। ऊँची लहर मारने वाले इस समुद्र में रोज़ आशा के कितने जहाज़ डूबते उतराते रहते हैं इसका लेखा कौन करता है? फिर कभी कभी इस समुद्र में काम क्रोध लोभादि शत्रुओं का भी भीषण युद्ध हुआ करता है।

इन दिनों सुरेश के प्राण समुद्र में इसी तरह की एक विकट आँधी आयी थी। उसको सात दिन हुए विधुभूषण की एक चिट्ठी मिली। उसमें लिखा था :—

भाई सुरेश!

आज एक महीना हुआ मैं कृष्णनगर लौट आया हूं। इतने दिनों तक मैं कहाँ था यह जानने की तुम लोगों को कुछ जरूरत नहीं है। तुम्हारी शादी की ख़बर मैंने अख़बारों में पढ़ी थी। तुमने तो यार जरूर ही अपने मन में समझा था कि गृहस्थ होकर शान्ति से जिन्दगी बिताओगे लेकिन मुझे

डर था कि तुम आगे चलकर पारिवारिक शान्ति की गोद में सोकर जननी जन्मभूमि का दुःख भूल न जाव।

देखो सुरेश ! तुमने बड़ी भूल की थी। पराये का मुँह ताकने वाले बङ्ग सन्तान को शान्ति कहां मिल सकती है ? मैं पेट भरने के सुख को ही शान्ति कहता हूं। जो खाने विना पेट की ज्वाला से व्याकुल हैं उनके लिये शान्ति की आशा करना ओस से प्यास बुझाने की चेष्टा करना है। इसी से मैंने अपनी जिन्दगी में अशान्ति को सदा के लिये सखा बनाकर आलिङ्गन किया है। इस संसार में जो लोग अन्न विना अशान्त हैं वे ही तो जीते हैं और जो उपवास में शान्ति का उपभोग करते हैं वे मर चुके हैं।

जिस दिन मैंने अख़बार में पढ़ा कि तुम्हारे कारख़ाने की तलाशी हुई है उसी दिन मैंने समझा कि भगवान ने तुमको चेत कराने के लिये तुम्हारी पीठ पर हंटर मारा है। इस देश में स्वाधीन रोज़गार करने का रास्ता कहां तक खुला है ? सो भरोसा है तुम अब अच्छी तरह समझ लिये होगे।

इधर मेरा अज्ञातवास था तो भी बड़े बड़े अफ़सरों के पास तुम्हारा जाना आना और उनके अनुग्रह के लिये तुम्हारी याचना की खबर मुझे थी। अब कहो सुरेश ! तुमको यह समझने में कुछ बाक़ी है कि इस राज्य का एक आदमी राजा नहीं है। बहुवचन में उसके अनगिनित राजा हैं। तैंतीस कोटि देवताओं में संहारकारी शङ्कर जिसको ध्वंस करेंगे ब्रह्मा, विष्णु आकर भी उसकी रक्षा नहीं कर सकेंगे।

तुम्हारे कारखाने की तलाशी के बारे में बङ्गाल सरकार की कौंसिल में सवाल हुआ था, इसको वैध आन्दोलन कहते हैं। क्या इस आन्दोलन को ऐसी कुछ ऐन्द्रजालिक शक्ति है

कि जिससे वह absolute * राज शक्ति को असल में प्रजा-मुखापेक्षी कर सकती है ? Autocratic † सम्राट जो एक हाथ से दान करते हैं वह जब इच्छा हो तब दूसरे हाथ से छीन ले सकते हैं। प्रजा वैध आन्दोलन की रस्सीसे उनका हाथ पाँव नहीं बाँध सकती लेकिन भरोसा इतना ही है कि स्वेच्छाचारी राजाओं का स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहता इससे वह दीर्घायु नहीं होते। उनके तिरोभाव से प्रजा वृन्द को रिहाई मिला करती है।

देखो सुरेश ! मुकुट और राजदण्ड को भी मनुष्यत्व के पलड़े पर वजन करके देखना होगा। अन्ध भक्ति से किसी दिन मुक्ति नहीं होती। मुक्ति के लिये आत्मवलि दान करना चाहिये। अभावनीय आत्मवलि दान देखकर लोग सहमजाते हैं। उसके देवत्व की विद्युज्ज्वाला से सर्वसाधारण की आंखें झुलस जाती हैं। भाई सुरेश ! हम लोगों की मृन्मयी मा तुमको त्याग मार्ग पर बुला रही है। त्याग ही मानो सोने की किङ्किन चिह्ना और मौएट एवरेष्ट है।

तुम्हारा चिर सुहृद
श्री विधिभूषण घोष।"

इस पत्र को बार बार पढ़ने से सुरेश के भीतर जो आँधी उठी थी उसकी झोंक में राजभक्ति के जहाज़ का लङ्गर टूटा चाहता था। उसके मन में यह बात बैठी कि इस देश में वैध आन्दोलन से केवल समाचार पत्रों का कालम भरने के सिवाय और कुछ फल नहीं होता। पराधीन जाति के शिल्प वाणिज्य

---

* बिल्कुल निरंकुश।

† स्वेच्छाचारी।

का उद्योग राजनीतिक अपघात से नष्ट हो सकता है इसका उसको प्रत्यक्ष प्रमाण मिला था। उसने ठीक किया कि राज-भक्ति से देश-भक्ति का सर्वत्र मिलान नहीं हो सकता।

निराशा में पड़ने पर जो खोज की प्रवृत्ति होती है उसका प्रभाव बहुत अधिक होता है। उसीके वश में आकर सुरेश ने झट कुछ किताबें जुटायीं और उनको पढ़ने लगा। उन पुस्तकों में फ्रांस के राष्ट्र विप्लव का इतिहास, मेट्सिनी की जीवनी, अमेरिका के स्वाधीनता संग्राम की इतिवृत्ति, रूस के निहलिष्ट और अनार्किष्टों की कथा थी। कच्ची उम्र में इन पुस्तकों के पढ़ने से जो होता है सुरेश को भी वही हुआ। उसका सिर कुछ गरम हो उठा।

इन्हीं दिनों पञ्चानन बाबू नन्दलाल वगैरहः को देखने के लिये एड़दह में आये। जब तक चटकल बन्द नहीं होगा नन्दलाल नहीं लौटेगा यही समझ कर उन्होंने सुरेश ही के यहाँ स्नान भोजन किया। सुरेश ने भी इसके लिये आग्रह करके उनको ठहराया।
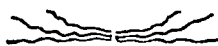
[१०]

राजनीतिक वितण्डा।

पाँचू मामा से स्वदेशी पर बात करने के समय सुरेश रिवोल्यूशन शब्द बार बार व्यवहार करने लगा। और कहा कि रिवोल्यूशन कहते हैं—लालसागर पार होने को।

सुरेश की बात सुनते ही पाँचू बाबू सहम गये। उन्होंने समझा कि उसके मगज़ में कुछ सांघातिक चीज़ घुस गयी है। कहा—"सुरेश! रिवोल्यूशन का अर्थ तुम ने क्या समझा है?"

सुरेश बोला--"राज-शक्ति के ऊपर हथियार बन्द होकर प्रजा-शक्ति का उठाना।"

पाँ०-तो मालूम हुआ तुमने रिवोल्यूशन का अर्थ play of sword * समझा है। मैं ऐसा नहीं समझता। मेरी राय में अतीत (बीता हुआ) जहां जबरदस्ती वर्तमान की जगह पर दखल करके बैठा रहता है वहां अटल भविष्यत जोर से आकर उसको हटा देने के लिये जो टक्कर लेता है उसी का नाम रिवोल्यूशन है। रिवोल्यूशन कहने से ही मारकाट समझना भूल है। Bloodless वा बिना खूनखराबो के भी तो रिवोल्यूशन हो सकता है।

सु०—राज विद्रोह-और राष्ट्र-विप्लव में खूनखराबी जरूरी है फरासी विप्लव में खून की नदी बही थी।

प०--इसी लिये फ्रांस का विप्लव संसार के इतिहास में सदा के लिये बदनाम है। और जिस समय फ्रेञ्च रिवोल्यूशन हुआ था उस समय रेलवे, टेलिग्राफ, मेशीनगन आदि नहीं थे। उस समय वहां के सम्राटों की ज्ञान बुद्धि भी आज कल की गवर्नमेंट की तरह तीक्ष्ण नहीं थी। प्राचीन काल के साम्राज्यों में दुःखी होकर प्रजा विद्रोही होती और राष्ट्र-विप्लव कर सकती थी। लेकिन आज कल अब प्रजा विद्रोह उतनी सफलता नहीं पा सकता। केवल बृटिश साम्राज्य क्यों जर्मनी, फ्रांस इटली और अमेरिका के युक्त राज्य में कहीं प्रजा-विद्रोह हो तो गवर्नमेंट उसको अब सहज ही दमन कर सकती है। इन सब साम्राज्यों की गवर्नमेण्ट एक High

---

* तलवार का खेल।

intellectual plane * पर प्रतिष्ठित है। देश में अन्त-र्विप्लव होने से अफसर लोग उन पर आजकल के ज्ञान विज्ञान के उत्तम उपाय बड़ी चतुराई से चलाया करते हैं। उससे विप्लव जल्द हीनबल होकर नष्ट हो जाता है। मेरा तो विश्वास है कि मेटसिनी गैरिवाल्डी परलोक से लौट आवें तो भी इन साम्राज्यों में प्रजा-विद्रोह सफल नहीं कर सकेंगे। और एक खास बात यह है कि इस युग में इन सब साम्राज्यों में political expionage† को एक perfect science‡ बना रखा है। इसी कारण जो नेता प्रजा-विद्रोह करने के लिये पर्दे में छिप कर कोशिश करते हैं उनका कोई भी काम आज कल गवर्नमेण्ट से छिपा नहीं रहता। इस कारण विद्रोह शुरू होने के बहुत पहले ही ये लोग श्रीधर पहुंचा दिये जाते हैं। इन दिनों किसी बड़े साम्राज्य में कहीं विद्रोह का कारण और सुयोग आने पर भी उसको काम में लाने के लायक जो आदमी नहीं मिलते उसका कारण यही है। with the hour will come the man § यह बात अब सर्वत्र नहीं घटती।

पञ्चानन बाबू की बात सुनकर सुरेश कुछ निराश हुआ। बोला—"तो क्या हम लोगों को स्वराज्य मिलने की कुछ आशा नहीं है।"

---

* ज्ञान और बुद्धि की ऊँची सीढी।

† राजनीतिक चरतंत्र

‡ सब अङ्ग से पूर्ण विज्ञान।

§ समय आने पर जरूरत लायक आदमी भी आ जुटेंगे।

पञ्चानन बाबू बोले–"है क्यों नहीं ? जरूर है। लेकिन रिवोल्यूशन से हम लोगों को स्वराज्य मिलने की आशा नहीं है। हाँ शासन-विषयक लगातार परिवर्तन के भीतर से हम लोगों को यह चीज़ थोड़ा थोड़ा करके मिल सकती है। और यह भी हो सकता है कि किसी अभावनीय अन्तर्जातिक घटना के घात-प्रतिघात से भारत साशन की वर्त्तमान पद्धति धीरे धीरे वदल जा सकती है। आज जापान से इङ्गलैण्ड की मिताई है। अगर आगे चलकर इसमें कुछ फ़ेर वदल हो अथवा यदि विराट् चीन साम्राज्य कुछ काल में एक powerful demo-cratic republic * हो जाय और उससे वृटिश सरकार की टक्कर होने का ढङ्ग हो तो चालीस करोड़ चीनियों को रोकने के लिये तीस करोड़ भारतवासियों के हाथ देश-रक्षा का भार छोड़ देना पड़ेगा। उस समय जरूरत होने पर भारत की प्रजा में भी conscription † करना होगा उस दिन भारतवासी वरावरी के हक पर पहुंच कर अङ्गरेज को यथार्थ भ्रातृभाव से आलिङ्गन करेंगे। उस दिन हो सकता है कि वृटिश साम्राज्य का नाम भी वदल कर इण्डो वृटिश साम्राज्य हो जाय। हमलोग इस संसार स्थायी विशाल साम्राज्य के उत्तम अंश में हैं। कुछ अदूरदर्शी लोगों की कृपणता के कारण हम लोग आज कल इस अधिकार से वञ्चित हुए पड़े हैं तो क्या इसीलिये हम लोग इस सुन्दर समृद्धिशाली साम्राज्य के न्याय अंश पर का अपना हक़दावा छोड़ देंगे ? इस दावे को पकड़े रहने से जरूर एक न एक

* सर्व साधारण प्रजा का शक्तिशाली प्रजातंत्र।

† राज्य के कर्म्मठ पुरुषों को सैनिक होने के लिये कानून

दिन हम लोग अपना ईश्वर दत्त अधिकार पा सकेंगे। देखो सुरेश ! अङ्गरेज़ बुद्धिमान परिडत की जाति हैं। "सर्व्वनाशे समुत्पन्ने अर्द्धं त्यजति पण्डितः" वैसा दिन आने पर वे लोग हमारे हाथ में साम्राज्य का आधा अधिकार छोड़ देंगे। ऐसा काम नहीं है कि जरूरत पड़ने पर अङ्गरेज़ जाति उसे नहीं कर सकती।"

सुरेश ने पाँचूमामा को विधुभूषण की चिट्ठी दिखलायी। उन्होंने उसको पढ़कर कहा—"अरे वाप रे! मैं तो देखता हूं विधुभूषण एक दिन अनार्किष्ट हो जायगा। उसका आगे क्या होगा इसका विचार करके तो मेरा कलेजा दहल जाता है।"

सुरेश ने पूछा—"क्यों अनार्किष्टों से क्या कुछ काम नहीं होता?"

पं०—हाँ काम क्यों नहीं होता। देश भर में सी० आई० डी० पुलीस का काम वहुत बढ़ गया है। अविश्वास की काली घटा आकर समस्त समाज पर छा गयी है। आज कल कोई किसी को विश्वास करके मन की बात खोलकर नहीं कह सकता। वक्ताओं को अपने मन का भाव साफ़ जाहिर करने की शक्ति नहीं हैं। लेखकों के लेख की स्वाधीनता चली गयी है। Deportation without trial* का युग आ गया है। अफ़सरों की सन्देह दृष्टि होने के कारण हम लोगों की जातीय चेष्टाएँ पहले की तरह सफलता नहीं पा सकती हैं। समाज में

* बिना विचार के देश निकाला।

शठता और स्वार्थपरता बढ़ती जाती है। सुरेश, तुम जानते हो कि इस राजनीतिक अशान्ति के दिनों कितने लोग राज-भक्ति का धन्धा चलाकर कितने तरह से अपना मतलब गाँठने की कोशिश कर रहे हैं? अनारकिष्टों के उपद्रव का फल तुमको हम कितना बतलावेंगे?"

सु०—जिनको अनारकिष्ट कहा जाता है उनमें अधिकतर तो शिक्षित ही हैं। वे सब क्या सचमुच अनार्किष्ट हैं? क्या वे लोग अराजकता ही चाहते हैं?

पं०—लेकिन कुराह से गिरे हुए इन युवकों के उपद्रव से ही तो देश में अराजकता आती जाती है सुरेश! बम, गुप्त-हत्या और लूट पाट से तो स्वराज्य नहीं मिलता। इससे तो व्यर्थ राजकर्म्मचारियों का क्रोध और देश के लोगों का दुःख ही बढ़ता है।

सुरेश सोचने लगा। पाँचूमामा बोले—"विलायत के प्रसिद्ध स्टेड साहब कह गये हैं:-The Bomb has failed in Russia; it will fail in India as well. †
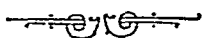
[११]

जवाब।

सुरेश के लिये पञ्चानन बाबू चिन्तित नहीं हुए। उनको चिन्ता हुई विधुभूषण के लिये। वह जानते थे कि सुरेश के पाँव में पारुल की बेड़ी पड़ गयी है। जिसको प्रेम की वस्तु मिल गयी है वह मौत के रास्ते पर सहज ही नहीं जा सकता लेकिन विधुभूषण ने ब्याह नहीं किया। और जिन सब के होने

† रूस में बम नाकाम हुआ भारत में भी वही होगा।

से शिक्षित युवक अनारकिष्ट होता है विधुभूषण के भीतर वह सब पूरे दरजे पर मौजूद हैं।

पञ्चानन बाबू ने सुरेश को कहा था:—"तुम विधुभूषण को चिट्ठी का जवाब मत देना। मैं ही उसको लिखूंगा।" इसी कारण उन्होंने नीचे लिखी हुई चिट्ठी लिखकर विधुभूषण के नाम कृष्ण नगर के पते से छोड़ दी।

" प्रिय विधुभूषण

तुमने सुरेश को जो चिट्ठी लिखी थी वह मैंने देखी है। उसके विषय में मुझे जो कुछ कहना है वह इस चिट्ठी में लिखता हूं।

पहली और मुख्य बात यह है कि रूस गवर्नमेण्ट की तरह वृटिश गवर्नमेण्ट स्वेच्छाचारी राजशक्ति पर प्रतिष्ठित नहीं है। इस कारण इस सरकार से शत्रुता वा चिर विरोध करना उचित नहीं। शासन यंत्र में अपना अधिकार धीरे धीरे बढ़ाना होगा। उसको नष्ट करने की कोशिश करने से परिणाम में हमी लोगों की हानि होगी।

यह मैं मानता हूं कि आजकल राज कर्म्मचारी लोग स्वदेशी आन्दोलन से उतनी सहानुभूति नहीं दिखलाते। लेकिन एक दिन इस देश में जर्म्मनी का शिल्पवाणिज्य रोकने के लिये उनको लाचार होकर स्वदेशी शिल्पवाणिज्य का पोषक होना पड़ेगा। हम लोगों को उस शुभ दिन की राह देखना होगी। अधीर रोने से नहीं बनेगा।

वैध आन्दोलन पर तुम इस तरह झाड़ू क्यों उठाते हो? सब वैध आन्दोलन भिक्षा माँगना नहीं है। वैध आन्दोलन

का उलटा anarchism and terrorism * है रूस के विख्यात पेट्रियेट स्टेपनियक् पहले terrorism का खूब समर्थन करते थे। उन्होंने अपनी पुस्तक underground Russia† और दूसरी कितावों में वम और राजनीतिक गुप्त हत्या का समर्थन करके बहुत कुछ लिखा है। इसके लिये उनको रूस से इङ्गलैण्ड भाग जाना पड़ा था। लेकिन पकी उम्र में जब बुद्धि पकी हो गयी स्टेपनियक की यह राय बिलकुल बदल गयी। उन्होंने अपनी पिछली उम्र में लिखी हुई King Log and king Stork नामक पुस्तक में लिखा है :-

Terrorism is the worst of all revolutionary warfare; and there is only one thing that is worse still-slavish submissiveness and the absence of any protest. We could not look upon the revival it than as a disgrace for Russia yet it would be a Warse far Russia if she is not able to produce by way of protest anything stronger than terrorism. Now there is only one means of preventing the possibility of such an out burst and of turning to good account popular movements when they begin. It is for the whole of the Liberal Opposition to avail itself of the present temporary lull, and by broad and energetic action to compel

---

* अराजकता और राजनीतिक खून खराबी।

† भूधरे का रूस।

the unsettled Government to change the drift of its politics *

इटली के उद्धार करने वाले और-यङ्ग इटली सम्प्रदाय की प्रतिष्ठा करने वाले जोसेफ मेटसिनी को तुम जरूर गुरू की तरह मानते हो। वह अपनी आत्म जीवन विवरणी में लिख गये हैं:—

I abhor-and all those who know me well know that I abhor-bloodshed and every species of terror erected into a system, as remidies equally ferocious,unjust,and inefficacious against evils that can only be cured by the diffusion of liberal ideas. I believe that all ideas of vengeance or expiration, as the basis

---

* भावार्थ—विप्लव के जितने हथियार हैं, उनमें गुप्त हत्या सब से जघन्य है। लेकिन इससे भी जघन्य है गुलाम का दास्यभाव और सब तरह का प्रतिवाद वर्जन। रूस के लिये हम लोग गुप्त हत्या का पुनराभिनय जरूर कलङ्क की बात कहेंगे। अगर गवर्नमेण्ट के विरुद्ध प्रतिवाद रूप में उससे और कोई अधिक शक्ति शाली उपाय नहीं निकाला जा सके तो और अधिक कलङ्क की बात है। अब उदार राजनीतिक लोग यदि जीजान से कोशिश करके शासन प्रणालीकी धारा बदल देने में समर्थ हों तो गुप्त हत्या का पुनराभिनय निवारित होगा और प्रजा का वहां आन्दोलन भी कुछ सार्थक होगा।

of a penal code, are immoral or useless, whether applied by individuals or by society.

Young Italy while repudiating the vindictive formulae and customs of carbonarism, abolished all threats of death against traitors.

To all those, who proposed to us the destruction of spies or traitors, we replied: 'Let the Judas be made known; the infamy will be punishment enough';*

---

* भावार्थ—मैं रक्तपात और गुप्त हत्या तंत्र को घृणा करताहूँ। जोलोग मुझे अच्छी तरह जानते हैं उनसे मेरी यह राय छिपी हुई नहीं है। अकेले उच्च उदार भाव के प्रचारसे जो रोग आरोग्य हो सकता है उसके लिये हिंसासे उपजे हुए गर्हित अपकर्म्म औषध नहीं हो सकते। मेरा विश्वास तो यह है कि सामाजिक और व्यक्तिगत दंडविधि की जड़ में बदला का भाव होने से वह नीति विरुद्ध और निरर्थक होताहै। नव्य इटली ने सब लोगोंपर से बदला लेने वाले सब अनुष्ठान उठालिये हैं और देशद्रोहियों को प्राणदंड से रिहाई करदी है।

जिन लोगोंने स्वदेश द्रोही और गुप्तचरों के खूनकी बात चलायी थी उनके जवाब में हम लोगों ने कहा था इन लोगों का अपराध जाहिर करदो। सब लोगों की घृणा से ही उनको उचित दंड हो जायगा।

मुझे आशा है इन दो विख्यात पुरुषों का मत पढ़कर तुम अपना ख्याल बदल दोगे।

तुमने लिखा है कि मुकुट और राजदण्ड को मनुष्यत्व के पलड़े पर वज़न करना होगा। यह बात तुम्हारी सोलहो आने ठीक है। लेकिन राजशक्ति प्रजाशक्ति की समष्टि ही होती है। राजशक्ति में त्रुटि या कमी हो तो प्रजाशक्ति को उस को पूरा करना होगा। राजा और प्रजा का यही सनातन सम्बन्ध है।

अन्धशक्ति सर्वत्र ही बन्धन का कारण होती है यह बात सच है। अन्ध राजभक्ति और अन्ध देशभक्ति दोनों से समाज का बराबर ही नुकसान होता है। भरोसा है तुम इन दोनों से सदा बचे रहोगे। अन्ध स्वदेश भक्ति सहज ही Anti foreign feeling अर्थात् परजाति विद्वेष से कलुषित हो जाती है। जब तुम्हारे भीतर उचित रूप से ज्ञान का आलोक प्रवेश करेगा तब वहाँ किसी की अन्धभक्ति या अन्ध विद्वेष जगह नहीं पा सकता। विक्टर ह्यूगो कहते हैः—All hatred goes out of the heart in proportion as all light enters the mind *

मैं कुशल से हूं। एड़दह में नन्दलाल और स्त्री सहित सहित सुरेश भी कुशल पूर्व्वक है। अपना कुशल देते रहना।

शुभ चाही—
श्रीपञ्चानन राय चौधरी।

डाक पियन जब यह चिट्ठी विधुभूषण के डेरे पर दे गया

* हृदय में जितना ही प्रकाश आवेगा उतनाही वहाँ से विद्वेष का अन्धकार दूर होगा।

तव वह कहीं वाहर गया हुआ था। चिट्ठी भजहरी के हाथ में पड़ी। उसने उसे खोलकर पढ़ा और जेव के हवाले कर दिया। "होनहार कौन रोकेगा ?"

(१२)

अन्तःशीला फल्गू।

नेश्नल फरमासिउटिकल वर्क्स से लौट आकर भजहरी वागवाजार में कई दिनों तक रसिकलाल के यहां रहा था। उस कारखाने की तलाशी के अवसर पर उसको एक वार फिर एड़दह जाना पड़ा था। उसके वाद वह कृष्णनगर चला गया। वहां स्वदेशी हल्ला गुल्ला करने के लिये नया कुछ तैयार करने का उसका मतलव था। मक्खी जैसे जखम को झट खोज लेती है भजहरी ने उसी तरह विधुभूषण को ढूंढ लिया था। उसने सुरेश की लेवोटेटरी का सरटिफिकेट और फूटनेवाली (विस्फोरक) चीजें तैयार करने की पुस्तक विधुभूषण को दिखलाकर कहा था—"मैं वहुत वढ़िया वम वना सकता हूं।"

भजहरी और विधुभूषण एकही डेरे में रहते थे। दोनों एक जान और दो कालिव थे। उन दोनों ने दस वारह स्वदेशी जवानों को अपने साथ मिला लिया था। उनमें से कोई जाहिर होकर कुछ स्वदेशी होहल्ला नहीं करता था। यहां तक कि सव एक जगह मिलते भी नहीं थे। वाहर का कोई नहीं जानता था कि उनका कोई दल है।

विधुभूषण ने एक वार स्वदेशी करके कैद काटा था।

इससे अब दागी होने के कारण वह सब में पीछे रहता था भजहरी बेदाग था और उसको साहस भी कुछ अधिक था इसलिये वह बेखटके सब के यहां जाया करता था। दारोगा दीन दयाल को देखकर भजहरी हंसता और कहता थाः-"तू मेरा क्या कर सकता है?"

इन युवकों के काम और उनका बुरा नतीजा बयान करने के पहले हम पाठकों को उनमें से किसी किसी का परिचय देना अच्छा समझते हैं।

कृष्ण नगर के सब जज राय हाराधन मुखोपाध्याय बहादुर के छोटे लड़के कुमुद नाथ के पास लाइसेंस से लिया हुआ एक वृटिश बुल्डाग रिवाल्वर (पिस्तौल) था। कुमुद के बाप के नाम एक बन्दूक और दो तलवार का पास था। कुमुद अभी पूरे तौर से विधुभूषण के दल में मूंड़ा नहीं गया था। तौ भी भजहरी ने उसका लाइसेंस लेकर कलकत्ते के किसी गनमेकर की दूकान से ढाई सौ कारतूस खरीद लिया था।

भजहरी दन्द फन्द वाला छोकड़ा था। उसने छिपकर तीन पिस्तौल चुराये थे। उस पर के नम्बर उसने रेती से घिस डाले थे। भजहरी अपने दल के छोकड़ों को कहता था।

"अमेरिका से पांच सौ पिस्तौल छिपे छिपे हम लोगों ने मंगाये हैं। उनमें से अभी यही तीन लाया हूं। जरूरत होने पर और ला दूंगा। एक पोर्टमेंटो में वह सब हथियार और एम्यूनिशन रखकर कुमुदनाथ के घर रख आया था। लेकिन कुमुद को मालूम नहीं था कि पोर्टमेंटो में क्या क्या है? भजहरी विधुभूषण से कहता था-"सब जज का मकान

हम लोगों का आर्सिनल है * पुलीस को सन्देह करके वहां तलाशी लेने का साहस नहीं होगा।

बेनीमाधव और मोतीलाल ने पहले विधुभूषण के साथ जेलखाना भोगा था। इस समय जब उनका स्कूल से नाम काटा गया तब दोनों नामकटे सिपाही हो गये थे। बेनी को खाने का ठिकाना था और मोती भी उसी में से हिस्सा लगा लेता था। दोनों एकही डेरे में रहते थे। मोती का सब खर्च बेनी ही देता था। भजहरी उनसे कहता था— "खाली कैद काटने से बस नहीं हुआ जान दे देना होगा मोती एक गीत गाता था। उसमें एक पद यह थाः--

माटी को तन माटी में मिल जाना है।
पर निष्फल नहीं गवाना है॥

उसकी मण्डली के बाकी युवकों में 'नये रङ्गरूट' ही बहुत थे उनमें योगेन नाम का एक लौंडा था जिसके मसें भी नहीं भीगी थीं। वह कृष्ण नगर के एक छापेखाने में कस्पोजिटर था भजहरी ने उससे कहा—"देखो भाई! हमको छापेखाने के भीतर से देश का काम कर देना होगा। तुम तो इन्शियेटेड मेम्बर हो।" उसी छापेखाने से भजहरी की एक कविता युगान्तर नाम की छिपाकर छापी गयी थी। उसके सिरे पर गीता का वह पहला श्लोक— "यदायदाहि धर्म्मस्य ग्लानिर्भवति भारतृ" उधृत किया गया था। और भीतर खाली मार मार काट काट की आवाज भरी थी।

इसी तरह एक बरस तक इस राजानीति के षड़यन्त्र

---

* हथियार बनने की जगह।

की पतली धारा कृष्णनगर के समाज के भीतर से फल्गू नदी की तरह छिपे छिपे वहती रही थी।

(१३)

हेमाङ्गिनी की कमहिम्मती।

विधुभूषण वहुत दिनों से चाहता था कि एड़दह में अनार्किष्टों का एक नया सेंटर या केन्द्र वने। इसी मतलव से उसने सुरेश को चिट्ठी लिखी थी। पञ्चानन वावू ने उस की चिट्ठी का जो जवाव भेजा था वह विधुभूषण के हाथ में नहीं पड़ा। भजहरी उसको गप्प कर गया था।

उधर जवाव नहीं पाने से विधुभूषण ने समझा कि सुरेश मौनं 'सम्मति' लक्षणम् का कायल न भी हो तो आधा राज़ी जरूर है। एक वार उससे भेट करने पर ही सव पूरा हो सकता है। लेकिन भजहरी ने विधुभूषण से कहा था—"सुरेश वड़े डरपोक हैं। मैंने उनके कारखाने में वम का एक्सपेरीमेंट किया था। इसी से उन्होंने मुझे वहाँ से निकाल दिया। उन से कोई काम नहीं हो सकता लेकिन एड़दह में एक स्त्री है। उस से हम लोगों का वहुत काम सिद्ध हो सकेगा। वह नन्दू वावू की वहन हेमाङ्गिनी है। हेमो वहन अजीव साहस की छोकड़ी है।

चाहे जो हो विधुभूषण एक दिन सवेरे ही सुरेश से भेट करने के लिये एड़दह पहुंच गया। भजहरि भी साथ आया था। वह उसको नन्दलाल के यहां ले गया। नन्दलाल वहुत दिनों पर विधुभूषण को देखकर आनन्दित हुआ। भजहरी को

वह पहले से पहचानता था। विधुभूषण ने नन्दलाल से पूछा—"यहां स्वदेशी कैसा चलता है।"

नन्दू०—आज कल तो यहा एक ठो स्वदेशी स्टोर खुला है। पढ़े लिखे भले आदमी जहां तक बनता है। स्वदेशी चीजें वहां से खरीदते हैं लेकिन मिल के कुली लोग तो विलायती ही कपड़ा पहनते हैं।

भज०—मीठी बातों से वे विलायती नहीं छोड़ सकते। कुली मूर्ख होते हैं। 'मूर्खस्य लाठौषधि' होती है। उन पर कुछ जोर किये बिना काम नहीं होगा।

नन्दू—जोरजबर्दस्ती करने से पुलीस केस हो जायगा फिर जेल जाना पड़ेगा।

भज०—जेल से जो इतना डरेगा उससे स्वदेशी नहीं होगा।

विधुभूषण नन्दलाल को अच्छी तरह जानता था। बोला—"जाने दो जी! वह बात छोड़ो। हम को सुरेश से एक बार भेट करना है। तुम साथ चलकर उसका घर हम को दिखला दो।"

भज०-मैं तो भाई सुरेश के घर पर नहीं जाऊंगा। तब तक मैं एक बार कलकत्ता जाकर मौसा जी से भेट कर आऊँगा।

न०-यह कैसी बात करते हैं? आप लोगों को स्नान भोजन तो यहीं करना होगा।

विधु०—मेरा इरादा है कि सुरेश ही के यहां चलकर स्नान-भोजन करूँ अभी उतना दिन तो चढ़ा नहीं है। इनको कलकत्ता जाना है तो जायँ।

बस नन्दलाल विधु को साथ लिये हुए सुरेश के घर चला गया और हेमाङ्गिनी ने भजहरी को जलपान के वास्ते दिया।

भजहरी ने जलपान के समय पूछा—"क्यों बहन तुम ने आनन्दमठ पढ़ा है?"

हे०—हां पढ़ा है।

"तब तो तुम जानती ही हो कि सन्तान सम्प्रदाय किसको कहते हैं?"

हे०—कुछ कुछ जानती हूं।

"कुछ कुछ,जानने से नहीं होगा। हम लोगों ने कृष्णनगर में उसी तरह का एक दल बनाया है। यहां भी एक सन्तान सम्प्रदाय बनाना होगा और तुमको हम लोगों की शान्ति होना होगा।

हे०—ना, ना! दादा मैं घोड़े पर चढ़ना नहीं जानती न पेड़ पर ही चढ़ सकती हूं। इन दोनों को छोड़ कर और जो करना हो मैं कर सकूंगी।

"नहीं, बहन! काम पड़ने पर देश के लिये तुम सब कर सकोगी। तुम स्त्री हो। स्त्री ही शक्तिरूपी है। तुम लोगों के जागे बिना देश नहीं जागेगा। इसी से कवि ने कहा—

"बिना जागे भारत ललना—
यह भारत जागेना जागेना।"

हे०—ना, ना! बाबा! मुझे इतना बल बुद्धि या साहस नहीं है।

भज०—तुमको बल,बुद्धि और साहस नहीं है तो किसको

है बहन ? कृष्णनगर के राधावल्लभ बाबू के मुंह से जो तुम्हारे साहस और बुद्धि की बड़ाई हमने सुनी है उससे हम जान गये हैं कि तुम सब कर सकती हो। देखो, बहन! हम लोग तुमको अब छोड़ेंगे नहीं। तुम रणचण्डी रूप होकर हम लोगों को जोश देना हमलोग वन्देमातरम् बोलकर मौत के मुंह में कूद पड़ेंगे।

आनन्दमठ वाली शान्ति की जगह लेने लायक हेमाङ्गिनी नहीं थी क्योंकि भजहरी के मुंह से राधावल्लभ का नाम सुनते ही वह कांप उठी। भजहरी उसको नहीं समझ सका। हेमाङ्गिनी ने उससे पूछा—"राधावल्लभ वकील से तुम्हारा बड़ा मेल देखती हूं। तुम क्या उसके मकान में रहते हो ?"

अब भजहरी ने समझ लिया कि राधावल्लभ की बात कह देना उचित नहीं हुआ। उस बात को सम्हालने के लिये बोला—"नहीं बहन! मैं तो विधुभूषण के डेरे पर रहता हूं। राधावल्लभ तो महापातकी बदमाश है। उसने तुम लोगों की जो फजीहत की थी वह मैं अच्छी तरह जानता हूं। मैंने तो बहन! यह प्रण किया है कि अपने ही हाथों उसका सिर काटकर तो तुम लोगों की बेइज्जती का बदला लूंगा। मैंने अपनी यह छिपी प्रतिज्ञा तुम से कही है बहन! देखो कहीं और से मत कहना।"

हे०—भगवान उसको दण्ड देंगे। वेही पापी का दण्ड-विधान करते हैं।

भज०—मेरे ही हाथ से भगवान उसका दण्ड-विधान करेंगे। इस काम में मुझे निमित्त रूप से रहना होगा।

चाहे जैसे हो हेमाङ्गिनी राधावल्लभ को उचित दण्ड होते

देखना चाहती थी। इसलिये उसने भजहरी को भगवान का भेजा हुआ प्रिय जन समझा। कोई घंटे भर तक हेमाङ्गिनी से वात करने वाद चलती वेर भजहरी ने उसको कहा--
"अब मैं नन्दू वावू के लिये यहां वैठकर राह नहीं देखूंगा वहन! इस घड़ी मुझे कलकत्ता मौसाजी के पास जाना है। मेरा यह वैग रहने दो यहीं। अपनी पेटारी में इसको जतन से रखो। जब कृष्णनगर जाने लगूंगा तब मिलने आऊँगा। तभी इसको लेता भी जाऊँगा।

यही कहकर भजहरी केनविस का एक छोटा वैग हेमाङ्गिनी को देकर चला गया। वैग भारी था उसमें तीन पैसे का एक ताला भरा था। लेकिन हेम की पेटारी में जगह तो थी नहीं इस लिये उसने दीवार में लगे एक हुक पर उसे लटका दिया।
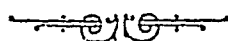
[१४]

विफल प्रयास।

विधुभूषण आज एक सप्ताह से सुरेश के कारखाने में टिका है। धर्म्म, समाज, और राजनीति पर उसकी सुरेश से वरावर वहस हुआ करती है। भूमन वहुत दिनों पर अपने ओल्डफ्रेण्ड (जेलखाने के) विधु वावू को देखकर खुश हुआ है। उसने देखते ही उनसे कहा था—"अब तो वावू! मैं चोरी ओरी नहीं करता और खूब मजे में रहता हूं।"

इसी अवसर पर विधुभूषण से वहां के कई युवकों की जानपहचान हो गयी। एक दिन उसने मजदूर मण्डल और रात्रि पाठशाला देख आकर सुरेश से कहा--"एक साहब जब

इन दोनों के प्रधान हैं तब इन चीज़ों से स्वदेशी या स्वराज्य को कुछ नहीं मिल सकेगा।"

सुरेश ने कहा-"हिन्दुस्तान में कोई लाख से ऊपर साहब हैं। उनको अलग करके सार्व्वजनिक स्वराज्य गठन करना नहीं हो सकता। हिन्दुस्तान में हिन्दू ही को स्वराज्य प्रतिष्ठा करनी होगी इसमें मुसलमान या साहब लोगों का अधिकार काहे को रहेगा?

सु०--तो तुम्हारी राय है कि इस हिन्दू स्वराज्य में भारत वर्ष के मुसलमान, कृस्तान, यहूदी पारसी आदि जातियों को हिन्दूओं के अधीन होकर रहना होगा?

"हाँ कुछ कुछ ऐसा ही होगा।"

सु०—मैं तो भाई तुम्हारी इस कंजूसी और तंगदिली के स्वराज्य का तरफदार नहीं हो सकूंगा। ऐसा स्वराज्य दरकार भी नहीं है। तुम्हीं पहले कहते थे कि एक जाति दूसरी जाति को अधीन करके रखे तो दोनों की अधोगति होती है।

अब विधुभूषण ने कुछ सोचकर पूछा--"तब तुम कैसा स्वराज्य चाहते हो?"

सुरेश ने कहा--"जिस स्वराज्य में अङ्गरेज, बङ्गाली, मद्रासी, मरहठा पञ्जाबी आदि सब का बराबर अधिकार हो वही स्वराज्य हम चाहते हैं। जो आदमी धर्म्म या किसी खास जाति की दीवार पर भारत के भावी स्वराज्य का छप्पर डालना चाहता है वह जरूर पागल है।

और एक दिन विधुभूषण गीता का--'वासांसि जीर्णानि' कहकर सुरेश को समझाता था कि देह के ध्वंश होने से आत्मा

का नाश नहीं होता। क्योंकि आत्मा अविनाशी है। कहा--"हम लोग जैसे पुराने कपड़े छोड़कर नये पहनते हैं वैसे ही आत्मा भी एक देह त्याग कर दूसरी धारण करती है। आत्मा के अमर होने पर ही विश्वास करके स्वदेशी युवक फांसी लटक कर प्राण देने जाते हैं।

सुरेश बोला—"वे सब छिपकर नर हत्या करते हैं। इसी अपराध से फांसी पाते हैं। इस तरह गुप्त हत्या और आत्म-घात से देश का क्या काम होता है सो मैं नहीं समझ सकता। इस गुप्त हत्या रूपी मच्छड़ के काटने से गवर्नमेन्ट नहीं हिल सकती यह तो ठीक ही है। लेकिन इससे देश का कुछ काम होता है यह कैसे कहूं। अगर वेजरूरत प्राण देने से ही देश का काम होता हो तो चलो हम लोग कलकत्ता फ़ोर्टविलियम के पास किसी पेड़ में फांसी लगाकर झूल पड़ें। इस से देश का उद्धार हो जायगा।"

सुरेश के इस ताने से विधुभूषण विगड़ उठा और बोला-"देखो सुरेश! अब तुम से काम नहीं होगा। तुम बहुत पीछे पड़ गये हो।" वस उसी दिन वह कृष्णनगर चला गया।
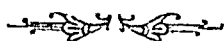
[१५]

भजहरी का वेग।

आज पन्द्रह दिन से भजहरी का वेग हेमाङ्गिनी के घर में दीवार की खूंटी पर लटक रहा है। उसको भजहरी अब तक नहीं ले गया और दूसरा कोई उसको छूता भी नहीं था।

उस वेग पर झूमन की कुछ नजर पड़ी थी। उसने मन में

समझा था कि इस में वहुत सी वीड़ियां हैं क्योंकि भजहरी जब कारखाने में काम करता था। तब स्वदेशी होने के कारण सिगरेट तो नहीं छूता था लेकिन बीड़ी पीता था, झूमन को यह बात याद थी। क्योंकि वह उससे बराबर बीड़ी लिया करता था। लत किसी की कभी नहीं छूटती।

जो आदत हड्डी से पैदा हुई है वह जी के साथ जाती है। चुपचाप छिपकर दूसरे की चीज़ उड़ा लेना झूमन की आदत थी। हेमाङ्गिनी से वहुत घरौआ होने के कारण वह उनकी चीजें नहीं छूता न उनका पेटारा मौनी तोड़ता था। लेकिन भजहरी पर झूमन को इतना दर्द नहीं था। और यह बेग तो वहुत दिनों से एक तरह पर unclaimed property * की तरह हो रहा है। जब झूमन ने देखा तो उसके मन में आया कि उस में उसका कुछ क्लेम हो गया है। एक दिन हेमाङ्गिनी के न रहने पर झूमन ने बेग उतारकर उसका ताला तोड़ डाला और उस में क्या क्या है सो हाथ डाल कर टटोलने लगा। उस में से कुछ कागज, दो पिस्तौल और कुछ कारतूस और सिगरेट का एक टिन मिला। उस टिन के पाने से झूमन को बड़ी खुशी हुई थी। उसने मन में समझा कि इसमें खूब सिगरेट मिलेंगे। इसीलिये उस टिन के खोलने की तदबीर करने लगा। लेकिन देखा तो ढकना रांगे से झाला हुआ है। इसी समय नन्दलाल घर में आ गया। झूमन का हाल देखकर उसको क्रोध हुआ था। लेकिन दो पिस्तौल देखते ही उसका क्रोध विस्मय से बदल गया। झूमन से कहा-"अरे झूमन! जा दौड़ जा! सुरेश को बुला ला जल्दी।"

* जिस माल का कोई दावादार नहीं।

झूमन एक ही दौड़ में गया और सुरेश को वुला लाया। अब नन्दलाल और सुरेश भजहरी के वैग की सब चीज़ें अच्छी तरह देखने लगे। दोनों ही पिस्तौल कुछ कुछ खराव हैं और कारतूस उन में ठीक वैठते भी नहीं, सुरेश ने देखा तो टिन के डब्बे में एक ओर छेद है। उस में से पीले रङ्ग की वुकनी निकल आयी। सुरेश ने पहचान लिया कि वह पिक्रिक एसिड है। उसने देखा तो टिन पर "फिउज" नहीं लगा है। सुरेश को उस वैग से कई युगान्तर और उसके कारखाने के सूचीपत्र की पांच कापियाँ मिलीं। इनके सिवाय हेमाङ्गिनी और नन्दलाल ने वहुत दिन हुए सुरेश को जो चिट्ठियां लिखी थीं और पांचू मामा ने जो चिट्ठी विधुभूपण को थोड़े दिन हुए लिखी थी वह सव भी इसी वैग में मिलीं। लेकिन कैसे यह सव चिट्ठियां भजहरी के हाथ आयीं यह सुरेश की समझमें ठीक नहीं आ सका।

यह सव देखकर हेमाङ्गिनी कुछ देरतक अवाक खड़ी रही। फिर बोली—"मुझे तो सन्देह होता है कि इस में राधा वल्लभ की कुछ कारगुज़ारी है। उस दिन भजहरी के मुंह से निकल गया था कि राधावल्लभ से इसका वड़ा मेल जोल है। जान पड़ता, है ये सव मिलकर फिर हम लोगों पर कुछ आफत डालना चाहते हैं।"

सुरेश ने कहा-"पुलीस के जताने के लिये यह सव चीजें थाने में भेज देना जरूरी है।"

नन्दलाल बोला—"इस में विधुभूषण पर आफत आ सकती है। भजहरी उसी के साथ आकर यह वैग रख गया

है। मेरी राय में यह वैग विधुभूषणही के पास कृष्णनगर भेज देना अच्छा है।"

सुरेश ने कहा–विधुभूषण को भजहरी की यह लीला वतला देना चाहिये। उसको डाक से चिट्ठी देना ठीक नहीं न वहां वैग भेजना ही खटके से खाली है। वल्कि वेहतर होगा भूमन कृष्णनगर जाकर विधुभूषण को यहीं लिवा लावे।"

सुरेश की चिट्ठी लेकर भूमन उसी दिन कृष्णनगर चला गया। सुरेश ने नन्दलाल से कहा–"विधुभूषण जब तक नहीं आवे तब तक यह वैग इस मकान से अलग रखो।"

नन्दलाल ने वैसा ही किया।
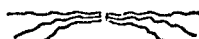
[१६]

भंजहरी का भेद।

कोई आठ महीने हुए पारुल को एक लड़का हुआ है। माता का आनन्द बहुधा बच्चे के आनन्द का अनुकरण करता है। शिशु को गोद में लेकर मा जब उसको खेलाती है तब उस का लड़कपन भी लौट आता है। सन्ध्या को पारुल बच्चे को गोद में लिये हुए उसी की बोली में उसे प्यार और आदर कर रही थी। इसी समय हेमाङ्गिनी हाथ में सरभाजा * लिये हुए उस कमरे में आ पहुंची। सुरेश वरण्डे में था। हेमाङ्गिनी की आवाज़ सुनकर भीतर आया उसको देखते ही हेम

* सरभाजा खास कृष्णनगर का तोहफ़ा है जो तस्मई का होता है।

बोली—"भैया ! विधुभूषण कृष्णनगर से सरभाजा लाया है।

सु०—भजहरी की बातें उसको कही गयीं हैं ?

हे०—हां हमने सब कह दिया है। बैग के भीतर की चीज सब देखकर विधुभूषण भजहरी पर आग हो गया है। कहता है—मैं उस पाजी को काम का आदमी समझ कर विश्वास करता था। उसने सब चौपट कर दिया। नन्दू के साथ उस की बातें हो रही हैं। मैं तुम को खबर देने आयी हूं।

पारुल ने रात को सुरेश से भजहरी के बैग का मामला सब सुना था। उसने कहा—"अरे हमारी मयभा ने ओ के वास्ते सिफारिस किया था। कहा था कृष्णनगर में ओके बहनोई हैं उनका वह बड़ा विस्वासी है !

हे०—आ दुर्र ! पापी राधावल्लभ का विश्वासी है वह ! तभी न सब घोर मठा किया है। भजहरिया जब यहां काम करता था तब हम से कहता रहा कि तारिणी बाड़ीवाली के यहां ओका कोई मामा है। वह सुनती हूं पुलीस का जासूस है प्रेमचन्द्र की ऐसा ही कुछ उसका नाम है।

सु०—अरे उसी प्रेमचन्द्र की गवाही से तो नन्दू वगैरः को कैद हुई थी। जब वह भजुआ फिर कृष्णनगर आपहुंचा है तब जरूर कुछ उपद्रव करेगा। वह सुनते हैं अब हम लोगों के रसिक लाल गुमाश्ता की साली का लड़का होता है।

इतना सुनते ही पारुल बोली-"एँ ! यह को कहता है। मैंने तो भजहरी को कभी बाग बाजार की कोठी में रसिक के पास आते नहीं देखा।"

फिर उसी समय पारुल ने सोना को बुलाकर पूछा—

काहे सोना! तूने भजहरी को कभी रसिक के पास आते जाते देखा था, भजहरी का वह मौसा है ?"

सोना भनककर नाक चढ़ा ले गयी बोली-"मौसा नहीं मुंह भौंसा है। मैं ही तो सब काम काज बराबर करती रही कभी इसको वहाँ आते नहीं देखा। ओके घर में और तो कोई नहीं है नाते गोते के सब निरवंस हैं।

अब भजहरी की बात पर वहां बड़ा रौला मचा। जिसको जो मालूम था सब कहने लगा। सुरेश ने कहा-"यह पाजी हमारे कारखाने में बम बनाना चाहता था। अच्छे संयोग से इसको यहां से निकाल दिया नहीं तो अब तक हम सब बंध गये होते।"

हेमाङ्गिनी बोली-"अरे यह भजहरिया सुनती हूं पहले ढाके में कहीं स्वदेशी डाकुओं के गरोह में रहा। जब वह सब पकड़े गये तब भाग आया। इसी ने हम से अपने आप यह सब कहा था। यह भी कहता था कि बहन! हम लोग आनन्द मठ के सन्तान सम्प्रदाय होंगे और तुम को हम लोगों की शान्ति बनना होगा।"

इतना सुनते ही सब के सब हंस पड़े। सुरेश ने कहा—"यह तो पाजी बड़ा भयङ्कर आदमी है! सब को चौपट करेगा।"

विधुभूषण से भेंट करने के लिये सुरेश नन्दलाल के घर को रवाना हुआ। रात के सोना को एक बात याद आ गयी। जब वह बाग बाजार वाली कोठी में थी। एक रात को सुलोचना वाले कमरे में राधावल्लभ, रसिक लाल और सुलोचना काना फूसी कर रहे थे। राधा वल्लभ को प्यास लगी सोना

उसको एक गिलास पानी देने गयी। उसी समय उसने सुना कि राधावल्लभ भजहरी का नाम लेकर कुछ कह रहा था। सोना को देखकर चुप हो गया। भजहरी का नाम-उस रात की काना फूसी से सोना को कुछ दिनों तक याद रहा था। अब वह बात याद आयी। उसको सन्देह हुआ कि कुछ चक्र वे सब चला रहे हैं और भजहरी इस काम में उनके हाथ का पुतला बना है।

सोना ने दूसरे दिन सवेरे उठते ही पारुल को कहा—मैंने बबुई बहुत दिनों से लहुरी मालकिन को नहीं देखा है। कई दिन से कैसा तो मन करता है। मैं वहीं जाती हूं कुछ दिन रहूंगी।" यही कहकर सोना वहां से चलती हुई।
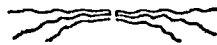
(१७)

खेत की जोताई।

सुरेश जब नन्दलाल के मकान पर पहुंचा तब देखा तो विधुभूषण ध्यान देकर एक चिट्ठी पढ़ रहा है। पञ्चानन बाबू ने उसको जो चिट्ठी लिखी थी। और जिसको भजहरी हड़प गया था। वही चिट्ठी थी। सुरेश के आने से पहले विधुभूषण तीन बार पढ़ चुका था। अब चौथी आवृत्ति थी।

विधुभूषण चिट्ठी पढ़ने में इतना तन्मय था कि सुरेश का कुशल प्रश्न उसने नहीं सुना न उसका कुछ जवाब ही दिया। जब कई बार सुरेश ने कई बातें पूछीं तब उसने सिर उठाकर उसकी ओर देख लिया। तब सुरेश ने कहा—"तुम तो चिट्ठी

ही पढ़ने में गूंगे हो रहे हो विधुभूषण! यह चिट्ठी है किसकी?"

विधुभूषण बोला—"चिट्ठी तो पांचू मामा की है सुरेश! इसी बैग में थी। तुमने इसको पढ़ा है?"

सु०-हां पढ़ लिया है।

"तो तुम क्या समझते हो। (राजनीतिक खून खराबी) Compaign of terrorism * बेकाम होगा?"

"जरूर! आयलैंण्ड और रूसमें इन उपद्रवों का अच्छी तरह अभिनय हो चुका है। इनसे क्या नतीजा निकला। एनारकिज़्म किसी देश मे स्थायी नहीं होता।"

विधुभूषण इस बात का जवाब नहीं देसका। सुरेश ने कहा-"आज किसी तरह का राजनीतिक षड़यंत्र हमारे राजकर्म्मचारियों से छिपा नहीं रहता। यही देख लो भाई! तुम लोगों ने अब तक जो कुछ किया है भजहरी सब जानता है। इससे मैं तो समझता हूं कि पुलीस भी जानती है। उधर एनारकिष्ट लोग समझते हैं कि खूब डूब डूब कर पानी पी रहे हैं, किसी को कुछ खबर नहीं है लेकिन सच्च पूछो तो उनका सब काम पुलीस के सामने खड़ा है। जिस दिन उनको जरूरत पड़ेगी उसी दिन पोखरी में जाल डालकर सब को एक दम फाँस लेंगे।"

इस विषय पर विधुभूषण से सुरेश की और भी बातें हुईं जिनसे विधुभूषण के पहले के विचार कुछ ढीले पड़ गये। पांचू मामा की चिट्ठी और सुरेश की बातों से

* राजनीतिक गुप्त हत्या का मामला।

आज विधुभूषण का मानस क्षेत्र अच्छी तरह जुत गया कहना चाहिये। आज इस जुताई की तकलीफ उसने भी समझी। चिन्ता के मारे विधुभूषण को बहुत वेदना हुई। उसने रात को वह बैग गङ्गा में फेंक दिया और सवेरे कृष्ण नगर को चला गया।

सवेरे वहां के दारोगा ने आकर नन्दलाल से पूछा कि यहाँ विधुभूषण नाम का आदमी जो उनके यहां आया था वह है या चला गया?"
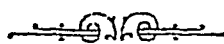
(१८)

विपत में सहाय।

सोना के मन में जो सुलोचना का द्रोह था वह पुराना होने पर भी भजहरी के मामले से नया हो गया। बागबाजार की कोठी में पहुंचकर वह सुलोचना को बोली—'अहा, मालकिन बहुई का लड़का हंसता राजकुमार होकर जन्मा है। जरा बगल में गुदगुदा देने से वे दांत का मुंह खिसोर कर इतना हंसता है कि क्या कहें और ऐसा देवता है कि रोना तो कभी जानता नहीं।

सुलोचना बोली—"रहने दे रहने दे बहुत हुआ।

बात यह कि मन का भाव छिपा कर कपट रूप से मिलना सुलोचना को नहीं आता था। लेकिन सोना इसमें पक्की थी। पारुल और उसके लड़के से सुलोचना जलती है यह सोना को अच्छी तरह से मालूम था। लेकिन जान बूझ कर भी यह बात गो जाती थी। एक दिन सोना ने सुलोचना को

कहा-"चाहे जैसे हो मालकिन एक दिन बबुई का लड़का देखने चलो। बहुती तरह से बुला भेजा है उनने।"

सुलोचना कुछ अनखाकर बोली-"तू क्या जानेगी सोना कि उस लड़के के जन्म लेने से हम लोगों का केतना नुकसान हुआ है। बहनोई बोल गये हैं कि जीता रहा तो यही लड़का सब जायदाद का मालिक होगा। हम को खाली भर पेट खाने को ही मिलेगा। एक चौआ भी दान करने या बेचने का हमारा हक़ नहीं रहेगा। इस लड़के ने हमारा सब कुछ छीन लिया है।

सोना अकचकाकर बोली-"ऐं! क्या सच मुच यह बात है! जो कहती हो सब सच्ची बात है?"

सु०-सच्ची न तब का तोसे मैं झूठी बात कहती हूं रे सोनियाँ?

सोना कुछ नरम होकर बोली-"अरे बापरे! तब तो मालकिन तुम ने बड़ी भूल करी। पहिले ई सब बात काहे नहीं बोली। मैं तो सौरिये में सब खतम कर देती।

सुलोचना और पास आयी और झट उसका हाथ अपनी छाती पर धरकर बोली-"अरे सोना। सोना! तूही तो मेरा सब कुछ है तू ही बेछोह हुई घूमती है। तू सहाय हो तब मेरा क्या बिगड़ा है! तू ही तो विपत में मेरा सहाय हो सकती है।

सो०-अरे ई का बात करती हो मालकिन! हमारे रोआँ रोआँ में तुम्हारा नीमक है। जो कहो ओसे का मैं बाहर होउँगी। तुम्हारी करनी में ना मेटूंगी मालकिन! सोनियाँ को ऐसा मत समझो। जो हुआ सो भूल जाव इस हाथ दो उस हाथ लो। सोना तुम्हारे वास्ते पताल फोड़ने को तयार है।

तुम जौन काम से वरकरार रहो वह तो हम को करना ही होगा जान हमारा चाहे जाय चाहे रहे।

सु०—तुम्हारा हमारे ऊपर ऐसा ही भाव है सोना। जो करना है सो किसी दिन तुम से कहूंगी। काम बड़ा सङ्गीन है सोना। तू जो साहस करके पूरा कर देगी तो जान ले कि जिन्दगी भर को खरीद लेगी तू तो हम को वेदाम।

सो०—पहले हुकुम दे के देखो मालकिन तब बात करना। यह तो जान रखो कि तुम्हारी सोना से जो नहीं होगा वह दुनिया में कोई माई का लाल नहीं कर सकेगा।

सोना की बात से सुलोचना को कुछ तसल्ली हुई। उस की आशा निराशा की धार से कटती जाती थी। पहले तो उसको भरोसा था कि पारुल विधवा है। इससे उसको खाने के सिवाय एक कौड़ी भी नहीं मिलेगी। अब पारुल के विवाह से उस पर पानी फिर गया था। राधावल्लभ ने उसको कहा था कि भजहरी को एड़दह के बगीचे में रख देने से पारुल का वर ठीक पाधुर हो जायगा।

लेकिन भजहरी कारखाने में रखा गया और पुलीस आयी भी तो खाली तलाशी लेकर लौट गयी उसको गिरफ्तार तो नहीं किया। सुलोचना की इस आशा की अलसी पर भी ठार पड़ा। उस दिन भजहरी आकर कह गया था कि अब की अचूक बाण चलाया है। इससे नहीं बचने पावेगा लेकिन सुलोचना को उसकी बात पर विश्वास नहीं हुआ था। अब पारुल के लड़का होने से उसके कपार पर वज्र गिरा है। वही लड़का उसके अपार दुःख का कारण है। उसको दुनिया से विदा किये बिना वह बेखटके नहीं हो सकती।

इस काम के लिये सुलोचना आप ही सब कुछ करेगी। सोना उसकी ठीक सङ्गिनी मिली है।

सुलोचना ने रसिक से अपना भीषण चक्र जाहिर किया। उसने रसिक को प्रेम दान किया है। उसको विश्वास नहीं करे तो किस को करे ?

प्रेम के फल में मधु और विष दोनों ही रहता है। किसी के लिये वह सुन्दर अमृत है और किसी के नसीब में वह कटीला धतूरा होता है। रसिक वह धतूरा खाकर मतवाला हो गया था। वह सुलोचना की बात पर बिलकुल राजी हो गया। सुलोचना बोली—"सोना इस काम में मदद देगी उसने मुझे भरोसा दिया है।"

रसिक बोला—"वह चाहे तब तो सहजही यह काम कर सकती है। मैं उसको अच्छी तरह जानता हूं। इस समय सुलोचना के एक रोग हो गया इसीसे वह काम अभी मुलतवी रहा।

(१६)

चिन्ता की ऊंची सीढ़ी।

विधुभूषण भजहरी को पहले जिस नजर से देखता था इस बार कृष्णनगर आने पर अब उस तरह नहीं देख सकता। भजहरी देखता था कि विधुभूषण बड़ा उदास रहता है कुछ पूछने कहने पर बिगड़ता है। कभी कभी बहुत नाराज भी हो जाता है। एक दिन गुस्से के मारे विधुभूषण ने भजहरी को साफ़ कह दिया—"तुम कहीं और जाकर डेरा कर लो यहाँ

तुम्हारा रहना अब नहीं होगा।" दूसरे ही दिन भजहरी वहाँ से बिछौना और अपना सामान उठाकर उसी डेरे में जा टिका जिसमें मोती और वेनी रहते थे।

भजहरी को निकालकर विधुभूषण ने समझ लिया कि यह दुमूहाँ साँप अब काटने की फ़िक्र करेगा इससे इसका उपाय करना जरूरी है।

दूसरे दिन सूरज डूबने पर मोती विधुभूषण के डेरे पर आया। वह भजहरी का खास दोस्त था। उस को भजहरी ने कहा था:—विधुभूषण मुझ पर नाहक बिगड़े हैं। उन से मैं भेट करने नहीं जाऊँगा। तुम जरूर उनसे मिला करो हम लोगों की मण्डली के वही लीडर (नेता) हैं। हम लोगों को उनका हुक्म और उपदेश बराबर दरकार है।" इधर भजहरी को विधुभूषण का मनोभाव जानने की बड़ी जरूरत हो गयी थी। वह काम मोती की मारफत भी हो जायगा।

विधुभूषण ने मोती से कहा-"तुम को मैं एक बात कहना चाहता हूं अगर यह शपथ करके वचन दो कि भजहरी से नहीं कहोगे तब मैं कहूंगा।"

मोती बोला—"क्या बात है आप कहिये! जब आप मना करते हैं तब भजहरी को मैं क्यों कहूंगा? आप तो हम लोगों के लीडर हैं। आप के हम लोग चेला हैं।"

विधु०—वह बात तुमको कहने की जरूरत है इसीसे कहता हूं क्योंकि तुम से भजहरी की बड़ी गहरी पटती है! और मुझे पक्का मालूम हो चुका है कि उससे पुलीस का कुछ सम्बन्ध है। वह हम लोगों का सब हाल जानता है। मैं समझता हूं एक दिन वह हम लोगों को फंसा देगा।"

भजहरी की यह सब बातें सुनकर मोती अवाक हो रहा फिर बोला—"अरे! यह आप कहते क्या हैं? हम लोगों का तो जितना काम है टेढ़ा मेढ़ा सब भजहरी खुद करता आता है। वह कभी पुलीस का दूत हो सकता है? नहीं ऐसा नहीं हो सकता। आप इसमें भूल कर रहे हैं। नाहक उस पर सन्देह करते हैं आप।"

विधुभूषण बोला—"सन्देह की बात कुछ नहीं मुझे जो ठीक मालूम हुआ वही कह रहा हूं। भजहरी एकदम Unreliable * आदमी है लेकिन किस तरह से मुझे मालूम हुआ है सो अभी नहीं बतलाऊंगा। देखो मोती! तुम बुद्धिमान लड़के हो। होशयारी से ख़बरदार होकर तुम उस पर नजर रखो तो तुम भी जान लोगे कि भजहरी किस ढाँचे का आदमी है। इस घड़ी अभी इससे आगे कुछ बात करने की जरूरत नहीं है।"

मोती चुप चाप चला गया। अकेले विधुभूषण चिन्ता करने लगा। भजहरी के लिये उसको क्या करना चाहिये सो अभी ठीक नहीं कर सका।

विधुभूषण ने अपने उद्धत स्वभाव के कारण एक बार मन में ठीक किया कि उसको खतम करके रास्ते का कांटा साफ़ कर दें। प्राण दण्ड ही ऐसे स्वदेशद्रोही के लिये ठीक दण्ड है। फिर उसी दम पांचू मामा की चिट्ठी का वह अंश याद आया जहां उन्होंने मेटसिनी की यह बात लिखी थी :—"Let the Judas be made known, the infamy thereof will be punishment enough" विधुभूषण

* विश्वास के लायक नहीं।

ने मन ही मन कहा—"मेटसिनी की बात ही ठीक है। पापी को दण्ड देने वाले भगवान हैं। मैं उसका दण्ड देने वाला कोई नहीं होता।"

सोचते सोचते विधुभूषण ने समझ लिया-"आदमी आदमी की जान लेने का अधिकार नहीं रखता, जिस प्राण को वह दान नहीं कर सकता उसको लेने का भी उसे अधिकार नहीं है। अनारकिष्टों की खून खराबी, विचारक की आज्ञा से खूनी असामी को प्राण दण्ड और युद्ध में अनगिनित आदमियों का मारा जाना यह सब ईश्वर के यहां अपराध है। जगत से जिस दिन गुप्त नर-हत्या, अदालत के विचार से प्राण दण्ड और युद्ध विग्रह उठ जायगा असल में उसी दिन सतयुग लौट आवेगा।
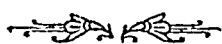
[२०]

आतङ्क निग्रह।

एक महीने से कुछ ऊपर हुआ सुलोचना को एक रोग हो रहा है। खाना नहीं रुचता। और खाने पर वमन हो जाता है। पेड़ू कुछ फूल गया है। यह बलगम की बाढ़ से नहीं है क्योंकि सुलोचना मोटी ताँत की नहीं वह कभी कभी कहती थी कि डाक्टरों से सुना था पेट में ट्यूमर हो जाता है। क्या जानें वही हो। सुलोचना इसके लिये बहुत उदास रहती थी। मालकिन के बीमार होने से प्रभुभक्त नौकरों को भी बीमारी हो जाती है। इस कारण रसिकलाल गुमाश्ता को भी वैसा ही उदास देखा जाता था। सोना की इस ओर अधिक दृष्टि थी।

सुलोचना को दिखाने के लिये एक दिन शहर के दूसरे महल्लेसे एक नये डाक्टर बुलाये गये। वह और कभी उस मकान में इलाज करने नहीं आये थे। डाक्टर ने रोगी का हाथ देखा। पेडू भी दबाया वहां स्टेथस्कोप लगाकर अच्छी तरह सुना तब कहा—"रोग तो बड़ा विकट है। विधवाओं को इस रोग के होने पर कुछ लोग जुलाब देते हैं लेकिन मैं इस इलाज को नहीं कर सकता। इसमें दवा की जरूरत नहीं पड़ेगी। और डर की भी कुछ बात नहीं है। समय आने पर यह सूजन आप उतर जायगी।"

डाक्टर ने कुछ दवा तो नहीं दी लेकिन फीस लेकर चले गये। रसिकलाल को उन से और कुछ पूछने का साहस नहीं हुआ। सोना ने समझ लिया कि इस सूजन में हाथ पांव और नाक कान वाला रोग है और रसिकलाल गुमाश्ता ही इस रोग के लिये जवाबदेह है।

खैर जो हो रसिकलाल अब इधर कुछ दिनों से सोना पर खूब खुश हो रहे थे। सोना ने एक दिन उनसे पूछा—

"हाँ मालकिन! एड़दह में बबुई के यहां जो तुम्हारी साली का बेटा काम करता था उसका क्या नाम था देखो भूला जाता है। अच्छा नाम रहा। हाँ हाँ याद आया भजहरी नाम रहा। वह खूनी आदमी है एक दिन हेमाङ्गिनी के घर में एक बेग टाँग आया रहा। वह बेग उन लोगों ने खोलकर देखा तो उसमें तोप, बन्दूक, गोली बारूद थी। वह तो बड़ा खराब आदमी है।"

रसिक ने कहा—"क्या कहती है सोना तू? उसके बेग में तोप बन्दूक था? बेग में तोप बन्दूक आवेगा कैसे?

सो०—छोटा छोटा बन्दूक रहा। उसमें आने लायक रहा।

र०—तो वह सब हुआ क्या ?

सो०—हुआ क्या सब गङ्गा में परवाह कर दिया। देखो वैसे भयानक आदमी को तो अपने यहां नहीं टिकाना नहीं तो किसी दिन तुम भी धर लिये जावोगे।

र०—अरे वह पाजी है सोना। हमारे तो साली को कोई कभी लड़का नहीं रहा। ओको राधावल्लभ बाबू कृष्णनगर से भेजे रहे। हम लोगों ने अपने एकठो मतलब के वास्ते ओ को एड़दह में नौकर रखा दिया रहा। लेकिन वह ऐसा कच्चा आदमी है यह हम को मालूम नहीं था। चूल्हा पड़े वह पाजी। तो को ठीक मालूम है सोना पुलीस को इस मामले का कुछ नहीं मालूम था ?"

"पुलीस में खबर देने की तो बात हुई थी। मैंने देखा कि पुलीस आने से तुम्हारे ऊपर आफत आवेगी। इसी से मैंने कह दिया कि नाहक पुलीस में खबर देके हुल्ल हपाड़ मत करो चुपचाप गङ्गा मे फेंक दो बखेड़ा मिटे।

"ओफ़ो ! सोना तुमने तो खूब बचाया नहीं तो बैठे बिठाये एक बड़ी आफत आ जाती।"

रसिक लाल ने उसी दिन राधावल्लभ बाबू को चिट्ठी लिख दी कि उनके भजहरी की सब चाल चौपट हो गयी है। नन्दू वगैरः ने उसका बैग गङ्गा में फेंक दिया और पुलीस को कुछ खबर खबर नहीं दी।

[२१]

क्रोधात् भवति सम्मोहः ।

मोती अब भजहरी के कामों पर वड़ी नजर रखता है। रात के वह कहां जाता आता है इसकी बराबर टोह में रहता है। अगर सचमुच वह पुलीस का दूत है तो छिप कर रात के उसका पीछा करना वेखटके नहीं है। इसलिये मोती को अपने वचाव की जरूरत हो पड़ी थी। कांटों में जाने के लिये पांव में जोड़ा पहन लेना उचित है। सवजज के लड़के कुमुदनाथ के साथ उसका वड़ा मिलान था। उसने पिस्तौल और कुछ कारतूस मांग लिये थे। उस पिस्तौल में गोली भर कर जेव में रखे हुए मोती रात के जरूरत पड़ने पर इधर उधर घूमने निकलता था।

मोती से रोज एक वार सन्ध्या के भजहरी की भेट हुआ करती थी। पूस का महीना था पौने छ वजे सन्ध्या हो गयी। जब नव वजा भजहरी तव भी नहीं आया। डेरे की दाई वोली—"भजहरी वावू वोल गये हैं आज उनको आने में वहुत रात जायगी।"

मोती ने भजहरी के घर में जाकर देखा उसकी खाट के पास फरश पर काग़ज़ के कई टुकड़े पड़े हैं। उसने उन सव-को जमा करके देखा तो वह एक चिट्ठी थी। इसमें भजहरी को रात के ग्यारह वजे के वाद तारिनी के मकान में राधावल्लभ वावू से भेट करने को लिखा था। उसमें लिखने वाले का नाम नहीं था। वहुत से लोग जानते हैं चिट्ठी फाड़कर फेंक दी वस वखेड़ा मिटा।

मोती खाकर दस बजे के पहले ही अपना दरवाजा बन्द करके सो गया। लेकिन नींद में सोना उसका मतलब नहीं था। भजहरी आकर भी लौट जाय और रात के उससे भेंट न हो यही इरादा था। वह घण्टे भर तक इसी तरह सोया रहा। फिर उठकर उसने कोट पहना। बक्स से भरा पिस्तौल निकाल कर .जेब में रखा। और बाहर की सांकल चढ़ा कर एक दुलाई से देह ढ़ाके हुए चलता बना। मोती को तारिनी का मकान मालूम था। उसी में भजहरी का मामा प्रेमचन्द्र कंड़ारी रहता था। उसी प्रेमचन्द्र के पहचान करने और इजहार देने से विधुभूषण वगैरः को कैद हुई थी। इसके सिवा राधावल्लभ उसी मठ में आकर चेला-चाटियों के साथ मौज करते थे यह बात सब में जाहिर थी। मोती ने समझ-लिया था कि भजहरी वहीं जाकर राधावल्लभ से भेंट करेगा। साथ ही यह भी अटकल किया कि उन लोगों की बैठक और जगह होती है अगर ऐसा न होता तो उस. चिट्ठी में जगह लिखने की जरूरत न होती।

मोती का अटकल ठीक उतरा। जब उस मकान के पिछ-वाड़े पहुंचा। एक कमरे से राधावल्लभ की आवाज सुनाई दी। सुनकर ही उसने समझ लिया कि आवाज वारुणी के तरङ्ग से तर्रा रही है।

राधावल्लभ कह रहा था—"मन में बल होना चाहिये। जी! जिसके मन में ताकत नहीं वही यह सब काम छिपकर करता है।"

दारोगा दीनदयाल बोला-"और नहीं क्या? पाप पुण्य तो मन ही का मार पेच है। शराब पीने या स्त्री की देह पर

हाथ लगाने में जो सकुचाता है उसी को यह सब पाप लगता है और जो वेपरवा यह सब कर सकता है उसके लिये यह सब पुण्य है। क्यों राधावल्लभ वावू! भगवान भी कोई चीज है आप मानते हैं?"

रा०—मैं तो नहीं मानता लेकिन तो भी तर्क और सबूत से साबित कर सकता हूं कि भगवान है। To believe in God is science *

दा०—अगर भगवान सर्व शक्तिमान है तब तो वह बाघ भालू से लाख गुना भयंकर है। मैं तो कहता हूं कि भगवान हैं तो रहा करें उनको—

बात काटकर राधा वावू बोले "अरे--डरो मत भाई! भगवान अव बहुत बूढ़े हो गये। दांत टूटकर गिर गयेहैं। हाथ पांव से हीन होकर ठूंठे जगन्नाथ वने बैठे हैं। अव उनमें काटने वकोटने की ताकत नहीं है।"

इसी समय भजहरी उस कमरे में पहुंचा। देखते ही दीन दयाल बोला—'लो भजहरी आ गया।"

राधावल्लभ बोला-"अरे तेरा वज्रवाण तो भोथर हो गया रे भजुआ! तू एड़ेदंह में नन्दू के घर कैसा बैग रख आया था। उन सबों ने तो खोलकर देख डाला! उस में क्या क्या था?"

भज०—दो पिस्तौल रहे। कुछ कारतूस, कुछ युगान्तर और सुरेश और नन्दू की कई चिट्ठियां रहीं एक टीन में थोड़ा पिकरिक एसिड था। क्यों क्या हुआ?

---

* ईश्वर पर विश्वास करना विज्ञान से है।

राधा०-हुआ तेरा सिर और कपार उस हेमियां ने खोल कर देख लिया और सब का सब गङ्गा में जल-प्रवाह कर दिया।

दीन०--अब तो उस घर की तलाशी से कुछ काम नहीं बनेगा।

रा०—मैंने इस निकम्मे को बार बार कहा था कि वह लौंडिया बड़ी धूर्त है रे! खूब खबरदारी से नहीं चलेगा तो वह फंस नहीं सकेगी।

भज०-मैंने तो हेम ही के पास रखा और उसकी पेटारी या बक्स में हिफ़ाजत से रखने को कहा था। इसमें मेरा क्या अपराध है इसी चाल से तो वह प्यादेसह मात थी। मैंने जो चक्र फेंका था उसमें यहां के अनारकिष्टों के साथ सुरेश भी गिरफ्तार हो जाता। हेमाङ्गिनी भी चालान होकर यहां आती।

राधावल्लभ ने दीनदयाल से कहा--"अरे यार इस निकम्मे का यह काम नहीं है एक ठो खूब मुंहफोड़ आदमी छोड़े बिना नहीं बनेगा हेमिया को गिरफ्तार करके एक बार यहां लाना ही होगा।"

मोती जंगले के बाहर एक पेड़ के नीचे खड़ा यह सब सुन रहा था। सुनते सुनते उसका खून गर्म होकर सिर पर चढ़ आया। उसने मन में कहा--"भगवान हाथ पांव से हीन होकर ठूंठे जगन्नाथ बने बैठे हैं यह बात ठीक है। तेरे ऐसे पापियों का विधान उनके साध्य से बाहर है यह काम मैं ही करता हूं।" यही कहकर मोती ने उस गरोह पर गोली छोड़ी किसी को निशाना नहीं किया। चार फैर उसने किये। भजहरी और दीनदयाल तो बच रहे लेकिन

एक गोली राधावल्लभ का दिल छेद कर पार कर गयी। "वाप रे वाप" करके वह वहीं गिर गया। भीतर दो स्त्रियां थीं। डर के मारे चिल्ला उठीं। सव जी छोड़कर जिधर जगह मिली उधर को भागे। भजहरी और दीनदयाल पहले ही गायव हो गये थे।

थोड़ी ही देर में पुलीस के आदमी वहां आकर भर गये। उन लोगों ने उस रात के तारिनी के दरवाजे का रास्ता एक दम वन्द कर दिया। सवेरा होते ही इस खून की खवर वस्ती भर में विजली की तरह पहुंच गयी। कृष्णनगर के वकील और दूसरे आदमियों ने आकर देखा कि राधा वल्लभ वावू की लाश रंडी के घर के सामने सदर सड़क पर खून में डूवी हुई है। पानवाली गुलवी पहुंचते हो दाढ़ मारकर रोने लगी। मैजिस्ट्रेट साहव मौके पर आये। पुलीस के वड़े साहव उनसे पहले आ चुके थे। उन लोगों ने अटकल करके कहा--इस रंडी का कोई आदमी होगा जिसने राधावल्लभ वावू को अपने सामने कम्पीटीशन वाला समझा है इसी डाह से उसने खून कर डाला होगा। सव लोगों ने समझ लिया कि यह राजनीतिक खून नहीं है। खैर तहकीकात होने लगी।
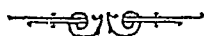
[२२]

सम्मोहात् स्मृतिविभ्रमः।

खून करके जव मोती भागा तव किसी ने उसका पीछा नहीं किया। पिस्तौल उसके हाथ ही में था। उसमें अभी एक कारतूस भरा ही था। डेरे पर पहुंच कर मोती ने तकिये के

नीचे पिस्तौल रख दिया और आप सो रहा। हाथ के पास हथियार रखने की जरूरत हुई। क्या जानें कोई उसको पकड़ने आवे!

कुछ देर बाद मोती के मन में आया कि घर का दरवाजा बन्द करना भूल गया है। लेकिन उठकर देखा तो वेंवड़ा भरा है। फिर सो रहा। उसको ऐसा मालूम हुआ कि सिर की दोनों रगें फटी जाती हैं। चादर से कस कर उसने सिर बाँध लिया। प्यास से उसका कण्ठ सूख आया था उसके मन में हुआ कि बाहर कोई आया है। कुछ देर तक कान लगाये सुनता रहा लेकिन उसकी छाती की धड़कन के सिवाय और कुछ भी सुनाई नहीं दिया। इस पूस की कनकनाती सीत में भी उसको बड़ी गर्मी मालूम हुई। वह उठकर बैठ गया। देखा तो कोट उतारना और दुलाई रखना भी भूल गया है। उसने समझा कि इसी से गर्मी हुई है। सब कपड़े उसने उतार दिये तो भी उसको आराम नहीं मिला। दरवाजा खोल कर वह बाहर आया। देखा तो आसमान में तारे नहीं हैं। आकाश में घोर घटा से बड़ी अंधियारी हो रही है। मोती मन में डरा। कलेजा काँपने लगा। भीतर जाकर फिर उसने दरवाज़ा बन्द कर लिया। लेकिन वेंवड़ा देना भूल गया।

मोती सो गया। इस बार उसको नींद आ गयी। कुछ देर के बाद जब कुछ अन्धेरा था तभी मारामारी और दरवाज़ा खुलने की आवाज से उसकी नींद खुली। वह बिछौने में ही लिपटा हुआ उठ बैठा देखा तो मेस के बरण्डे में कई बेजानपहचान के आदमियों से मेस के आदमी मारपीट कर रहे हैं। जान पड़ा किसी बुरे मतलब से वे सब मेस में घुस आये थे। एक

का सिर फट गया था। और तीन आदमियों के खून जारी था। सब पुलीस पुलीस कह कर चिल्लाते थे। मार खाते खाते बदमाश भाग गये! पुलीस का नाम सुन कर मोती को बिछौने से उतर कर बाहर आने की हिम्मत नहीं हुई धीरे धीरे सब गोलमाल मिट गया। मेस के आदमी सब अपने अपने क़मरों में गये। मोती फिर पलङ्गपर सो रहा। थोड़ी ही देर पर नौकर ने आकर पुकारा। कहा—"बाबू! चाय तैयार है।"

मोती ने आँखें खोलीं और मारपीट का कारण पूछा। उसने कहा—"नहीं तो मार पीट कहाँ हुई? आपने सपना देखा होगा।"

नौकर के चले जाने पर बेनी मोतीलाल के कमरे में आया। देखा तो वह अभी तक सो रहा है। उसने पूछा—"वाह मोती! इतना दिन चढ़ गया तो भी सोये ही हो तुम?"

मोती ओढ़ना छोड़ कर बिछौने पर उठ बैठा। बेनी ने देखा तो उसके एक पाँव में अभी मोजा और बूट चढ़ा ही हुआ है। कहा—"क्यों यार एक पाँव का जूता मोज़ा उतारना भी भूल गये थे?"

मोती लजाकर बोला—"हाँ यार देखो तो। क्या कहें रात के बड़ी तकलीफ़ रही। ऐसा सिर दर्द था कि आँख नहीं उघरती थी।"

बेनी ने देखा कि सचमुच चेहरा उसका बिगड़ा हुआ है। पूछा—"अब कैसी तबीयत है मोती?"

मो०—अभी पूरी तौर से अच्छी नहीं हुई है।

बे०—तो थोड़ी देर और सो लो दर्द आराम हो जाय।

यही कहकर बेनी चला गया। लेकिन मोती को नींद नहीं आयी। वह तो कुछ दिनों के लिये उसे छोड़ कर चली गयी है।

थोड़ी देर पर भजहरी ने पहुंचकर मेस में राधावल्लभ के खून की पकी ख़बर पहुंचायी। अब सब लोग तरह तरह की बातें करने लगे। किसी किसी ने कहा—"यह पोलिटिकल मरडर * है।

भजहरी ने कहा—"यह बात नहीं हो सकती। राधावल्लभ पुलीस के आदमी थे थोड़े। स्वदेशी लौंडे उनको क्यों मारने लगे। रंडियों के घर में जो हमेशा हुआ करता है वही हुआ है।"

भजहरी ने बेनी के मुंह से सुना--मोती की तबीअत ख़राब है। वह उसके कमरे में देखने गया। उसको भीतर आते देख कर मोती चौंका और उसकी ओर आँखें मिच मिचाकर देखा। लेकिन भजहरी के ध्यान में नहीं आया कि उसकी यह दशा थी। वह क्या पहचान सकता था।

भजहरी ने जब उससे राधावल्लभ बाबू के खून की ख़बर कही तब उसने चुपचाप सुन लिया। कुछ भी उसने चञ्चलता नहीं दिखलायी। भजहरी ने कहा--"बिधुबाबू को यह ख़बर दे आना जरूरी है। लेकिन तुम से बनेगा? सुना है मोती! तबीअत तुम्हारी अच्छी नहीं है?"

मोती बोला—"बड़े जोर का सिर में दर्द है। और ज्वरांश हो रहा है। मैं उठ नहीं सकता।"

---

* राजनीतिक खून।

अब मोती के बदले बेनी ही यह ख़बर लेकर विधुभूषण के डेरे को रवाना हुआ। थोड़ी देर पर उसने लौट आकर मेस के सब लोगों को कहा कि विधु बाबू और स्वदेशी युवकों के घर की तलाशी हो रही है।"

सुनकर भजहरी बोला—"मालूम होता है हम लोगों के मेस की तलाशी नहीं होगी नहीं तो अब तक पुलीस के आदमी इसको घेर लिये होते।"

भजहरी की बात ठीक उतरी। उन लोगों के मेस की तलाशी नहीं हुई। नहीं तो भजहरी के बक्स से बहुत सी घाती चीजें पायी जातीं और रिवाल्वर के साथ मोती भी गिरफ्तार हो जाता। ख़ैर इस बार वह बच गया। स्वदेशी के लिये बेनी और मोती पहले कैद रह चुके थे। उनके मेस की तलाशी नहीं होने से कुछ लोगों को आश्चर्य हुआ था।

[२३]
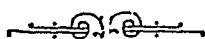
अन्तर्द्धान।

पुलीस ने स्वदेशी छोकड़ों को खूब रगड़ा और उनका घर द्वार ढूंढ़ कर समाज का जल हींढ़ डाला लेकिन कहीं कुछ पाया नहीं न कोई गिरफ्तार ही किया गया। मछली पकड़ते पकड़ते जब जल कनरोह हो जाता है तब मछली पकड़ना बन्द करना पड़ता है क्योंकि कनरोह पानी में नजर नहीं चलती। इस कारण पानी थिराने की राह देखना पड़ती है। कृष्ण नगर की पुलीस भी यही कर रही थी।

राधावल्लभ की देह से जो गोली निकली थी उसको पता लगाकर दारोगा दीनदयाल सवजज वहादुर के मकान पर पहुंचे। उन्होंने कुमुदनाथ से पूछा—"आप का पिस्तौल कहां है?"

कुमुद वोला—"यह क्या मेरे दराज़ में है।" और दीनदयाल के सामने ही खोल कर दिखाया लेकिन यह देखकर कुमुद को वड़ा आश्चर्य हुआ कि उस दराज में लाइसेंस तो था पिस्तौल नहीं था। वह अकचका कर वोला—'अरे वापरे! इसी में तो मैंने पिस्तौल रखा था हुआ क्या?"

अव कुमुद ने अपने सव वक्स, ट्रङ्क, पेटारे खोल कर उलट पलट डाले लेकिन कहीं पिस्तौल का पता नहीं मिला। तव निराश होकर कुमुद ने कहा—"जरूर इसमें से कोई चुरा ले गया है। आप नोट कर लीजिये मेरा पिस्तौल चोरी गया है।"

दीनदयाल ने पूछा—"आप ने कव पिस्तौल इस दराज़ में रखा था।

कु०—रखे तो मुझे हुआ एक महीना तव से दराज़ कभी खोला ही नहीं।

दी०-इसकी चाभी किसके पास रहती थी?

कु०—यह रिङ्ग में और चाभियों के साथ थी और रिङ्ग कभी मेरे पास रहता था और कभी टेवुल पर पड़ा रह जाता था।

अव दीनदयाल कुमुद की ये सव वातें, लाइसेन्स से पिस्तौल का नम्वर आदि सव लिखकर चले गये। राधा-

वल्लभ के खून का भेद् अंधेरे का अंधेरेही में रह गया। तहकीकात और तलाशी की धूमधाम बन्द हो गयी।

मोती एक हफ्ते से बुखार में पड़ा है। बेनी उसकी सेवा-सुश्रूषा में है। १०५° डिग्री बुखार होने से मोती अकबक करने लगा।

बेनी ने उसके सिर पर ठंढी पट्टी बांधी और पङ्खा झलने लगा। मोती की बीमारी सुन कर विधुभूषण उसको देखने आया।

मोती आधी तन्द्रा में था। विधुभूषण ने ज्योंही उसकी देह पर हाथ रखा वह "पुलीस पुलीस" कहके चिल्ला उठा। फिर कुछ चुप रहकर योंही अंट संट बकने लगा। एक बार उसने राधावल्लभ का भी नाम लिया।

विधुभूषण ने बेनी को कहा कि दरवाज़ा बन्द कर दे। जब उसने बन्द कर दिया तब विधुभूषण ने आपही उस कोठरी की तलाशी शुरु कर दी। मोती के तकीये के नीचे जो पिस्तौल आठ दिन से पड़ा था पहले वही मिला। विधुभूषण ने कहा। क्यों बेनी राधावल्लभ का किसने खून किया सो तुमने समझा है?

जब बेनी ने कुछ जवाब नहीं दिया तब विधुभूषण बोला-"कल तुम जब नहाने जाव तब गमछे में लपेट कर इस पिस्तौल को लिये जाना और नदी में फेंक आना। मैं खुद ले जाता लेकिन आज कल मेरे पीछे आठो पहर आदमी लगा रहता है।"

जब बेनी इस बात पर राजी हो गया। विधुभूषण ने कहा—"तुमको मैं एक और बात से खबरदार कर देता हूं।

खयाल रखो। भजहरी का विश्वास हरगिज मत करना। जब मोती अकबक करता रहे तब तुम ऐसी चतुराई करना कि भजहरी इस कोठरी में नहीं आवे। क्योंकि इसका अक बक सुनतेही भजहरी समझ जायगा कि राधावल्लभ का यही खूनी है। एक दिन मोती ने भी बेनी को इस बात से खबरदार कर दिया था इसलिये उसने आज विधुभूषण से और कुछ नहीं पूछा।

रात को दस बजे के अमल में विधुभूषण डेरे को लौट गया लेकिन चिन्ता के मारे उसको नींद नहीं आयी। खूनी सदा अपने को छिपा कर नहीं रख सकता यह विधुभूषण समझता था। मोती एक न एक दिन जरूर पकड़ा जायगा इस बात में विधुभूषण को सन्देह नहीं था। उसने सोचा कि जब मोती गिरफ्तार होगा तब उसके साथ यहां के और सब स्वदेशी युवक भी पकड़े जायंगे और सब को शामिल करके पुलीस यहां एक बड़ा भारी 'गेंग केस' खड़ा कर देगी।

विधुभूषण अब राजनीतिक गुप्त हत्या का बिलकुल विरोधी है। इस कारण बेकसूर अब उसको असामी बन कर कठघरे में खड़े होने या सहीद बनने की श्रद्धा नहीं रही। लेकिन श्रद्धा न रहने पर भी उसको पुलीस क्यों छोड़ेगी? वह तो स्वदेशी छोकड़ों का सरदार है। विधुभूषण ने समझ लिया कि इसीलिये सी. आई. डी. के आदमी उसका पीछा करते हैं। इसलिये वह इस बात से बहुत नाराज होने लगा।

विधुभूषण मुरशिदाबाद जाकर एक जान पहचान वाले आदमी के डेरे पर पांच छः दिन रहा। वहां भी उसने देखा कि पुलिस के लोग उसके पीछे आठो पहर लगे हुए हैं। अब

उसने भाग जाने का विचार किया और उसका उपाय भी ठीक कर लिया। कच्छू जैसे अपनी खोल में हाथ पांव सिकोड़ लेता है विधुभूषण ने भी वैसेही एक गुदड़ी में अपने तई छिपा कर मक्का की लौटी हुई हज्जिन बनाया और दिन दोपहर कोतवाली के सामने से ही सशरीर सदा के लिये गायब हो गया।
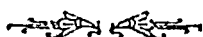
[२४]

डाक्टर की भूल चूक।

आज बड़ा कुदिन है आधी रात हो गयी है। आसमान काले मेघों से भरा है। रह रह कर हवा के साथ मूसलधार पानी वरस रहा है। इस पूस में पानी वरसने से सरदी चौगुनी हो गयी है। लोग अपने घरों में जाड़े के मारे कांपते हैं। किन्तु आज भी सुलोचना दूध के फेन की तरह अपनी मुलायम सेज पर पड़ी छटपटा रही है। उसको गले से एड़ी तक पसीना हो रहा है। सोना और एक लौंड़ी पास वैठ कर पानी को पोछ रही है धीरे धीरे पंखा भी झला जा रहा है। रसिकलाल आकर दो बार देख गया है।

आज दो दिन से सुलोचना पेट के दर्द से खाट पर पड़ी कराह रही है। रसिक ने समझा कि इस रोग में डाक्टर बुलाना नहीं होगा। लेकिन ग्यारह वजे रात से बेतरह पसीना होकर हाथ पांव ठंढा होने लगा है देखकर रसिक बहुत डरा। इस कारण इस कुदिन में भी इतनी रात में डाक्टर महेन्द्रनाथ को बुला लाया। महेन्द्रनाथ काशीनाथ बाबू के

समय के इस घर के फेमिली डाकृर हैं। वह घर भर के आदमियों को पहचानते हैं। राधावल्लभ बाबू से भी वहीं उनकी जान पहचान हुई थी।

महेन्द्र बाबू ने आकर जांचा तो देखा सुलोचना का सारा पेट फूल गया है। और उसमें इतनी पीड़ा हो रही है कि छूने से सहा नहीं जाता। नाड़ी बहुत दुबली पड़ गयी है। चेहरा इतना विगड़ गया कि देखने से डर लगता है। बुखार नहीं है शरीर का ताप अट्ठानवे दरजे से भी बहुत नीचे चला गया है। हाथ पांव ठंढे हैं। उन्होंने रसिक बाबू से रोग के कारण में कितनी ही बातें पूछीं लेकिन सन्तोष के लायक जवाब नहीं मिला।

डाक्टर बाबू कुछ भवें चढ़ाकर बोले—"पेरिटो नाइटिस हुआ है। रोग बड़ा सख्त है। हालत भी उतनी अच्छी नहीं" उन्होंने तीन चार तरह के नुसखे लिख दिये। घण्टे घण्टे में स्टीमुलेंट देने को कहा-पेट पर लेप और पुल्टिस का बन्दोबस्त करने का आदेश किया। और एक पास की हुई मिडवाइफ़ सदा पास रखने की सलाह देते हुए डबल फीस लेकर चले गये। उनके कहे मुताबिक सब काम हुआ लेकिन अभी दाई नहीं बुलाई गयी।

इलाज का सब ठीक ठाक करके रसिक अपने डेरे गया। और थक कर पलंग पर सो रहा। रोगी से भी उसकी चिन्ता बहुत बढ़ी हुई थी। क्यों क्या उसके मन में कुछ पाप था?

आज बाहर जितना दुर्योग था, रसिक लाल के भीतर उससे अधिक आंधी तूफान का जोर था। मानो क्रोध भरी प्रकृति उसके भीतर घुस कर उसके पाप का बदला ले रही

थी। इससे जल्दी उसको नींद नहीं आयी। भिनसारे उस को जरा तन्द्रा आयी और तरह तरह के बुरे सपने देखने लगा।

सवेरे आस्मान साफ़ हो गया। सात बजे डाक्टर महेन्द्र नाथ आये। देखा तो रोगी की हालत करीब करीब वैसी ही है। केवल नाड़ी कुछ अच्छी चल रही है पेट का दरद भी कुछ कम सा मालूम होता है।

महेन्द्र बाबू ने दवा वगैरः कुछ भी नहीं बदला। रोगी के वास्ते दूध और सोडावाटर का पथ्य बतलाया। और रसिक बाबू से कहा—"क्यों रसिक बाबू! तुम्हारे यहां मुझे सवेरे आना पड़ा इससे चाय नहीं तैयार हो सका। मेरे वास्ते चाय पानी का बन्दोबस्त कर सकते हो?"

"हां हां। इसके लिये क्या चिन्ता है। अभी लीजिये।" कहकर रसिक ने एक नौकर को बुलाया और चाय तैयार करके जल्दी लाने का हुक्म दिया।

डाक्टर बाबू सुलोचना की खाट के पास एक कुर्सी पर बैठ कर जेब से एक भीगा हुआ ताजा छपा अखबार निकाल कर पढ़ने लगे। आज वह अखबार भी नहीं पढ़ने पाये थे। वह रोज चाय पीने के साथ ही अखबार पढ़ा करते थे। पांच ही मिनट में नौकर एक पियाला चाय लेकर हाजिर आया। और तवा भरी चिलम अलबेले पर करके आगे रख गया।

अब डाक्टर बाबू का अखबार पढ़ना, चाय पीना, और तम्बाकू सब तीनों एक साथ होने लगा। चाय का पियाला। और अलबेले का नल दोनों बारी बारी से डाक्टर के मुंह पर आने लगे। रसिक लाल खड़ा रहा। अखबार पढ़ते पढ़ते महेन्द्र

वावू वोल उठे-"अरे वाप रे ! यह क्या हुआ भई ! तुम्हारे राधा वल्लभ वावू का तो खून हो गया। किसी ने उनको सदर रास्ते पर गोली मार दी। अभी खूनी पकड़ा नहीं गया।"

रसिक वोला-"ऐं ! कहां के राधावल्लभ वावू।"

महे०--इसमें लिखा है कृष्णनगर के गवर्नमेंट प्लीडर राधा वल्लभ वावू ! तुम्हारे मालिक के साढ़ू हैं मैं क्या उनको नहीं पहचानता ?

इतना सुनते ही सुलोचना रोकर चिल्ला उठी-"अरे यह तुम करती क्या हो। चुप ! चुप ! रोओ मत नहीं तुम्हारी जान पर वीतेगी।" यह कहकर डाक्टर वावू सुलोचना को प्रवोध देने लगे।

इससे सुलोचना चुप तो नहीं हुई। उसका रोना और वढ़ गया। डाक्टर ने कहा-"इस तरह रोने से तो रोगी मर ही जायगा यह तो वड़ी आफत हुई।"

अव रसिक वावू, सोना लौंडी और डाकृर तीनों ने वड़ी कोशिशों से सुलोचना को पन्द्रह मिनट पर कुछ शान्त किया।

सुलोचना अव हांफने लगी। डाक्टर अवसर देखकर वहां से सरके और जाती वेर कहते गये--"देखो खूव खवरदार रहना सव कोई। राधा वल्लभ के मरने की खवर से रोगी को जो चोट लगी है उससे एकवयक रोग वढ़ सकता है। तुम लोग सव कोई खूव जी जान से खवरदार होकर कोशिश करो कुछ भी उठा मत रखना।"
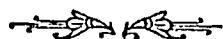
[२५]

वज्राघात ।

तीसरे पहर के सुलोचना को बड़े जोर का ज्वर चढ़ आया। ताप एक सौ छ डिग्री से भी ऊपर होगया। साँस रुक रुक कर ऊपर को (उर्ध्व स्वांस) होने लगी लेकिन बराबर होश रहा।

महेन्द्र बाबू को खबर दी गयी। उन्होंने सुनकर ही कहा- "जो मैं समझता था वही हुआ। अब बच नहीं सकती" ख़ैर आधे घंटे पीछे एक साहब डाक्टर को साथ लेकर आ पहुंचे। उन लोगों ने रोगी को अच्छी तरह देखा भाला। आपस में कुछ देर तक बातें करते रहे। फिर महेन्द्र बाबू ने रसिक लाल से कान में कहा-"अब मरने में देर नहीं है। इसी बुख़ार के बाद प्राणान्त है।"

सुलोचना ने भी समझा कि उसका अन्तकाल आगया है। बहुधा मरन सेज पर पहुंचने से सत्य का अमल हो आता है। डाक्टरों के आगे भी सुलोचना की लज्जा जाती रही। उसके भीतर प्राण वायु ने उन्मत्त होकर विकट आँधी उठा दी थी। साँस के साथही उसकी छाती उठती और नीचे होती थी। दिल के भीतर बड़ी तकलीफ़ हो रही थी। रसिक को सामने देख कर सुलोचना की आँखों से चिनगारी चलने लगी। अब वह अपने तईं रोक नहीं सकी। मुंह खोलकर रसिक पर फैर करने लगी, बोली-"अरे भुतनीवाला! तूने ही मेरा सब चौपट किया। तू ही मेरे गर्भ का कारण हुआ और तूने ही गर्भ गिरने की दवाई खिलायी। तूही मेरे लिये यम हुआ है रे चाण्डाल! दूर हो सामने से।"

सब लोग उस घर में काठ हुए खड़े रहे। डाकृर साहब सुलोचना की बातों का मतलब नहीं समझ सके। रसिक दोनों हाथों से मुंह ढाककर वहां से चला गया। उल्लू जैसे दिन की रोशनी नहीं सह सकता। रसिक भी सत्य की ज्योति नहीं सह सका। सुलोचना कुछ देर और ठहर सकती थी। लेकिन इस जोश के मारे उसकी जान साँस के साथ ही बाहर निकल गयी। सोना और दास दासी रोने लगीं। डाकृरों को फीस कौन देता लाचार होकर वे लोग खाली हाथ लौट गये। रसिक बाबू का कहीं पता ही नहीं था।
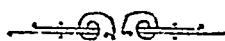
[२६]

सुखस्वर्ग।

आज तीन बरस हुए सुरेश और पारुल बागबाजार वाली कोठी में आकर काशीनाथ बाबू के उत्तराधिकारी बने थे। अब कुछ पुराने खिलाड़ी इस स्टेज से निकलकर नयों को चार्ज दे गये थे। पर्दों की रद्द व बदल कुछ नहीं हुई थी। पुराने दास-दासी सब ज्यों के त्यों रहे। भागलपुरी, मुंगेरी और कटकी सब थे सोना तो मौजूद ही थी।

केवल रसिकलाल नहीं रहा लेकिन वह नहीं रहा कैसे कहा जाय? वह सोना के हृदय कन्दरे में याद रूप अंगार होकर राख से ढका हुआ है। इसका कुछ सुबूत भी मिला था। पारुल की बातों ने हवा होकर ऊपर की राख उड़ाने का ढङ्ग दिखाया था। वह एक बार रसिक की बात छेड़कर कुछ कह रही थी कि सोना ने कपार पर आँख ले जाकर लम्बी सांस

ली। बोली—"ओ मुँकरिखहा की बात मत बोलो बहुई जी! उसका नाम लेने से पाप होगा।"

जो एक दिन कहीं किसी से किसी तरह पकड़ा गया है उसको एकदम भाग जाने का उपाय नहीं है। इसीसे जान पड़ता है सुलोचना भी उस घर से एकदम भाग नहीं सकी। एक दिन अमावस की घनी अंधियारी थी बाहरी हौज़ में हाथ मुंह धोकर सोना आ रही थी। रसिक जिस घर में रहता था उसके जंगले के पास सुलोचना की परछाईं देख कर चिल्ला उठी। जान पड़ता है सुलोचना सूक्ष्म देह होकर वहां रसिक बाबू के आने की राह देख रही थी। और बैठक में काशीनाथ बाबू खुली खिड़की से अपनी प्रेतयोनि प्राप्त पत्नी की अपूर्व प्रेम लीला देखकर दीवार में चित्र रूप से चपटे होकर चिपके जाते थे।

सुरेश की मा दयामयी उसी कमरे में रहती है। जिसमें कृपामयी रहती थी। पास का लड़का सनतकुमार इस घड़ी उसके कण्ठ का हार है। पञ्चानन बाबू अब उसी मकान के वन्धन में पड़ गये हैं। पारुल ने उनको कह दिया था–' मामा जी! आपने हम लोगों को ब्याह देकर गृहस्थी के वन्धन में डाला है इस वास्ते आप को हम लोगों का सरपरस्त बनना होगा। हम लोगों के ऊपर दूसरा कोई नहीं है।"

पहले की तरह यहां भी पाँचू मामा तरह तरह के अख़-बार पढ़ा करते थे। सनतकुमार उनको—"बाबा, बाबा!" कहकर पुकारता था।

सन्तू सन्ध्या के अपनी आजी से जो कथा कहानी सुनता था वह सब भी तोतली बोली में बाबा को सुनाया करता

था। जब एक कथा पूरी कह जाता तब पांचू बाबा उसको एक जोड़ा दोनों गालों का चुम्बन इनाम देते थे। महल्ले के और कई लड़के उनके पास आते थे। वे सब उनसे लगे रहते थे। बुढ़ापे में रक्त और मन ठंढा हो आता है और हृदय में भी अवसाद आता है। लड़के-बच्चों के साथ रहना और उनके प्रेम की गरमी ही बूढ़ों के लिये जीने की वस्तु बनी रहती है। बूढ़े पञ्चानन को अपना लड़का बच्चा तो था नहीं। पड़ोस के येही सब लड़के बच्चे उनके लिये hot bottles अर्थात् गरम जलभरे बोतल का काम करते थे।

इस स्वर्ग सुख में रहने पर सुरेश अपनी बीती जिन्दगी का सब दुःख भूल गया, किन्तु अपने देश के दीन, दुःखी और अनाथों का दुःख कष्ट नहीं भूल सका। पाँचू मामा भी उसको भूलने नहीं देते थे। सुरेश समझ गया था कि देश के सब प्राणी एक अटूट सम्बन्ध सूत्र में बंधे हैं। इस कारण सब की भलाई में उसकी भलाई है। सब को सुखी किये बिना वह आप सुखी नहीं हो सकेगा। इसी कारण वह सब तरह के सार्वजनिक हितकर कामों को अपना प्रिय कार्य समझता था। वह अभी कर्म्ममार्ग पर आया है लेकिन अब तक ऐसा कुछ काम करने का सुभीता उसको नहीं मिला है।

पारसाल के वैशाख में एड़दह में ही नन्दलाल की माता का परलोक हो गया था। श्राद्ध का नेवता पाकर पाँचू मामा के साथ सुरेश एड़दह गया था। क्रियाकर्म हो जाने पर उसने हेमाङ्गिनी को कहा थाः—“अब तो बहन तुम लोगों को यहाँ रहना ठीक नहीं है। यहाँ हम लोगों की वह बगीचे वाली बड़ी कोठी खाली पड़ी है। वहीं जाकर तुम लोग

रहो। इस तरह तुम लोगों के अवलम्ब से वहाँ दो चार अनाथ बालक भी पलेंगे। हेमाङ्गिनी और नन्दलाल ने इस बात को मान लिया और वहीं रहने लगे।"
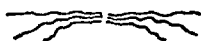
[२७]

मत परिवर्तन।

छः महीने से एड़दह की बगीचेवाली कोठी में नन्दलाल की देखरेख में एक छोटा मोटा अनाथाश्रम होगया है। एक दो करके इस समय बारह लड़के इसमें पल रहे हैं। हेमाङ्गिनी अन्नपूर्णा होकर खाना बनाकर उन्हें खिलाती है। भूमन उन बालकों का सरदार बना है। कहता है—"मैं इस स्कूल का मास्टर हूं।"

काशीनाथ बाबू ने दमदमे की बगीचेवाली कोठी में, अविद्या-मन्दिर की प्रतिष्ठा की थी। उनकी माताजी ने एड़-दह के बगीचे में शिवमन्दिर बनवाया था। अब सुरेश ने उसी शिवालय की छाया में अनाथाश्रम बनाया। भिन्नरुचि र्हि लोकः। ये सब काम रुपये से हुए हैं। सुरेश ही उस अनाथाश्रम का खर्च चलाता है। परोपकार में उसका यह पहला काम है।

पाँचू मामा और सुरेश ने एक ही दिन एड़दह में अनाथा-श्रम-देखने जाकर सुना कि राधावल्लभ के खून के कसूर में इतने दिन पर मोती को फाँसी हो गयी है। मोती को वे सब लोग पहचानते थे। सुरेश ने नन्दलाल से पूछा-"तुमने कहां से यह बात सुनी?"

नन्दलाल ने कहा-"कृष्णनगर के वकील योगेश बाबू ने उस महल्ले के मुकुर्जी बाबू के यहाँ व्याह किया है। उस दिन वह यहीं आये रहे वही कहते थे। मोती ने खुद मेजिस्ट्रेट के यहाँ जाकर अपना अपराध कबूल कर लिया था। वह ऐसा नहीं करता तो सुना है पकड़ा नहीं जाता। योगेश बाबू कहते थे-"विचार के समय मोती ने हाकिम से कहा था-"जब से उसने राधावल्लभ को मारा है तब से न जानें कौन उसके भीतर चाबुक मार मार कहता रहा है कि—जाव जल्दी गुनाह कबूल कर के पाप का प्रायश्चित करो।"

सुरेश ने कहा—"बड़े आश्चर्य की बात है। लेकिन क्यों उसने राधावल्लभ का खून किया यह भी योगेश बाबू कुछ कहते थे ?"

नन्द०—सुना ! मोती ने कहा था कि किसी राजनीति के कारण से उसने राधावल्लभ को नहीं मारा। वे सब एक घर में एक भयङ्कर चक्र रच रहे थे। और वह बाहर जंगले के पास खड़ा कान लगाये सुन रहा था। हाथ में पिस्तौल लिये हुए था। वह उनकी बात सुनते सुनते गुस्से में आगया और गोली मारना शुरु किया। उसी गोली से राधावल्लभ का खून हुआ।

पाँचू मामा०—इसमें कुछ पोलिटिकल मामला रहा होगा जरूर। नहीं तो पिस्तौल हाथ में लेकर मोती उस रात के वहां क्यों छिपने जाता ?

नन्द०—भजहरी ने उस मामले में गवाही दी थी। और सुना वह भी उस रात के वहाँ मौजूद था।

पाँ०—भजहरी उस मामले में है तब उसमें स्वदेशी की

महक जरूर होगी। लेकिन विचार के समय इस मामले में राजनीतिक भाग दब गया है इसी से इस घटना की खबर किसी अखबार में नहीं छपी। मैं समझता हूँ यह भी अनार्किष्टों की एक राजनीतिक खून खराबी ही है।

सुरेश—भला स्वदेशी युवकों में कोई कोई अनारकिष्ट क्यों हो जाते हैं?

पाँ०—यूरप के राजनीतिक दार्शनिक कहते हैं "Anarchism is the the direct out-com to political despair*" जब स्वायत्त शासन लाभ के लिये प्रजा के सभी वैधान्दोलन लगातार व्यर्थ होते रहते हैं तब सहजही स्वदेश-भक्त युवकों का धीरज टूट जाता है। ऐसी निराशा की दशा में कमसमझ और हठी स्वदेशी युवक समझते हैं कि खून-खराबी और लूटपाट आदि अवैध कार्य्य करके वे सब गवर्नमेण्ट का शासन यंत्र तोड़ डालने में समर्थ होंगे। लेकिन इससे आजकल के बृहत् साम्राज्य का शासन यंत्र नहीं टूटता।

मोती की फाँसी सुनकर हेमाङ्गिनी के आँसू बह रहे हैं। देख कर पांचू मामा बोले-"तुम रोती हो हेमाङ्गिनी? इन अभागे छोकड़ों का नतीजा देखकर बहुतों को रोना आता है। देखो सुरेश! अनारकिष्ट फांसी की तिकठी पर लटक कर अपने कुकर्म का प्रायश्चित करके समाज की छाती पर बड़ा दाग दे जाते हैं। इन विप्लवपंथी युवकों के सम्बन्ध में विक्टर ह्यूगो ने कहा है:—

---

* राजनीति के खेत में निराशा से ही अनारकिजम पैदा होता है।

Gallows becomes their apotheosis. Foolish posterity prays on their tombs * समाज की सहानुभूति नहीं पाने से अनारकिज्म का पौधा सिंचाई बिना जरूर ही सूख जायगा। इस लिये गवर्नमेण्ट को प्रजा मुखापेक्षी होना होगा। राजशक्ति को हम लोगों के जातीय आन्दोलन का नायक होना होगा।

सुरेश०—राजशक्ति को प्रजामुखापेक्षी करने का उपाय क्या है?

पां०—हां उपाय है। हम लोग जितना शासन यंत्र में अपना अधिकार बढ़ाने में समर्थ होंगे राजशक्ति भी उतनीही प्रजामुखापेक्षी होती चलेगी। वह रास्ता बायकाट के रास्ते से एकदम उलटा है। सरकारी नौकरी को बायकाट करने से नहीं बनेगा। देश के शिक्षित स्वाधीन-चेता आदमी जितनी अधिकता से सरकारी नौकरी में घुसेंगे शासन यंत्र में देश-वासियों का अधिकार उतना ही बढ़ेगा। हम लोग अगर सहनशील होकर इस मार्ग में आगे चलते रहे तो उचित समय पर स्वायत्त शासन या स्वराज्य पाना हम लोगों के लिये कठिन नहीं होगा। सुरेश! तुमने कर्म्ममार्ग पर पांव रखा है। तुम में स्वाधीनभाव है। भरोसा है तुम स्वार्थत्यागी होकर इस मार्ग पर चलते रहोगे। तुम में स्वदेश-प्रेम है। तुम वेतन लेकर या अवैतनिक होकर सरकारी काम में नियुक्त होकर ऊंचे राज-कर्म्मचारियों की सहायता से देश-वासियों का

* फांसी पाकर ये सब पीर बन बैठते हैं। और सब अहमक उनकी कब्र पर सिरनी चढ़ाते हैं।

बहुत कुछ मङ्गल साधन कर सकोगे। तुम को देश-भक्ति के साथ राजभक्ति का योग करके चलना होगा।

जब सुरेश से पांचू मामा की ये बातें हो रही थीं। तभी डाकपियन ने पहुंचकर एक चिट्ठी दी। वह दूर से आयी थी। उस पर डाक की बहुतसी मुहरें पड़ी थीं। लिफाफे पर सुरेश का नाम और एड़दह का ठिकाना लिखा था। चिट्ठी खोलकर सुरेश पढ़ने लगा तो मालूम हुआ कि उसको विधुभूषण ने संहाई से लिखा है। उसमें यों लिखा था:—

"भाई सुरेश !

जब मैं देश में था तब देखता तो पुलीस सदा मेरे पीछे लगी रहती थी। इससे मेरी जिन्दगी भारी हो गयी थी। लाचार मैं अपना देश छोड़कर भाग गया। अब मैं ने सङ्कल्प कर लिया है कि बृटिश राज्य में नहीं रहूंगा। पहले मैं पांडे-चेरी में आया था। वहां कोई वर्ष दिन रहा। देखा तो वहां भी मेरे पीछे दूत लगे हैं। तब मैंने समझा कि मेरे लिये बृटिश और फ्रांस राज्य में बहुत कुछ अन्तर नहीं है।

मैंने प्रण किया था कि अङ्गरेज गवर्नमेंट के विरुद्ध अब मैं कोई अवैध कार्य्य नहीं करूंगा। तो भी मेरे पीछे मेरा रङ्ग ढङ्ग देखने के लिये सदा दूत लगे रहे, यह मुझ से सहा नहीं गया इसी कारण मैं एक फरासीसी जहाज पर सवार होकर चीन में आया। तब से आज तीन बरस हुए मैं चीन देश में रहता हूं। हिन्दुस्तानियों के लिये यह देश बहुत खराब नहीं है।

भाई जब तक मैं देश में था। तब तक स्वदेश के घर-द्वार

पेड़-पत्ते, पहाड़-पर्वत, नदी-नाले और स्वदेश के लोगों का जो एक विशेष आकर्षण है वह मैं अच्छी तरह जानसमझ नहीं सका। अब इतनी दूर आकर यहां बहुत दिन रहने पर स्वदेश की हर एक चीज़ के लिये रो उठता हूं। सन्तान जब तक माता की गोद में रहता है तब तक मातृक्रोड़ का मोल पूरे तौर से नहीं समझ सकता। माता को देखे बिना वह रोते रोते व्याकुल हो जाता है। आज मेरी भी यही दशा है। भाई सुरेश! मैंने क्या अपराध किया है सो तो नहीं जानता। लेकिन इतने बड़े भारतवर्ष में हमारे लिये जगह नहीं है।

भाई सुरेश! पाँचू मामा से भेट हो तो कहना कि अनारकिज्म पर अब मेरी आस्था नहीं है, इसको सुनकर वह जरूर सन्तुष्ट होंगे। अब मैंने अच्छी तरह समझ लिया कि भारतवर्ष की समस्या एक बड़ी समस्या है अनारकिष्टों के तुच्छ बम से उसकी मीमांसा नहीं होगी।

इतने दिनों तक मैंने चीन में रह कर यहां की सब हालत देखी है और अब समझ सका हूं कि चिनियों में असल जातीयभाव जाग उठा है। विदेशियों पर उनका जो विकट विद्वेष था वह अब दूर हो गया है। उस विद्वेष से इस देश में अब तक जितनी बार प्रजा-विद्रोह हुआ था सब व्यर्थ और बेकाम होता गया था। गत बक्सर-विद्रोह के समय चीन की मूर्ख प्रजा ने यूरोपियन मिशनरी और सौदागरों पर अमानुषिक अत्याचार करना शुरू किया इस कारण इङ्गलैण्ड फ्रांस, जर्मनी, अमेरिका और जापान आदि देशों की सरकार ने अपने जङ्गी जहाज़ भेज कर उस विद्रोह को झट दबा डाला। इसके लिये चीन की सरकार को कुछ नहीं करना पड़ा। अब

चीन जाति ने शिक्षा पायी है। अब वे लोग भूमण्डल की और जातियों से अपना पहला विद्वेष बिलकुल छोड़कर देश में प्रजातंत्र प्रतिष्ठा के लिये ही अपनी सब कोशिश और शक्ति लगा रहे हैं। मैं समझता हूं कुछ ही वर्ष में चीन एक विराट World power * हो उठेगा। कोई उसको रोक नहीं सकेगा। प्राचीन जराग्रस्त विशाल चीन जाति का नये कलेवर में पुनरुत्थान एक अपूर्व दृश्य होगा। मैं उसी महान दृश्य के लिये राह ताकता हूं।

यहां के घरद्वार बहुत कुछ हम लोगों के ही देश की तरह हैं। हिन्दू समाज की कितनी ही रीतियों के साथ चीन समाज की रीतियों का सुन्दर मिलान दीख पड़ता है। चीनियों के समाज में व्याह से पहले वर-कन्या का परिचय नहीं होता दोनों ओर के सरबराहकारही सम्बन्ध ठीक करते हैं। चीन में विधवा-विवाह जारी नहीं है। यहां के लोग भारत-वासियों की तरह अतिथि सत्कार खूब जानते हैं। बौद्धधर्म और बौद्ध सभ्यता के लिये चीन भारत का हाल का ऋणी है। इन्हीं कारणों से मुझे स्वदेश से आप ही निकल कर चीनियों के द्वार पर आने में कुछ लज्जा या हीनता नहीं हुई। मुझे पीत रङ्ग से डर नहीं है।

देखो भाई! मुझे अब ऐसी धारणा हुई है कि भारतवर्ष की वर्त्तमान शासन-पद्धति एशिया की अन्तर्जातीय घटनाओं के घात-प्रतिघात से धीरे धीरे भारतवासियों की आशा के अनुकूल बदलती रहेगी। और मैं बहुत दूर प्राच्य प्रवास में

* दुनिया में एक बड़ा शक्तिशाली साम्राज्य।

रहकर इन सब घटनाओं की चाल देखने की इच्छा के
जब तक भारत के राजनीतिक अपराधियों पर गव
की amnesty* की घोषणा नहीं की जायगी तब त
को नहीं लौटूंगा। भरोसा है तुम लोग कुशल से हो।
को अपना ठिकाना नहीं दिया तुमको इसका ज
की जरूरत नहीं है। हिन्दुस्तान के कई अखबारों
सब जरूरी समाचार मुझे मालूम हुआ करते हैं। इ

तुम्हारा चिर

वि

चिट्ठी पञ्चानन बाबू ने भी मन लगाकर पढ़ी।
बोले—"विधुभूषण की राय बदल गयी, देखकर सु
हुई है। वह अगर चीन में शान्ति से रहकर एकाग्र
भारत की मङ्गल कामना करे तो भी बहुत कुछ काम
में उसके Will force + पर विश्वास करत
भी 'कर्म्ममार्ग' पर है।"

94

* प्रकाश्य क्षमा। + इच्छा-शक्ति